॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ॥
॥ श्री पद्म-जीत-हीर-कनक-देवेन्द्र-कलापूर्णसूरि गुरुभ्यो नमः ॥

हे प्रभुजी ! मुझे नरक नहीं जाना !

सचित्र नरक यातना का वर्णन,
हिंसादि महापापो के कटु विपाको की
विस्तृत माहिति

प.पू. अध्यात्मयोगी आचार्यदेव श्रीमद् विजय कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न
पू. गणिवर श्री विमलप्रभविजयजी म.सा.

प्राप्तिस्थान...

कल्पेश आर. महेता
महावीर बोल्ट अेन्ड कं.
अेल.आय.जी. कन्झ्युमर सोसायटी, पंतनगर,
बी.अेल.डी. नं.116 के सामने,
घाटकोपर (पूर्व), मुंबई–400 075.
फोन : 25162025 (घर) 265822698
(ओ) 65249637 (मो.) 9820724747

अनिलभाई उगरचंद शाह
फोन : 0265-2781317
सामायिक पौषध आराधक मंडळ
2 C/A, आनंदवन सोसायटी विभाग–1,
नवयुग इंग्लीश स्कुल पासे, पो. समा वडोदरा–2.

प्रमोदभाई वीरचंद शाह
18, श्रीनगर सोसायटी, जैन देरासर सामे,
कृष्णनगर, पो. अमदावाद–382 345.
घर : 22822451 मो.: 9825598510

डॉ. रश्मिन अेम. पुरोहित
''भगवती'', 5, जलाराम कोलोनी, हाई–वे,
अेच.अेम.पी. गेट के सामने, पोरबंदर–360 575.
फोन : 0286-2245601 ✻ घर : 2243003
मो. 09428287275

विनेशभाई
गीरधरनगर, (शाहीबाग), अमदावाद
फोन : 65457114 मो.: 9377225716

हिरेन रजनीकांत अेम. शाह
अेक्सेल कोर्पोरेशन
13, इराबालु चेट्टी स्ट्रीट, पो. चेन्नाई–600 001.
फोन : 26411906

प्रवीणकुमार अेन. खंडोर
दत्तात्रय निवास, तीसरा माला,
B–विंग, रूम नं.28, दादर, मुंबई.
फोन : 30912755 मो.: 32503728

नकल
३००० कॉपी

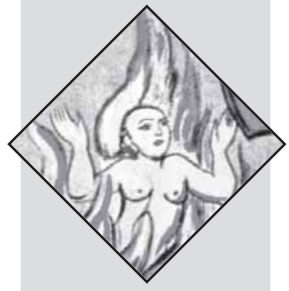

: मूल्य :
रू. ९०/-

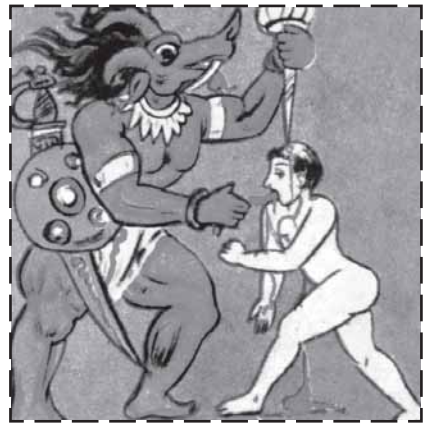

कमलेश कनैयालाल भेमाणी
E-319, वीनासीतार, महावीरनगर,
दहानुकर वाडी, कांदीवली (वेस्ट), मुंबई–400 067.
फोन : 2346 2616 मो.: 93234 02716

संजय छोटालाल शाह नवसारी.
फोन : (घर) 202637-253044 मो.: 9825099031

धीरज महेता...विद्यार्थी वस्तु भंडार
प्लोट नं.263/12 B, भाई प्रताप सर्कल के सामने,
गांधीधाम, कच्छ. फोन : 02836-232233

विद्यार्थी वस्तु भंडार
आय.सी.आय.सी.आय. बेंक के सामने,
होस्पीटल रोड, भुज–कच्छ मो.: 9879207196

दिव्य आशीर्वाद.....
प.पू.अध्यात्मयोगी आ.श्रीमद् विजय
कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा.

शुभ आशीर्वाद.....
प.पू.शासनप्रभावक आ.श्रीमद् विजय
कलाप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

संयोजक.....
प.पू.गणिवर श्री **विमलप्रभविजयजी** म.सा.
सेवाभावी प.पू. मुनि श्री **विनयविजयजी** म.सा.

हिन्दी प्रुफ सहायक.....
रेणुकाबेन (प्रोफसर), मुलुंड, मुंबई.

मुद्रक.....
नेहज अेन्टरप्राईझ : 34, जवाहरनगर रोड नं.4,
गोरेगांव (वेस्ट), मुंबई–400 062. ✻ फोन : 28736745
टे.फेक्स : 28736535 • मो. : 93222 27939
email : mktg@nehaj.com
nehajenterprise@gmail.com

श्री पावापुरी तीर्थधाम एवम् जीव मैत्री धाम

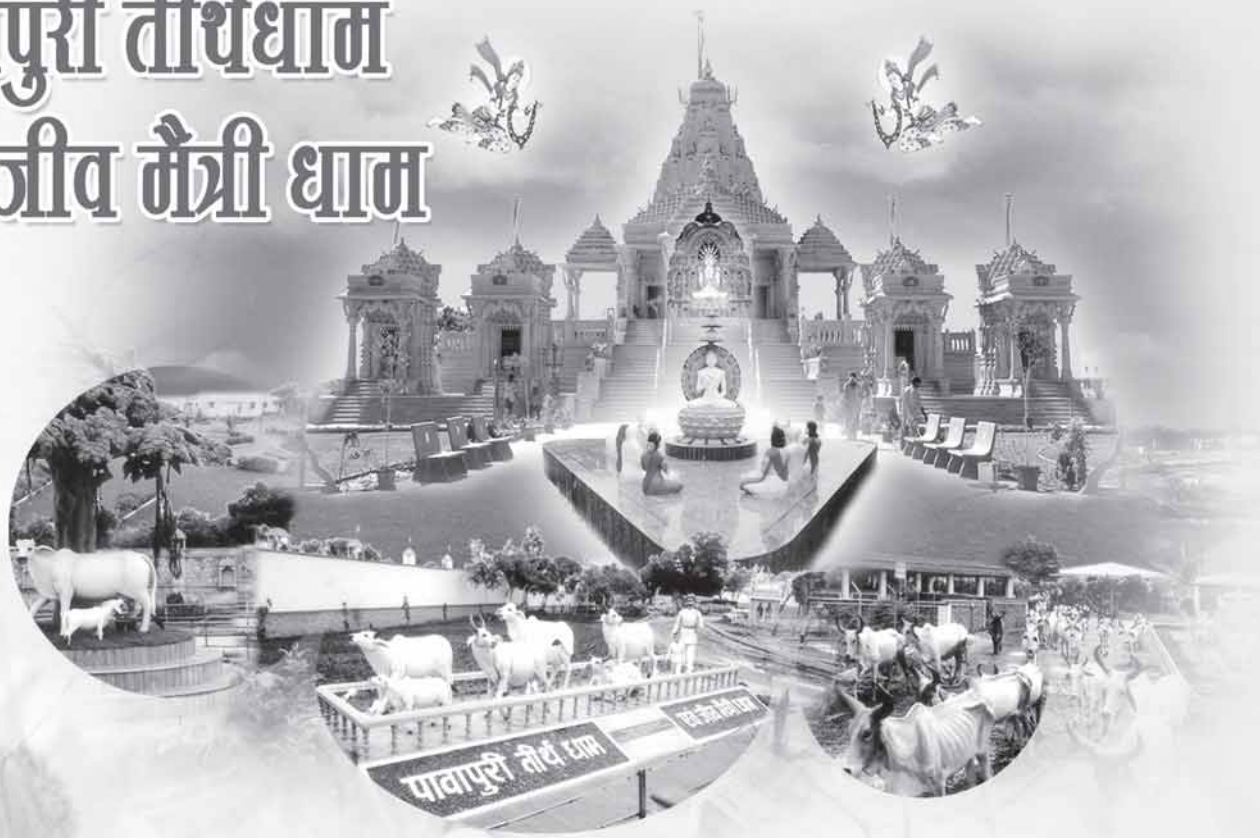

दिल्ही-कंडला हाईवे, कृष्णगंज, जि. सिरोही (राज.) ३०७ ००१
फोन : ०२९७२-२८६८६६, २८६८६७, २८६८६८
फेक्स : ०२९७२-२८६८१४

श्री पावापुरी तीर्थधाम...

मालगांव, जिल्ला-सिरोही (राजस्थान) निवासी 'संघवी पुनमचंदजी धनाजी बाफना, के.पी. संघवी परिवार' जैन श्वे.मू.पू. तपागच्छ विशा ओसवाल द्वारा आयोजित व निर्मित हुआ यह तीर्थ ६०० वीघा जमीन (१,०४,५४,४०० घनफूट) में फैला हुआ श्री पावापुरी तीर्थधाम अद्‌भुत विशालता और सौंदर्य का अलौकिक रुप है । यहाँ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का भव्य जिनालय है । साधर्मिकों का स्नेह है, धर्मशाला एवं साधर्मिक भक्ति भवन की भी सुंदर सुविधाएँ है । प्राणीसृष्टि के पालन व पोषण के लिये गौशाला के रुप में ७००० अबोल पशुओं के करुणासागर ऐसा कामधेनु तीर्थ है । ऐसा समजो की, ''ईशावास्यम् ईदं सर्वम्'' यहाँ ही आया हुआ है । यहाँ के मध्य में स्थित श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का जिनालय और भगवान श्री महावीर के चरणस्पर्श से पवित्र हुई यह पावन वसुंधरा है। २०,००० घटादार वृक्षों से सुशोभित ऐसे आह्लादक वातावरण में तपोवन है । पूजा-भक्ति के लिये ५०० चंदन वृक्षों का आरोपण कार्य का किया गया है । जैन धर्म के सात क्षेत्रों और जीवदया का महासागर है । भक्ति, शौर्य, दान और सेवा से भरपूर सौंदर्यमय नंदनवन है । मरुधर में एक नया कल्पवृक्ष श्री पावापुरी तीर्थधाम जीवमैत्री धाम है ।

श्री पावापुरी तीर्थधाम के प्रतिष्ठापक, कलिकाल के कल्पतरु, अध्यात्मयोगी परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय कलापूर्णसूरीश्वरजी महाराजा का स्मृति गुरुमंदिर निर्माणाधीन है । श्री पावापुरी नाम को लेकर भगवान श्री महावीर के २६०० वर्ष के उपलक्ष में श्री पावापुरी जलमंदिर और भगवान वीर देशना स्वरुप समवसरण मंदिर का निर्माण, भगवान श्री महावीर के सत्तावीश भव, चोवीस तीर्थंकरो, कैवल्य वृक्ष और चरणपादुका, तीर्थाधिराज श्री शत्रुंजय गिरिराज की रचना, श्री शत्रुंजय नदी, श्री शत्रुंजय डेम आदि का अभूतपूर्व आयोजन ५००० अट्ठम तप आराधको, हजारो ओळी आराधको, चातुर्मास आराधको और उपधान तप आराधको के तप-जप-बल से यह भूमि पवित्र है । हजारो संतों के चरणस्पर्श और उनके रजकण से बना हुआ व पवित्र विहारभूमि भी है ।

जय... जय... जय...

श्री पावापुरी तीर्थधाम-जीवमैत्री धाम...

पूर्वभव में किये हुए अनेक दुष्ट और भयंकर आचरण से, क्रूरता से हिंसादि, झूठ बोलने से, चोरी, परस्त्रीगमन, धन प्रतेतीव्रमूर्छा, जीवों का वध करनेवाले (गर्भपात) आदि पाप कर के नरक के आयुष्य का बंध करके नरक में पैदा होते हैं।

क्षेत्र की, परस्पर की और परमाधामीकी ३ प्रकार की वेदना और १० प्रकार के क्षेत्र वेदना नरक में अनुभव होते हैं। शीत और उष्णवेदना अनंत गुणी उष्ण और शीतवेदना एकेक नरक के आगे तीव्र तीव्रतर, तीव्रतम हैं।

नरक में सम्यग्दृष्टि और दूसरा मिथ्यादृष्टि है।

मिथ्यादृष्टि : दुःख में निमित बनकर सामने वाले व्यक्ति पर क्रोध करते हैं और नये कर्मोका बंध होता है।

सम्यग्दृष्टि : जीव नरकमें विचारते हैं कि में पूर्वभव का अनेक विध पाप प्रवृत्तिओं की है। उसका ये फल हैं :- पाप विपाकोके समभाव सहन करते हैं दूसरे का क्या दोष है।

७ नर्क धरती के नीचे पाताललोकमें आई है। असंख्य योजन तक फैलाइ हुइ है। महाघोर पाप करनेवाले जीवो नरकमें जन्म लेते है। देवलोक में सुख प्राधान्य हैं। परंतु नरकमें उत्पन्न हुऐ जीवो को संपूर्ण दुःख भुगतने को पडते है।

जो पूर्वभवमें अग्निस्नान से शरीर छेदसे संकलिष्ट परिणाम भरा हुआ हो वो जीव नरकमें उत्पन्न होते तो उस समयमें शाता का अनुभव होता है, अथवा कोइ मित्र देव आकर शाता का अनुभव कराके जाते। कोई कल्याणक प्रसंगपरभी कुछ शाता होता है। बाकी सदा अशाताका अनुभव होता है।

अच्छिनिमीलण मितं नत्थि सुहं, खुद की नरक की आयुष्यस्थिती तक नारकजीवो हमेशा के लिये दुःख अनुभव, क्षणभर भी सुख की प्राप्ती नही होती इस लिए हरएक आत्माओं ऐसी दुर्गतिमें न जाना पड़े इस लिए पापकी प्रवृत्तिओ न कर के सदाचारी-संयमी और पाप के बिना जीवन जीना चाहिए।

रत्नप्रभा पृथ्वीका उपरके छेडे की समश्रेणी चारो बाजु फिरते गोलाकार में रहे हुए घनोदधि, धनवात और तनवात वलय की पहोलाई कितनी है ? घनोदधि पहोलाइ - ६ योजन है। घनवातकी - ४॥ योजनकी तनवातकी १ ॥ योजनकी, उपरके भागकी १२ योजन दूर अलोक है। किल्ला जीतना व्यवस्था की जरूर नहीं उधर कुछ अच्छा नहीं के लुटने की भी नहीं मात्र दुःख ही होता है। नारको पराधीन है।

मालीक जैसा कुछ भी नहीं, कुछ वस्तु को बेचनेका भी नहीं, सब अशुभ है।

सातवी नरक बाकी प्रायः नारको सतत उत्पन्न होते हैं। और आते है। कुछ बार ही अंतर (विरह) पडते हैं। सातवे नारकीमें सामान्यसे ज. १ समय, उ. से १२ मुर्हत।

प्राणीवध और मांस खानेवाले कालसौरीकादि जैसे नरक में जाते

छिपकली-बिल्ली-तंदुलीय मत्स्य जैसे अशुभ विचार रौद्र परिणामो से दुर्ध्यानमे नरकायुष्य बांधते है।

अवधिज्ञान नरकमें ४ गाउका, पहेलीमें, और अंतिममे सातवीका १ गाउका होता है।

नरकभूमि कैसी ???

नरकभूमि दातुण और करवत जैसी कर्कश होती है। भूमि का स्पर्श अत्यंत दु:ख दायी होता है।

ये नरकभूमिमें काली अमासकी रात्री से भी ज्यादा भयानक अती भीषण और तीव्र अंधकार होता है। प्रकाश का तो नामोनिशान नहिं। वहाँ कोइ खिडकीयाँ वेन्टीलेशन भी नहीं।

लिमडे की गला जैसी, दुनियाकी कडवेसे भी कडवी चीज से ज्यादा अनंत गुणी कडवाश भूमि रही है।

दूर दूर तक, चोमेर लींट, बळखा पीशाब और विष्ठा जैसी दुर्गंधमय पुदगलो फैले हुए होते है। जहाँ भी पैर रखो वहा खून-चरबी जैसी अशूचि पदार्थ रहती है। स्मशानकी जैसी यहाँ चारे दिशा में मांस-हड्डीयाँ ढग रहेती है। खून की जैसी तो नदीयाँ बहती है। सडी हुई मुर्दो से भी अधिक दुर्गंध मारती है। ऐसी दुर्गंध मनुष्य से सहन नहीं किया जा सकता है। अरे, ये दुर्गंध की बदबु मात्र एकही कण जो मनुष्यलोकमें मुंबई से कलकता जैसी बस्तीवाले ऐसे बडे शहर में लाकर रखा जाए तो पूरा का पूरा मनुष्य खतम हो जाता। एक भी मनुष्य जिंदा न रहता। मनुष्यतो क्या ? कुते-बिल्ली-चुहे जैसे प्राणी भी ये बदबू से जिंदा न रहे।

नारको जीवो को वेदना-पीडा-दु:ख : घोर असह्य कम्मरतोड वेदना-पीडाओ नारकीके जीवो के लिये झीक रही है। उससे अत्यंत त्रास से नारकीओ कान के पडदे फाड देते, पत्थर जैसी बडी शीलाको फाड दे ऐसे आवाज निकालते है। पूरा आकाश आक्रंद करता हो ऐसा लगता है। वह जीव जोर जोर से बूम मार रहे है। उनके अश्रु तो सुकते ही नहीं है। लेकिन वहाँ कौन बचाए ? जीवमात्रको पापसे और दु:ख से बचानेवाला धर्म है। धर्म की उपेक्षा करके जो पाप किऐ है उसका ही यही घोर परिणाम है। ओ माँ ! मर गया ! ओ बाप रे ! सहा नहीं जाता ! बचावो बचावो ! मेरे उपर दया किजिए ! मेरा कत्ल न करो ! ऐसी अनेक दयासे भरी विनंती से भरी वातें परमाधामी के पैर में गिरके करते है। अच्छे से अच्छे लोगो के रोंगटे खड़े हो जाए, हृदय जम जाए, शरीर काप उठे रक्त रुक जाऐ ऐसी कारमी वेदनाएँ नारकी के जीवों को सहन करनी पड़ती है। परंतु वहाँ कोई उसे सुननेवाला भी नहीं है और कोई बचानेवाला भी नहीं है। पिछले भवों में हमने जो हँसते हँसते पाप किए है उसे रोते रोते भुगतना ही पड़ता है। नए-नए क्रोध कषाय और धमधमाट से पुन: नए कर्म बंधाते ही रहते है। और उसके फल स्वरूप बार बार वेदनाए भुगतने की परंपरा चलती ही रहती है।

नरक के जीवों को तीन प्रकार की वेदना होती है...

(१) क्षेत्र - कृत वेदना (२) परमाधामी कृत वेदना (३) अन्योन्य कृत वेदना।

क्षेत्र-कृत वेदना : दश प्रकार के तत्वार्थ सूत्र में दर्शाया है।

(१) भूख की वेदना इतनी सख्त होती है कि एक नारकीय जीव पूरी दुनिया का सब अनाज, फल, फुल, मिठाई वगेरे खानेलायक सब चीजो खा ले फिर भी उनकी भूख शांत नहीं होती, परंतु बढती जाती है। ऐसी अति सख्त भूखमें भड़भडते, पुकार करते खुद बहुत बड़े आयुष्य को पूर्ण करते है।

(२) प्यास की वेदना बहुत ही भुगतनी पड़ती है। दुनियाभरके सब कुछ वाव, तालाब, सरोवर, नदीयाँ, कुओ, कुंडे, सागर का पानी एक नारकी जीव पी ले फिर भी उसकी तरस छीपती नहीं है। उसका कंठ, तालवा, जीभ और अधर हंमेशा सूक जाते है। दु:ख टालने की कोशिश करते है। वैसे वैसे दु:ख बढता ही जाता है।

(३) शीत वेदना भी इतनी ज्यादा भुगतनी पडती है कि यहाँ के मानव भवमें सर्दीकी प्रकृतिवालाहो अस्थमा, खांसी आदि की पीड़ा हंमेशा के लिए हो, जरासी भी ठंडी हवा सहन कर न सकते हो ऐसे मानव को पोष या महामास की अतिशय ठंडी हवा की लहरे आती हो बर्फ गिर रही हो, और उँचे से उँचे पर्वत की टोच के उपर नग्न अवस्थामें सुला दिया जाए, और उसे जो ठंडी की पीडा होती है। उससे अनंतगुणी शीत वेदना उष्णयोनिमें उत्पन्न हुए नारकीय जीवोको हमेशा भुगतनी पड़ती है।

(४) उष्ण वेदना मतलब गर्मी की पीड़ा वह भी नारकीको बहुतही सहनी पड़ती है। ठंडे प्रदेशमें, जन्म हुआ हो ऐसा मानव हो, गर्मी बिलकुल ही सहन न कर सकता हो, उसे गरममें गरम हवावाले प्रदेशमें, भरपूर गर्मी मे, वैशाख, और ज्येष्ट के कडक तापके बीचमें, खेरके लकडे के गरमगरम कोलसे पर सुलाने पर जो वेदना होती है, उससे भी अनंतगुणी गर्मी की वेदना, नरकमें रहनेवाले शीत योनि में उत्पन्न होनेवाले नरक जीवोको होती है। गर्मी की वेदना से भी ठंडी की वेदना और ज्यादा कठिन लगती है।

(५) ज्वर-वेदना मतलब बुखारकी पीड़ा, वह सब नारकी जीवोकी हमेशा रहती है। जितना नीचा स्थान नारकी जीवो का होता है उतने ज्यादा रोगसे दुःखी बनते है।

(६) दाह मतलब जलन नरकमें रहनेवाले जीवोको शरीरमें अंदरसे और बाहार से हंमेशा ज्यादा जलन रहा करती है, और वहाँ जहाँभी जाते है। वहाँ जलन बढ़ानेवाले साधन ही मिलते है, उसे शांत करनेके लिऐ कोई भी जगह या साधन मिलते नहीं है।

(७) कंडु मतलब खुजली। वह जीवो को हंमेशा इतनी खुजली होती है कि वह कितना भी खुजाएँ, लेकिन वह पीड़ा कम नहीं होती। चक्कु, छुरी, तलवार या एकदम धारदार हथियारोसे, शरीर को चमडीको उखाड देने जैसे करे फिर भी उसकी खुजली की पीड़ा टलती नहीं और जलन की कोई सीमा नहीं रहती।

(८) परतंत्रता भी इतनी ही होती है। कोई भी अवस्थामें उसे स्वतंत्रता जैसी चीजका अनुभव नही होता हमेशा पराधीनता की दशामें ही पूरा जीवन व्यतित करना पड़ता है।

(९) डर ज्यादा रहा करता है, उधर से कष्ट आएंगे कि इधर से कष्ट आएंगे कि इधर से कष्ट जाएंगे ऐसी चिंता दिनरात रहा करती है। सदा त्रास, निरबलता, घबराहट, हद बाहरकी संकोच में रहते है। कोई भी वातकी शारीरिक, मानसिक शांति का जरा भी अनुभव नहीं होता। विभगंज्ञान से आगे आनेवाले दुःख को जानकर सतत भयके वातावरणमें रहेते है।

(१०) शोक की पीडा भी हद के बहारकी, जोर से चिल्लाना, करुण रुदन करना, अतिशय गमगीन रहना आदि दुःखद स्थितिओं में ही पूरा जीवन व्यतित होता है।

परमधामी कृत वेदना : नरकमें दुःख देनेवाले १५ प्रकारके परमाधामी देव होते है। नारकी के जीवो को अलग अलग प्रकार से अति भयानक विविध दुःख देते है। यह परमाधामी तीन नरक तक होते है। परमधामी वह जीवो उनके पाप याद कराके कठिन से कठिन शिक्षा लेकर रिबाते है।

नारकीजीव उत्पन्न होते है वैसे तुरंत ही वह गर्जना करते करते चारो दिशाओंसे दौड के आते है और बोलते है। यह पापी को जल्दी मारो, चीर दो, फाड़ दो। वह लोग भाला-तलवार तीर आदि से उनके टुकडे-टुकडे करके कुंभी में से बहार खींचकर निकालते है।

जन्म का कुंभ जैसा स्थान के जिसका मुँह छोटा और पेट बड़ा होता है उसे कुंभी बोलते है।

इस तरह कुं भीमेंसे बहार निकला हुआ नारकी जीव अत्यंत आक्रंद करता है, फिर भी निर्दय हृदयवाले परमाधामी उन्हे शूली पर चढाते है। उधर से लेकर कंटक के ढगमें उसे गिराते है। भडभडती वज्र-कठिन जैसी चितामें फेंकते है। आकाशमें ऊँचाई तक लेकर जाते है और शिर उँचा करके नीचे कीऔर फेंकते है। नीचे गिरते ही वज्रमय शूली - सोयोसे घायल कर देती है। गदा आदिसे मारते है। पूरे तन के छोटे बड़े टुकडे कर देते है। अंगअंगको छिन्नभिन्न कर देते है। पुरे तनके छोटे मोटे टुकडे - टुकडे कर देते है परंतु कोल्हूमें तिलको जैसे पिलते है, कान को काट देते है, हाथ पैर चीर देते है। छाती को जला देते है। नाक को भी काट देते है। जहाँ पे घाव हुआ हो वहाँ नमक छाँटते है। खाने के लिए जानवर की खराब कलेजा जैसे पुद्गल देते है। अतिशय दुःख पीडा से धीरे हुए नारकी जीवो चारो दिशाओंमे रक्षण ढुँढते है। परंतु उसे कोई मदद करनेवाला या रक्षक दिखता नहीं है।

कितने परमाधामीए नारकी जीव के शरीर के टुकडे, टुकडे करके उबलते हुए गरम गरम तेल में पकोड़े के जैसे तलते है। बड़े-बड़े चुलेमें कढ़ाइमें अतिशय गरम रेती में जिन्दे मछले की तरह शेक लेते है। उनके शरीर का मांस निकालकर उनको ही खिलाते है। भट्टे में चना-सींग आदि फोडते है ऐसे ही परमाधामी भट्ठी से भी अनंतगुनी तपी हुई रेती में उसे सेकते है।

कितने परमाधामी नारकी जीवो को गरम की हुई लोहे की नाँव में बिठाते है। चरबी-मांस-पस-हड्डी जैसी चीजों से भरी ज्यादा झारवाली, गरम गरम लावारस के प्रवाहवाली और एकदम गरम स्पर्शवाली नदीमें नारकीओ डुबाते है, चलाते है। एक दुसरे नारकीओं के पास एक दुसरे की खाल उखाडते है। और खुद करवत से बडे निर्दयी बनकर लकडी के जैसे काट डालते है।

पीडाओंसे त्राही हुए नारकी जीवोके शरीरमेसे खाल-मांस आदि निकालकर आगमें पकाकर उनके मुँह में जबरदस्ती डालते है। उनका रक्त ही उनको पिलाते है। लोहे के सलिये से मारते है। शिर उलटा कर लटका देते है। और नीचे आग जलाते है। रस्सी से बाँधकर वज्र की दिवाल के साथ, धोबी कपडे धोते समय पत्थर की शीला के उपर कपडे को पटकते है वैसे ही पटकते है। बाघ-सिंह जैसे भयानक प्राणी के पंजे आदि के प्रहार से हैराने करते है। आँखे बाहर निकाल देते है। मस्तक उखाड देते है। नाको को जब कुंभी से पकाते है तब ५०० / ५०० योजन ऊँचाई तक उपर जाते है, और वहाँ से वापस पृथ्वी पर पटकते है।

परमाधामी वह जीवोको उनका पाप याद कराकर, पूर्वभवमें मजेसे किए हुए रात्रि भोजन, मांस-मंदिरा आदि के स्वाद के पीछे पागल हुए लोगोको, मजे से कठिन हृदय से अभक्ष का भक्ष करनेवाले को उनके दंड के रुपमें मुँहमें चींटियाँ भरकर मुँह को सी देते है। उनके मुँहमें भयंकर सर्प, वींछी जैसी तथा विष्टा से भी अनंतगुणी अशुभ और दुर्गंधवाली वस्तुएँ डाल देते है। स्वाद के लालच में निष्ठुर बनकर अपेयमान-अंडे की केक जीलेटीनवाला आईस्क्रीम मे बहुत ही मजा आती थी न ? यह याद कराके, गरम गरम सीसे के जैसा प्रवाही नारकमें मुँहमें डालते है। परस्त्रीमें आसक्त और विषयमें आसक्त जीवों को तांबे की तपती हुई गरमगरम पुतलीओका आलिंगन कराते है।

रात-दिन दुःखकी पीड़ा में रहते नारको एक श्वास भी सुखपूर्वक नहीं ले सकते है। उनके भाग्यमें केवल दुःख ही होता है। नारकके जीवो को पटकनेमें आएँ, काटनेमे आए, तलेनेमें आए, शेकनेमें आए, तोड़नेमें आए, पिगालनेमें आए फिरभी अशुभ वैक्रिय पुद्गलो फिरसे पारेकी तरह जैसे होते है ऐसे वापस हो जाते है। वह दुःख से परेशान होकर मरना चाहे तो भी खुद के निरुपक्रम आयुष्य पूर्ण होने से

पहले मर नहीं सकते, ज्यादा से ज्यादा, समय यह घोर पीड़ा - वेदनाएँ उन्हे रोते रोते जबरदस्ती सहन करती पड़ती है।

अन्योन्यकृत वेदना :

जैसे मनुष्यलोक में एक गल्लीके कुते दुसरी गल्ली के कुते देखकर आमने सामने आ जाते है, भोंकते है और घुरकते है, वैसे नारकीओं भी परस्पर क्रोधसे गुस्सेमें एक दुसरे के सामने आते है। घुरकते है, झगड़ते है, मारते है, काटते है, दुःख देते है क्योंकि उनके जन्मजात परस्पर वेर होते है। भाले-तलवार तीर और हाथ-पैर कि दांत के प्रहारसे एक दुसरे के अंगो अंगमें छेद हो जाते है और कत्लखाने में कटे हुऐ अंगोवाले पशुओकी भाँति तड़पते है।

नीचे नीचे और नीचे की नरकमें दुःख पीडा - त्रास आदि तीव्र, ज्यादा तीव्र और ज्याद तीव्र होते है। देहमान तथा आयुष्य अधिक होते है।

नारकी जीवोके दुःख पीड़ा का सामान्य वर्णन :

जैनतर ग्रंथोके आधार पर जैनेतर-ग्रंथोमें कोई कोई स्थानमें नरक-नारकी और नरकजीवो के दुःख का वर्णन किया हुआ देखनेको मिलता है। उसमें भी खास करके गरूड पुराण में विशेष ध्यान दिया हुआ है। उसमें से थोडे भाग का इधर वर्णन है। अनेक प्रकार के भ्रमित चित्रवाले, मोहजालमें फसे हुए और कामभोगोमें आसक्त आत्माएँ अपवित्र नरकमें गिरते है।

- श्रीमद भगवद्गीता

यह लोकमें जो राजवंशी, राजपुरूष और पांखडीओ धर्मरूपी सेतुको तोड डालते है वह लोग मरके नरकमें-वैतरणी नदीमें जाते है। मर्यादाभ्रष्ट लोगोका वैतरणी नदीके मत्स्यो द्वारा भक्षण होता है। वह मरना चाहे तो भी मर सकते नहीं। खुदके पूर्वभवके पापोको याद करते हुऐ वह लोग विष्टा, पिशाब, पस, रक्त, बाल, नाखून, हड्डी, मेद मांस और चरबीसे भरपूर नदीमे अतिशय परेशानी का अनुभव होता है।

श्रीमद् भागवत स्कंघ प. से २६

हे राजन, चौदश, आठम, अमास, पूनम, सूर्यक्रांति आदि पर्वके दिवसोमें तेल, स्त्री और मांस को जो आत्माएँ भुगतती है वह यहां से मृत्यु पाकर जहाँ पिशाब और विष्टा का भोजन है ऐसी नरकभूमिमें उत्पन्न होते है।

- श्री विष्णुपुराण

अपने फायदेके लिए जो लोभ प्राणीओंको मार डालते है, और मांस के लिए जो धन देते है वह पापी आत्माए नरक में आदि स्थानों में जाकर अनंतवेदना भुगतते है। इसलिए मांस का त्याग करना चाहिए।

-श्रीलंकावतार सूत्र(बौद्ध)

(१)नास्तिक (२) मर्यादाका उल्लंघन करनेवाला (३) लोभी (४) विषय आसक्त (५) पाखंडी (६) नमकहराम। यह छःह प्रकारके जीवो मरकर नरककी पीडा भुगतनेवाले होते है।

जुगार, मांस, मदिरा, वेश्यागमन, शिकार, चोरी और परस्त्रीहरण यह सात व्यसन जीवोको नरकमें ले जाते है।

भूख, प्याससे पीड़ाते पापी नारकी जीवो नरकमें जहाँ जागवाली रक्तकी वैतरणी नदी बहती है वह नदीके रक्तकी वैतरणी नदी बहती है वह नदीके रक्त जैसे प्रवाही पुद्गल पीते है। अतिभयंकर अतिशय क्रुर यमदुतो से मुदगर-गदा आदिके मारसे नारकीओके मुँहमेसे नीकलता हुआ रक्त वह नारकीओ को वापस पीलाते है।

हे गरूड, इस प्रकारसे पापी जीवोकी पीडा अनेक प्रकारकी है। सर्व शास्त्रोमें कहे हुए वह पीड़ा का विस्तार से वर्णन करने से क्या ? अर्थात कितना भी वर्णन करो तो भी कम है।

- श्री गरूड पुराण

नरक के आयुष्य को ही अशुभ माना गया है। जहाँ सतत मौतकी इच्छा होती है, इनके अलावा पशु आदि तीन गतिमें मौत के लिए इच्छा नहीं है परंतु जीवन ज्यादा करने का प्रयास है, कुत्ते, बैल रोगी होते है फिर भी मरने के लिए तैयार नहीं होते। मोत तो तभी प्यारा लगता है। जब भी जीवनमें असहन पीडा का दु:ख हो तब जीवन त्रास के समान लगता है। ऐसे कष्टो, दु:खो, परेशानीओसे जो छुटकारा पाना हो तो पाप मार्ग से पीछे हटना ही पडेगा। नरक को तजने के लिए धर्म और पुण्य की जरूरत होती है।

नेमिनाथ भगवान को कृष्ण कहते है मै नरक के मार्ग में नही जाऊँगा नरकमें तो मुझे जाना ही नही है। तब भगवान कहते है १८ हजार साधुओंको विधि से वंदन करनेसे चार(४) नरक टल गई अब ३ नरक के दुख बाकी बचे है। वासुदेव के भवमें हिंसा लडाईयाँ, आरंभ - परिग्रह के कारण से पाप किऐ है। उनका फल तो तुमको भुगतना पडेगा। भगवान कहते है में भी तुमको बचा नहीं पाऊँगा।

तप और संयम के कष्ट तो मामुली है, नरक की वेदना के आगे उससे अच्छा तो नरकमें जाना ही न पडे ऐसी साधना कर लेनी चाहिए और पापोका त्याग कर दो बाद में परमाधमी की क्या ताकात की हमको परेशान कर सके ?

मृत्युके बाद आत्माकी क्या स्थिती होती है वह शास्त्रोसे मालूम पड़ती है कि मर जाने के बाद नरकमें जाने के बाद वापस आ नहीं सकते वहाँ कालापानी की सजा लंबे अरसे तक भुगतनी ही पड़ती है। मरने के बाद पाप, दु:ख खत्म नही होते वह दुसरी गतिओंमें भुगतनी पड़ती है। वह प्रायश्चित आलोचना द्वारा पापकी शुद्धि हो सके उनके लिए तीन साल पहले भव आलोचना ३२० पन्ने की पुस्तक तैयार की गई है। विस्तृत वर्णन उसमेंसे देख लेना - सुख है तो दु:ख भी है, प्रकाश है तो अंधेरा भी है, उसी तरह स्वर्ग है तो नरक भी है। वैक्रिय शरीर हो उधर सुख और दु:ख अनेक ज्यादा हो फिर भी वह सुख दु:ख से दूर रहना ही अच्छा है।

नरकमें परमाधामी ने बनाया हुआ तेजस्काय पदार्थ उष्णस्पर्श होते है परंतु साक्षात अग्नि असंभव होती है। नरक जिसमे दु:खो की सीमा नहीं, विस्तृत वर्णन सुनते ही कंपारी भय पैदा होता है - कंपन होती है, खाना भी अच्छा नहीं लगता, नींद भी नहीं आती वहाँ सूर्य, चंद्र नहीं होते, अंधेरा अमास की रात से भी ज्यादा होता है।

नरक के वर्णन के साथ झूठ, चोरी आदि पापोंके फलका वर्णन उदाहरण के साथ वसुराजा असत्य बोलने पर नरकमें गए, नागदत्त के पिताजी अनीति माया करके बकरा बनके मरकर नरकमें गए, सुभूमचक्री लोभ से मरकर सातवीं नरक में गए एक एक पापोसे मरकर नरकमें जाए तो १८ पापों को सेवन करनेवाले की परलोकमें क्या दशा ? शशीप्रभ राजा के जैसे पीछे से भविष्य में पछताना न पडे। जहाँ तक आयुष्य बाकी है और चित्त का थोड़ासा भी उत्साह है। तब तक आत्मा हित करनेवाली साधना कर ले। बादमें शोक न करना पड़े। नास्तिक प्रदेशी राजा नरकमें जानेवाले योग्य कर्म बांध लिए थे। फिर भी तप-व्रत

नियम द्वारा देवविमान प्राप्त कर सकते है । सम्यगदर्शन पाकर तो देवका ही आयुष्य बांध सकते है। नरकगति के द्वार बंद होते है। प्रमाद से नरकका और अप्रमादसे स्वर्गका बंध होता है।

प. पूज्य भवोदधि तारक गुरुदेवश्री (आ.भ. कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा.) का उज्जैन के चातुर्मास में जीवाभिगम सूत्र पर चलती थी वाचना उसमें नरक वर्णनका अंत न आता नरअेसु जाई अइक्कखडाई, दुक्खाई परम तिकखाई को वण्णे ताई जीवे तो वास कोडी ५ (उपदेश माला)

नरकमें जो शारीरिक अति कठोर और मानसिक अतितीक्ष्ण दु:खो अग्निदाह-शाल्लमलीवन-असिपत्रवन-वैतरणी नदी और सेंकडो शस्त्रोकी जो पीडाओ होती है। उसे करोड़ वर्षके आयुष्यवाला भी आजीवन वर्णन करे फिर भी पूर्ण वर्णन कौन कर सके क्योंकि वह दु:खो की कोई सीमा ही नहीं होती। पापो के फल का वर्णन करोडो वर्षो तक करे तो भी हो नहीं सकता फिर भी यथाशक्ति वर्णन करने का प्रयास मैने किया है। मद्रास में १३ वर्ष की आयु में स्कूल में पढ़ता था तभी छोटी पुस्तक में नरकके चित्रो को देखकर रात्री भोजन का त्याग किया। दीक्षा बाद गुरुदेव के पास जीवाभिगममें नरक का वर्णन पढ़कर भवनिर्वेद हुआ और वैराग्यकी वृद्धि के साथ सजाग बनने का मन हुआ। नरकका वर्णन आबाल-गोपाल सबको उपयोगी हो और उसके फलरूप में पापोंसे पीछे हटे। शायद पाप न छोड सके तो पश्चाताप हो। और जल्दीसे जल्दी पाप छोडनेके लिए कटीबद्ध हो। यही आशय से नरक के वर्णन का

पुस्तक लिखने की भावना हुई, मेरी पुस्तक में नरकके वर्णन के साथ दिए हुए चित्रो के लिए पू.आ.जिनेन्द्र सू. म.सा. का सचित्र नारकी पुस्तक का भी आधार लिया गया है। तथा हिंसादि पापोके विपाक का वर्णन प.पू.पं. अरूणविजयजी म.सा. में से लिया गया है । तत्वार्थ सूत्र-लोकप्रकाश-भवभावना आदि ग्रंथोमेंसे लिया हुआ है। पूर्व पू. आ. श्री जिनेन्द्र सू. म.सा. पू. आ. श्री हेमचंद्रसूरि म.सा., पू. आ. रत्नाकर सू. म.सा. तथा पू. आ. श्री राजेन्द्र सू. म.सा. ने भी नरकके लिऐ पुस्तक लिखी हुई है। वर्तमान में अतिशय उपयोगी होने से मैने भी यह पुस्तक लिखी। उसमें भी नवसारी के गमनभाई ने सं. २०५८ के चातुर्मास मे व्याख्यान में सामान्य नरक की बात तभी कहा आप नरक के लियए सुंदर पुस्तक तैयार कीजिए। चिंतामणी संघ के ज्ञान खाते मेसे अच्छी रकमकी ओफर से यह पुस्तक का लेखन तैयार किया। और मुंबई के सुश्रावकोकी श्रुतभावना से तैयार हुई थी। प्रथम आवृत्ति ४१०० नकल, दुसरी आवृत्ति ४००० कुल गुजराती ८००० अधिक नकल प्रगट हो चुकी, इंग्लीश में २५०० नकल, हिन्दी नकल ३०००, तीनों भाषा में प्रगट करने की भावना सफल हुई सिर्फ एक उदेश्य पाप से पीछे हटकर दुर्गति से बचे।

-पू. गणिवर्य श्री विमलप्रभ वि.म.सा.

अनुक्रमणिका

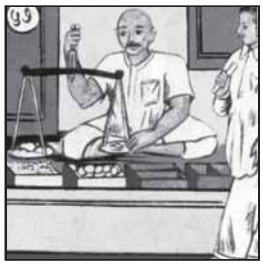

पैसे ज्यादा लेना
पर सामान बराबर नहीं देना

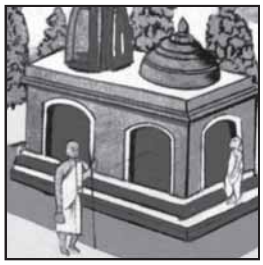

धार्मिक मालमत्ता का खराब
उपयोग

दूसरों की मालमत्ता लूंटना

मांसाहार भक्षण

अनुक्रमणिका

नं.	विषय	पेज नं.
१	नरक दुःख वेदना अति तीव्र	१३
२	नरक के दुःखो से छुटकारा पाने के उपाय	१४
३	नरक चित्रावली...	१६
४	हिंसा आदि पाप की भयंकर सजा	१९
५	विश्व में चारों ओर कितनी हिंसा	२४
६	अंडे खाने में पंचेन्द्रिय जीव की हत्या	२५
७	गर्भपात	२५
८	पंचेन्द्रिय जीव की हत्या	२७
९	हिंसा का फल – ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती	२८
१०	असत्य का फल – कौशिक तापस	२९
११	चोरी का फल	३०
१२	अब्रह्म पाप का फल	३१
१३	परिग्रह पाप का फल	३१
१४	तिलक शेठ	३२
१५	नंदराजा	३२
१६	क्रोध का फल–सुभूम चक्रवर्ति और परशुराम	३२
१७	अग्नि शर्मा तापस	३३
१८	लोभ का फल – कौणिक	३३
१९	गुणचंद्र और बालचंद्र	३४
२०	द्वेष करने से नुक्सान	३५
२१	किये हुए पापों की सजा	३७
२२	शशी और सूर की कथा	३८
२३	सूभूम चक्रवर्ति	३९
२४	कंदमूल भक्षण नरक का अंतीम द्वार	४०
२५	नरक के विषय में शंका	४०
२६	नारक सिध्धि	४१
२७	नरक गति के आयुष्य बंध के कारण	४२
२८	सात नारकों का आयुष्य	४३
२९	नारक के आवास	४३
३०	नारको की लेश्या	४३
३१	कौन, कौनसी नरक तक जा सकता है ?	४३
३२	अलग अलग संघयण वाले जीव की नरकगति	४४
३३	नरक में से निकला हुआ जीव क्या बन सकता है	४४
३४	नरकावास कौन से आकार–संस्थान से है	४५
३५	नरकावास की लंबाई, चौडाई और परिधि	४५
३६	रत्नप्रभा पृथ्वी के नरकावास कितने बडे है ?	४६
३७	नरक की भयानक स्थिति	४६
३८	सात नरकों का स्वरूप	४८
३९	नारकी की उष्ण वेदना	४९
४०	नारकी में अति शीत वेदना	४९

४१ नारकी में भूख और प्यास कैसी होती है ? ५०
४२ नारकी में वैक्रिय शरीर की विकुर्वणा ५०
४३ रत्नप्रभा आदि पृथ्वी के आवासों में वर्ण, स्पर्श आदि ५०
४४ नरक में कौन जाता है ? ५१
४५ पापकर्म का दारूण विपाक ५२
४६ क्षेत्रकृत वेदना ५२
४७ आगम सूत्र ५२
४८ नारकी के द्वार ५३
४९ नारकी का उत्तर वैक्रिय शरीर ५३
५० नरक में नारकी को साता कब ५३
५१ नरक की सात पृथ्वी का स्वरूप ५४
५२ रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा आदि पृथ्वी की जाड़ाई और चौड़ाई ५४
५३ नरक में १५ प्रकार के परमाधामी कृत वेदना ५५
५४ परमाधामी मरकर अंडगोलिक मनुष्य बनते है ५६
५५ परमाधामी नारकों को दुःख देकर आनंदित क्यो होते हैं ५७
५६ नारकों के आयुष्य की उत्कृष्ट स्थिति ५७
५७ कौन से जीव नरक से आये है और पुनः नरक में जायेंगे ५७
५८ नरक में क्या नहीं होता ५७
५९ वेद नरक में क्यों और कैसे जाते है ? ५७
६० नारकों की गति ५७
६१ नरक की साबिती ५७
६२ वैमानिक देव अवधिज्ञान से नरक का कितना उत्कृष्ट क्षेत्र ५८
६३ ग्रैवेयक और अनुत्तर देवों का अवधिज्ञान ५८
६४ अवधिज्ञान का जधन्य विषय क्षेत्र ५८
६५ नारकी अवधिज्ञान से कौनसी दिशा तरफ ज्यादा देखती है ५८
६६ भवनपति आदि देवों के भवनप्रत्ययिक अवधिज्ञान के क्षेत्र का यंत्र ५९
६७ सातो नरक पृथ्वी के नारकी का उत्कृष्ट और जधन्य आयुष्य ५९
६८ रत्नप्रभा के हर एक प्रस्तर में उत्कृष्ट और जधन्य आयु. ६०
६९ १० प्रकार से क्षेत्र वेदना ६०
७० ३ वेदना में से कौनसी वेदना कितनी नरक तक होती है ६०
७१ सातो नरक पृथ्वी का पिंड और उसका आधार ६१
७२ नरक पृथ्वी की धनोदधि तीनो वलयों का विस्तार ६२
७३ सातों पृथ्वी के आवलिकगत नरकवासा ६२
७४ सातों नरक को नरकवासा की कुल संख्या का यंत्र ६३
७५ नरकावास की उँचाई, चौडाइ और लंबाई ६३
७६ नरक पृथ्वी के पिंड के आंतरा की गिनती का यंत्र ६४
७७ कौन से कारणों से जीव नरक आयु बांधे ? ६४
७८ सातो नरक पृथ्वी के नारकी का शरीर, विरहकाल, उपतात संख्या,
च्यवन संख्या और गति आगति का यंत्र ६४
७९ आपके अभिप्राय ६५

(१) नरक दुःख वेदना अति तीव्र...

सर्वज्ञ भगवंतो ने अपने ज्ञानबल से इन नरकों को प्रत्यक्ष रुप से देखकर इसका वर्णन किया है। वर्तमान में सूयमडांग सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, जिवाभिगम सूत्र आदि अनेक आगम शास्त्रो में उपरांत कुवलयमाला, उपमिति भव प्रपंचा कथा, भव-भावना, लोक प्रकाश, त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, बृहत संग्रहणी, देवेन्द्र नरकेन्द्र प्रकरण इत्यादि अनेक शास्त्रों में भी नरकगति का वर्णन प्राप्त होता है । श्री उमास्वाति लिखित तत्वार्थ सूत्र में भी इसका बखूबी वर्णन है। नर्क से बचने के लिये संयम, तप प्रभु भक्ति, साधु-साध्वी वैयावच्च आदि गुणों को आत्मसात कर इस जीवन को सफल बनाये और मुक्ति (मोक्ष) पाइये।

गर्भपात कराने वाली महिलायें, करने वाले डॉक्टर लोग या उसे प्रोत्साहित करनेवाले आदि सब नर्क में जाते है। वहाँ पर वे अति भयंकर अवर्णनीय दुःख सहन करते है।

सात व्यसन और अंडे आमलेट आदि खानेवाला मांसाहारी जीव भी तीव्र पापोदय से नरक में जाते है।

मांसांहारी मछुआरे, कसाई, बडे हिंसक प्रोजेक्ट को अमल में लानेवालो, गर्भहत्या करनेवाले डॉक्टर, ऐसी माताएं और उसके सहायक सर्व जीव नरक गति का आयुष्य बाँध कर यहाँ से मृत्यु के पश्चात निष्कुट नरकमें उत्पन्न होते है। शेर भालु, चिता, बिल्ली हिंसक पक्षी जानवर या घुबड, उल्लु जैसे हिंसक पक्षी भी नरक आयुष्य बाँधकर नरक में उत्पन्न होते है।

१ सागरापोम-१० करोड पल्योपम, १० करोड पल्योपम-असंख्य वर्ष, १ धनुष्य-४ हाथ १ हाथ-२४ अंगुल।

पृथ्वी के नाम	गोत्र के नाम	जधन्टा आयुष्य	उत्कृष्ट आयुष्य	देहभान धनु अंगुल
१. रत्नप्रभा	धम्मा	१० हजार वर्ष	१ सागरोपम	९१११६
२. शर्कराप्रभा	वंशा	१ सागरोपम	३ सागरोपम	१५१११११२
३. वालुकाप्रभा	शैला	४ सागरोपम	७ सागरोपम	३१११
४. पंक प्रभा	अंजना	७ सागरोपम	१० सागरोपम	६२१११
५. धूम प्रभा	रिष्टा	१० सागरोपम	१७ सागरोपम	१२५
६. तमः प्रभा	मधा	१७ सागरोपम	२२ सागरोपम	२५०
७. महातमः प्रभा	माधवती	२२ सागरोपम	३३ सागरोपम	५००

समस्त समुद्रों का सर्व जल पीने के बाद भी तृषा शांत न होती है। ऐसी सतत खुजली रहती है। तीव्रता इतनी कि तीक्ष्ण छुरिओं से खुजालने पर भी न मीटे। खुजली की पीड़ा अर्थात परवशता - अन्य पर आधीन रहने की वेदना नारकों को सदैव रहती है। बुखार, तो यहाँ के उत्कृष्ट ज्वर से भी अनंतगुना होता है। सुख में व्यतीत नहीं होता।

नर्कागार में ऐसी तीव्र पीडा सहन करते हुए सम्यक दृष्टि जीव प्रायः यह सोचता है की जीव पूर्व के अशुभ कर्म जिसे तुमने स्वयं किये है उसका यह परिणाम है इसलिये अगर तुझे रोष करना है तो अपने कर्मो पर करना अन्य किसी पर नहीं कारण परमात्माने कहा है कि - जीव को दुःख या सुख जो प्राप्त होता है, वे सब पूर्व के कर्मो का फलविपाक है, अन्य तो इसमें सिर्फ निमित्त होते है। (परमधामी आदि)

ऐसे शुभ ध्यान से तीव्र वेदना को सहता हुआ अशुभ कर्मो को खतम करके नरक में से नीकलते राजकुल आदि में उत्पन्न होकर क्रमश : सिद्धिगति(मोक्ष) प्राप्त करता है।

नारकी जीवों की पीडा देख क्रूर स्वभावी परमाधामी आनंदित होते है। परमाधमी देव पापी और निर्दयी होते है।

पूर्व भव में पंचाग्नि आदि बाल तप(अज्ञान तप) के फल स्वरूप उनको देव की समृद्धि प्राप्त हुई होती है।

(३) नरक के दुःखो से छुटकारा पाने के उपाय

❋ सोउण णिरयदुक्खां तवचारणे होइ जइयव्वं ॥
- सूयगडांग-निर्युक्ति

अच्छे भाव न आने की वजह से जीव हरदम अशुभ भाव और भयंकर पाप करके नरक में जाता है, इसमें कोई संदेह नहीं। अरे जो जीव कुछ समय बाद नजदिक के भविष्य मे तीर्थंकर बनकर मोक्ष में जानेवाले है, वे श्रेणिक महाराजा, कृष्ण वासुदेव, लक्ष्मण, रावण आदि जीव भी अभी नरक में घोर यातना भुगद रहे हैं।

नरकगति से बचानेवाला चारित्र और तप है। बारबार सोचो कि तप और चारित्र से अगर नरककी घोर यातना से बचा जा सकता है तो तप और चारित्र के कष्ट सहने में क्या परेशानी ? नरक के अति घोर दुःख से बचने उसके कुछ अंश जैसा संयम और तप के कष्ट क्यों नहीं सहन करना ?

१५ कर्मभूमि से जीव मोक्षमें जाता है। युगलिक मनुष्य नरक में भी नहीं जाते और मोक्ष में भी नही आज का मानव पाप जैसा टी.वी. छोड़ने को तैयार नहीं है। नरक दो-चार नहीं है, सात है फिर भी उसे न कोई डर है न घबराहट ! कैसी आश्चर्य की बात है ? हृदय कितना मजबुत है आदमी का ! चार गति में अति त्रासदायक शारीरिक और मानसिक दुःखो की यातनाएँ नरक में अनुभव करनी पडती है। अठारह पाप स्थानकों से अपने आत्मा को बचाना चाहिए। जिज्ञासा का पालन किजीए जिससे परमाधामी (पाप) अपनी काया का स्पर्श भी न कर सके। काया से तप और त्याग का आचरण कर सदगति बंध करना ही उचित है।

हमारे दादागुरु श्री कनकसूरिजी अमदावाद के श्रेष्टिओंको पुछते ? आपकी मीले (फेक्टरी) कितनी ? जितनी मीले उतनी नरक है। राजा श्रेणिक नरक से बचने का भगवान से उपाय पुछता है। क्या अपने को श्रेणिक महाराजा, जितना भय नरक का है ?

चाणक्य के पिता ने उसके जन्म होते ही दांत घीसवा दिये क्योंकि उन्हें ज्योतिष ने बताया कि दांत बहार है इसलिये वह राजा बनेगा। धर्मयुक्त पिता को चाणक्य को राजा नहीं बनाना था क्योंकि राजा धार्मिक क्रियाएं आदि नहीं कर सकता जो दुर्गति का कारण बन जाती है। इसलिये उसके दांत घीसवा दिये ताकि वह राजा न बन सके।

क्षीरकदंबक पाठक को जब परिक्षा द्वारा मालुम हुआ कि उसका पुत्र नरकमें जानेवाला है तब यह पुत्र के आत्मकल्याण के लिये घरबार छोडकर निकल पडा। धन्यवाद है ऐसे पिता को जिसे अपने बेटे की दुर्गति की सतत चिंता थी।

सह सह विषीद मा, भो ? यहाँ तप-त्याग को कष्ट और दुःख नहिंवत है इसलिये सहन कर ले(अन्यथा) भविष्यमें अनंतगुना दुःख और कष्ट नरकमें भुगतने को तैयार रहना पडेगा। हे आत्मन ! थोडा सोच ले। किसे कितनी कब नरकगति प्राप्त होगी उसकी गति-स्थिति आवास-वर्ण-आयुष्य आदि का वर्णन शास्त्रो में उपलब्ध है।

हर एक जीव को अलग प्रकार की वेदनाएं होती है। सर्व पापों का अंतीम फल तीव्र परिणामी होता है। पाप का विपाक नरक में रो रो कर सहन करना पडता है। यह द्रश्य देखकर सर्व पाप छोड दो, धर्म के आदेश से ज्ञान, ध्यान, तप, जप आदि प्रभु की आज्ञा शिरोधार्य करेंगे तो संसार भ्रमण का अंत हो जायेगा। मांसभक्षण का फल देखकर कौन बुद्धिमान उसे खायेगा जिससे नरक में वैतरणी नदीमें अपने को सिकवाना पडे। नरक में अति दारुण्य महावेदना झेलकर वापस प्रसाद में रहेने से ऐसी वेदनाएँ और पीड़ा कई बार सह चुका है, अब आत्मा को सावध कर जिससे ऐसी गलती दुबारा न हो कि फिर नरक में जाना पड़ जाये।

सात नरको में शस्त्रों की मार से उठाती वेदना परमाधामी देवों द्वारा पहुँचाई जाती वेदना पंचेन्द्रिय की हत्या, गर्भपात, मांसाहार आदि के कारण होती है।

दुःखो की पारावार असह्य कष्ट यातनाएँ अंतिम कक्षाके दुःखो नरक में भुगतना पडता है, अधिकतर पापो का फल भुगतने के लिए लंबा दीर्घ आयुष्य चाहिए। इसलिए अधिक दुःखो का स्थान नरक में जाना पडता है।

तप जप की असीम शक्ती है कि जीवों को नरक में जाने से रोक सके। नवकारशी से १०० वर्ष पोरिसीसे १००० वर्ष।

साड्ढ पोरीसीसे १०,००० वर्ष, पुरिमुड्ढ से १,००,००० वर्ष अवडढ से १० लाख वर्ष, एकासना करने से नारकी का जीव एक करोड वर्ष, आयंबील करने से १००० करोड वर्ष, नीवी करने से नारकी का जीव १० करोड वर्ष, एकलठानुं से १०० करोड वर्ष, एक उपवास करने से १० हजार करोड वर्ष, अट्ठम, पचक्खान करने (दस लाख करोड वर्ष) नरक के आयुष्यमें कमी होती है। अकाम निर्जरा द्वारा जो नरक के जीव दु:ख सहते हुए कर्मक्षय करते है। उन जीवों का जिज्ञासा से तपोबल से कर्मक्षय होता है। संपूर्ण १०८ नवकार गिनने से ५४००० सागरोपम, एक पूर्ण नवकार गिनेने से ५०० सागरोपम, नवकार के पद से ५० सागरोपम और मात्र नवकार का न एकाक्षर द्वारा ७ सागरोपम नरक का आयुष्यवध तुटता है। इस तरह तप और जप के प्रभाव से नर्क की दु:ख भरी वेदनाएं कम होती है। नवलाख नवकार गिनता नरक निवारे।

नरक का वर्णन सुनने के बाद, नरक है ऐसा विश्वास पैदा हो जाय तो जीवन परिवर्तन जरुर होता है। ज्यादातर लोगों को नर्क का भय नहीं है। रात्री भोजन नरक का प्रथम द्वार है, पर आप क्या उत्तर देंगे -रात को खाना खाये बगैर कैसे चलेगा। नौकरी धंधे ही ऐसे हो गये है। जब परमाधमी आपके ऐसे बहाने सुनकर आपको छोड तो नही देगा। आप एक रात भी यहाँ भूखे नहीं रह सकते तो वहाँ नरक में हजारों, लाखो और अनगिनत वर्षो तक खाना भी नहीं मिलेगा और न पीने को पानी। उस समय भूख-प्यास कैसे सहन करोगे ? शायद आप ऐसा सोच रहे होंगे।

कि जो पाप करनेवालों का होगा वह मेरा होगा ऐसा समझकर पाप कर्म चालू रखा तो फिर नरक से कोन बचायेगा ? आप ऐसा सोच रहे हो कि नरक नहीं है। अगर नरक निकली तो क्या हालत होगी इतना विचार किया कभी ?

भगवान के परम भक्त श्रेणिक और कृष्ण को भी नरकमें जाना पड़ा। भगवान से उनकी मुलाकात के पहले ही नरकायुष्य उन्होने बाँध लिया था। आज जरा सा दु:ख आते ही उपर-नीचे हो जाते हैं, फिर एक साथ नरक के इतने दु:ख कैसे सहन करोगे। नरक में न जाना हो तो तप-त्याग और संयम की साधना किजीये जिससे कर्मो का क्षय होगा। तीर्थंकर के कल्याणक के समय सातों नरक में उजाला(प्रकाश) होता है।

४ सातों नरक में प्रकाश वर्णन : प्रथम नरक में सूर्य के प्रकाश जैसा, दुसरी नरकमें बादल छाये हुए सूर्य जैसा, तिसरी नरकमें पूर्णिमा के चंद्र जैसा, चौथी नरक में बदली छाइ हुई चंद्र जैसा, पाँचवी नरक में ग्रहों के प्रकाश जैसा, छठी नरक मे नक्षत्र के प्रकाश जैसा, सातवी नरक में तारा के प्रकाश जैसा राजा श्रेणिक प्रथम नरक के प्रथम प्रस्तरमें ८४ हजार वर्ष तक रहेंगे। लोक स्वरुप भावना एवं बृहत संग्रहणीमें नरक यातना का वृत्तांत रोंगटे खड़ा करनेवाला होता है।

नरकमें मुझे नहीं जाना : मगध सम्राट श्रेणिक प्रभु वीर को वंदना करने जा रहे हैं। वंदन के बाद पुछते है, भगवंत। मै मरने के बाद कहाँ जाउंगा। भगवान उत्तर देते है, तुम नर्क मे जाओगे। भगवान आपका सेवक नरक में जायेगा। हे प्रभु, कुछ ऐसा उपाय बताओ जिससे मेरा नरक का दु:ख टल जाये दु:ख की परंपरा ही खत्म हो जाये। आप जो कहेंगे सो करने को तैयार हूँ पर मुझे नरक में नहीं जाना। भगवान कहते है कि कर्म के आगे सत्ता - संपत्ति, शक्ति सब कुछ किसी काम का नहीं, कर्म तुमने बाँधे तो उसका फल भी तुझे ही भुगतना पड़ेगा। तुमने शिकार किये, निर्दोष गर्भवती हिरण को तुम्हारे बाण का निशाना बनाया। दो दो जीवों को मारने के बाद भी तुझे तनिक भी दया नहीं आयी परंतु हर्ष हुआ। मै कितना पराक्रमी कि एक ही तीर से दो जीवों की हत्या की। उसी क्षण तुमने नरक का आयुष्य बाँध लिया था। उसे बदलने की न तुझमें या मुझमें शक्ति है। हंसते खेलते बांधे हुए कर्मो का फल तुझे नरक में भुगतने के अलावा कोई चारा न रहेगा। कर्म ने आज तक किसी को नहीं छोडा चाहे वह प्रभु वीर का परम भक्त श्रेणिक हो या लंकापति रावण हो या फिर नेमनाथ भगवान के चचेरे भाई श्रीकृष्ण महाराजा हो। नरकगति की अति तीव्र दारुण पीडा का वर्णन बिना अर्थात पापाचरण के नाश किये बगैर नरक से बच पाना मुश्किल है।

तंदुलिया मच्छ : मगरमच्छ की पलक पर रहता है। मगर के मुँह में कितनी मछली फंसती है और कितनी छूट

जाती है यह देखकर वह सोचता है कि अगर में होता तो एक भी मछली जबडे से छूट नहीं सकती थी। इस प्रकार से सिर्फ हिंसक विचार के कारण तंदुलिया मच्छ ७ वीं नरक में गया इसलिये विचारशील मानव सोच समझ कर आगे कदम रखना। खाने की तीव्र लालसा कंडरिक मुनि को ७ वी नरक में ले जा सकती थी। उन्होंने थुंक को अमृत मान कर भोजन किया, थुंकने वाले गुरूभाई पर तनिक भी क्रोध नहिं किया। इसलिये उन्हे केवल ज्ञान हुआ। अनाशक्त भाव से क्रिया करने से कर्मनाश होता है। अनंत बार नरक में गये, दु:ख सहन किये फिर भी मैं रात्री भोजन त्याग नहीं कर सकता क्योंकि नौकरी धंधे ऐसे ही हो गये है। अपनी कमजोरी और भूल का स्वीकार न करना सबसे बड़ी कायरता है। नरक गति से मुक्त होना मुश्किल है पर उससे भी ज्यादा मुश्किल उसके कारणों से मुक्त होना है। बड़े धर्मात्मा भी उन कारणों से मुक्त नहीं रह सकते।

गर्मी की ऋतु में बर्फ का पानी, साल भर फ्रीज का ठंडा पानी पीने से असंख्य जीवों का घात होता है। किंतु जब पशु-पंखी योनि में गंदे नाले में कचरा वाला पानी पीना पडेगा। थोडी सी भूख-प्यास के डर से चोविहार, नवकारशी, एकासना आयंबील भी नहीं करता पर जब नर्क गति में अनंत असाध्य दु:ख सहने पडेंगे तब तुम क्या करोगे ? इस समय अगर साधना नहीं कर शके तो भविष्य में कैसे करेगा ? अचरमावर्त में एक भी दु:ख ऐसा नहीं है कि जो हमने नहीं सहे हो, कोई पाप भी ऐसा न होगा जो न किया हो।

७. नरक चित्रावली :

महान संतो ने पंचेन्द्रि प्राणि वध, महारंभ, महापरिग्रह, मासांहार निरनुग्रहशीलता आदि को नरकगति का कारण दर्शाकर वर्णन किया है। हिंसा आदि कोई भी पाप जो उसमें तीव्र रस लेकर किया जाय तो नरक गति की प्राप्ति का कारण बनता है उसमें कोई संदेह नहीं। अति राग-द्वेष के कारण ही जीव हिंसा आदि पापों का सेवन तीव्र रस से करता है।

शास्त्रो में नरक भूमि का वर्णन देखने को मिलता है। श्रद्धा संपन्न जीवों का नरक के अस्तित्व में संदेह नहीं है। धर्म एक ऐसी शक्ति है जो आत्मा को संसार के अनेक पाप और दु:ख से दूर रखकर उर्ध्व गति प्राप्त कराता है तथा उसे अध:पतन से बचाता है। जगत के सर्व दर्शनो में भी जैन दर्शन ही ऐसा है जो आत्मा की उन्नति के लिए उसे संसार परिभमण से दूर रख कर केवल मोक्ष प्राप्ति के लिए ही प्रयत्नशील हो। जैन धर्म ने ही आत्मोन्नति के लिए यमनियम, व्रत, महाव्रत आदि धार्मिक आचार दर्शाये है। जैन धर्म के आचार में जिस प्रकार से अहिंसा की सूक्ष्मता रही है, उसकी वजह से सांसारिक जीव कर्मबंध से बच जाता है। जीव अशुभ कर्मोपार्जन कर दुर्गति में न चला जाय इसी कारण से नरक का स्वरूप वर्णन करना यह प्रकाशन प्रत्येक जीव को शुभ कार्यो में प्रवृत करेंगे और अशुभ कार्यो से पीछे हठ करवायेगा।

जब चारों और जड़ता, नास्तिकता, तथा स्वच्छंदता का ही बोलबोला है ऐसे समय में आत्मार्थी बालजीवों को पाप कर्मो के दारूण कुपरिणाम उनके कोमल मन को छु जाये इस तरह पेश कर दुष्ट कर्मो के भय का चित्रण करता वर्णन आत्मा को पाप कर्म किये जाने पर नरक गति में जाकर भी भोगना पड़ता है उसका भावपूर्ण वृत्तांत जिस प्रकार चित्रो द्वारा दर्शाया गया है वह हर तरह से उपकारी है।

श्रद्धावान छोटे-बडे, आबाल-वृद्ध तथा हर किसी के लिये शास्त्रो द्वारा दर्शित पाप कर्मो के कुपरिणाम स्पष्टता से समझने के लिये यह प्रकाशन खास उपकारी है।

जो जन हिंसा, झूठ, चोरी, परिग्रह, अब्रह्मचर्य, व्यसन, अप्रमाणिक, अनीति, छल, कपट, देव, गुरू, धर्म की आशातना, धर्म आचरण करनेवालो की टीका, गुणीजनों की निंदा, रात्रीभोजन, कंदमूल भक्षण बड़ो का अपमान इत्यादि पापों का आचरण करता हो उसे कैसी वेदना भुगतनी पड़ती है यह हकिकत स्पष्ट तरीके से चित्रों में दिखाया गया है।

हँसते हँसते बाँधे हुए कर्म तो रोते रोते भी न छुटे।

आज के युग में बढता पापाचार तथा उसके प्रति घटती धृणा व पाप करने में निर्भयता, धर्माचरण के प्रति उदासीनता वगेरेह इन दुष्ट तत्वों के लिए यह प्रकाशन एक लालबत्ती के समान है।

पाठकवर्ग के दिल और दिमाग पर पाप कर्मो के प्रति भय और धृणा पैदा करने में यह प्रकाशन अवश्य ही सफल होगा।

चार गतिओं में भी नरक में अत्याधिक दु:ख होते है तथा वह दु:ख खुद आत्मा को ही सहन करना पड़ता है।

नरक है या नहीं ? नारकीय दु:ख है याा नहीं ? ऐसी शंकाए व्यक्तिओं के मन में उत्पन्न हो सकती है। परंतु पुरी चित्रावली के पन्नों पर प्रकाशित शास्त्रों के प्रमाणो के अक्षरश: वाचन से यह शंका दूर होगी। रौद्र ध्यान आदि तीव्र अशुभ परिणाम जीव को नरकगति का अनुबंध कराता है।

भयंकर पाप कर्म करने वाले पापी भी पश्चाताप, प्रायश्चित संयम आदि तप करले पाप से मुक्त होकर सद्गति पाता है।

एक असत्य वचन से वसुराजा नरक में उत्पन्न हुआ।

नरक के चार दरवाजे है - प्रथम रात्री भोजन, दुसरा परस्त्री गमन, तिसरा बोर आचार, चौथा अनंतकाय भक्षण। जो लोग रात्री भोजन करते है, शील और संयम विहिन है। मध, मंदीरा, मांस के भक्षण में तत्पर है, वे मरने के बाद महानरक में जाते है ।

यहाँ रात्रि भोजन के फल में विभिन्नता है।

शास्त्रो में नारकी के लिए विस्तार से विवेचन है।

श्री भगवती सूत्र, श्री प्रश्न व्याकरण, श्री जीवाभिगम सूत्र, श्री भवभावना सूत्र आदि में नरक के बड़े बड़े वर्णन है। ख्रिश्चन बाइबल में हेल नारकी का उल्लेख है।

कुरान में जहन्नम-नरक के दु:ख सहन करने का लिखा है।

चार्वाक के सिवाय सब ने पाप के फल को माना है और अति पाप से नरक दु:ख भुगतना पड़ेगा ऐसा माना है। जीव हिंसा झूठ, चोरी, पापी, रौद्रध्यानी, परद्रोही, क्रुर और व्यभिचारी होता है वह भी नरकगति प्राप्त करता है।

प्रमाद से आशक्त देव, मनुष्य और विद्याधर के भव में भौग सुख भुगतने के बाद नरक में डर, डर, भय शब्दों के उच्चारण करते हुए जीव सीसा और तांबा रुप प्रवाही पीता है।

जो जीव आसक्त, दुष्ट और मूढ पापकर्म इस लोक में करता है वे पाप उसे अतिशय वेदना देनेवाले भयंकर नरक में ले जाते है।

भक्खणे देवदव्वस्स, परत्थीगमणेण य।
सतमं नरयं जंति सत्त-वाराउ गोयमा ।।

भावार्थ : हे गौतम, देवद्रव्य का भक्षण और परस्त्री गमन से जीव सातवी नरक में सात बार जाते है।

अणुत्तरेसु नरएसु वेयणाओ अणुत्तरा।
पमाए वट्टमाणेणं मए पत्ता अणंतसो ।।

भावार्थ : विषय, कषाय आदि प्रमाद को वश होकर मैंने भयंकर नरको में भयंकर वेदना अनंतबार सहन की है।

हे राजन ! चौदश अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा सूर्यक्रांति पर्व है। इन दिनों में तेल, स्त्री और मांस का भोगी मरकर यहाँ मलसूत्र का ही भोजन है ऐसी विष्ट मूत्र भोजन नामक नरक में जायेगा। (अन्य धर्म में बताया है।)

अक्खाई राठोड : वैध और परिवारजनों से त्यजा हुआ औषध से तंग, सोलह महारोग से युक्त राज्य, राष्ट, और अंत:पूर में मुर्च्छित राज्य की कामना करनेवाला, प्रार्थना करनेवाल शरीर और मन से दु:खी ऐसा वह (२५०) साल का आयुष्य भोगने के बाद रत्नप्रभा नरक में उत्कृष्ट सागरोपम की स्थिति वाले नरक में नारकी रुप उत्पन्न हुआ।

परलोक में नारक मेरु पर्वत की तरह सास्वत नहीं है। जो कोई पाप का आचरण करता है वह नारक बनता है। नारक मरने के बाद नारक तरीके से उत्पन्न होते नहीं है इसलिये वे दुसरे भव में नारक नहीं कह सकते हैं।

जो जीव माता, पिता, गुरुदेव, आचार्य और पूज्यों का अनादर और अवहेलना करता है वे वैतरणी नदी में डूब जाता है।

जो जीव पतिव्रता, सती, कुलीन, विनम्र ऐसी पत्निओं का द्वेष बुद्धि से त्याग करते है। वे अवश्य वैतरणी में गिरते है सज्जनों के हजारो गुण पर जो दोषोरोपण करता है। उनकी अवज्ञा करते है वे सब वैतरणी में पडते है।

नरएसु वेअणाओ अणोवमाओ असायबहुलाओ।
कायनिमित्तं पत्तो अणंतखुत्तो बहुविहाओ॥

भावार्थ : जीव ने काया के द्वारा अनुपम अशाता वेदनीयता, परम रुदनवाली विविध वेदनाएँ अनंतीवार प्राप्त की है। जो स्त्री अपने पति पर दोषारोपण कर अन्य पुरुष का चिंतवन करती है, वे स्त्रियाँ शाल्मलीवृक्ष पर अनेक प्रकार से पीडा सहती है। नास्तिक, मर्यादा का भंग करनेवाली, लोभी, विषय लंपट, पाखंडी, अकृतज्ञ छः नारको में जाती है।

इमीसे णं भते। रयणप्पहो पुढवीए नेरइया एक्कसमएणं केवतिया उववजंति ? गोयमा जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिन्नि का उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंख्यज्जा वा उवज्जंति एवं जाव अधे सत्तमाए।

हे भगवान। वह रत्नप्रभा पृथ्वी में एक समय में कितने नारकजीव उत्पन्न होते है ? है गौतम, जधन्य से एक, दो या तीन, उत्कृष्ट से संख्याता या असंख्याता नारकीजीव पैदा होते है। इस प्रकार से सातवी नरक तक का जाना।

राजा की रानी की इच्छा करने वाले परस्त्री का अपहरण कार, अपरणित कन्या और सती स्त्री को दुषण देनेवाले दुष्ट नरक में जाता है।

झूठी साक्षी देनेवाले, कूटनिति करने वाले छल कपट से द्रव्य कमाने वाला, चोरी करनेवाला, वृक्ष छेदन करनेवाला वन-उपवन-उद्यान बगीचा का विनाश करनेवाला, अव्रती बनकर विधवा के शील का भंग करनेवाले मनुष्य अवश्य नरक में जाता है।

शस्त्राणां ये च कर्तारः शराणां धनुषां तथा।
विक्रेताश्व ये तेषां ते वे नरकगामिनः॥

भावार्थ : जो हथियार बनाते है धनुष्य बनाते है, या उसे बेचते है सचमुच नरक में जाते है।

नरकगति में भाला के अग्र भाग से भेदाना, करवत से मस्तक अलग होना, शुली पर चढ़ाना कुंभार के भट्टे कुंभि में पकाना, असि पत्रवन से नासिका और कर्ण का छिदवाना, कदस्थ पुष्पाकार रीत से रेती पर चलना इत्यादि अनेक प्रकार के दु:ख निरंतर रहते है, पलक झपकने तक के क्षत्र मात्र भी सुख नहीं है।

जहां इहं अगणी उण्हो, एत्तोऽणंतगुणो तहिं। नरएसु वेयणा उण्हा, असाया वेइया मए॥ जहा इहं इमं सीयं एत्तोऽणंतुगुणो तहिं।

नरएसु वेयणा सीया, असाया वेइया मए॥

भावार्थ : यहाँ पर अग्नि जितना उष्ण है, उससे अनंत गुना उष्ण नरक में है, नरकों में मैंने उष्ण अशाता वेदना को सहा है यहाँ जितनी ठंड है उससे अनंता गुना ठंड वहाँ है, नरको में मैंने ठंड की अशाता वेदना भी सही है।

देवद्रव्य का उपभोग करनेवाले भयंकर दरिद्रता से जन्मजन्मांतर भव अटवि और नरकगति में फँस जाते है।

श्रीकृष्ण प्रबल वेदना से ग्रस्त तीसरी नरक से निकलकर आनेवाली उसर्पिणी में जंबूद्विप में भरतक्षेत्र के पुंढदेश के अंतद्वार नगर में बारहवाँ अममस्वामी नाम से तीर्थंकर होंगे। वहाँ से सिद्धिगति में जायेंगे।

एक ही बार बोला हुआ असत्य कितने ही सत्य वचनों का नाश करता है। एक ही असत्य वचन के कारण वसुराजा नरक में गया।

गोयमा ! नेरइया सीतं वेयणं वेयंति, उसिणं वेयणं वेयंति सीतोसिणं वेयणं वेयंति॥

भावार्थ : हे गौतम, नारको शीत वेदना सहते है, उष्ण वेदना सहते है, शीतोष्ण वेदना सहते है।

वह रेवती(गृहपतिनी) सात रात्री में विशुचिका, विशेष लक्षण की बिमारी से ग्रस्त होकर आर्त ध्यान में काल को प्राप्त कर रत्नप्रभा नामकी पृथ्वी में लोलुक नरक आवास में (८४) चौऱ्याँशी हजार वर्ष के आयुष्यवाले नारको में नारकी की तरह पेदा हुई।

नेरइयत्ताए कम्मं पकरेत्ता नेरइएसु उववज्जन्ति तंजहा महारम्यमाए महापरिग्गहयाए पञ्चेन्दियवहेणं कुणिमाहारेणं।

भावार्थ : नारक योग्य कर्म कर के जीव नारकी में पैदा होता है वे कर्म चार प्रकार के है महाआरंभ, महापरिग्रह, पंचेन्द्रिय वध और मांस भक्षण करना।

णरगउववाते परियायं एति परिपच्चंति।

नरक में उत्पन्न होने के बाद जीव परिताप और दु:ख प्राप्त करता है।

नेरइया णं भंते ! कतोहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उवज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति।

भावार्थ : हे भगवान ! नारकीओ कहाँ से आकर उत्पन्न होते है ?

हे गौतम ! नारकीओ नरक में से आकर पैदा नहीं होते, वे तिर्यंचगति से उत्पन्न होते हैं, मनुष्य गति से उत्पन्न होते है, देवगति से उत्पन्न नहीं होते।

हे भगवान ! नारकीओ क्या सम्यकत्वी, मिथ्यात्वी या सम्यक्मिथ्यात्वी होते है ? है गोतम ! सम्यकत्वी होते है मिथ्यात्वि होते है और सम्यमिथ्यात्वी भी होते है।

नेरइया णं भंते ! किं सायं वेदणं वेदंति, सायसाय वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! तिविहंपि वेदणं वेदेंति।

हे भगवान ! नारकीओ क्या शाता, अशाता या शाताशाता वेदना सहते है ? हे गौतम तीनों वेदना सहते है।

तीर्थंकर के जन्म आदि समयमें शाता वेदना, सिवाय अशाता वेदना, पूर्वभव के मित्र देव या दानव के वचन से मन में शाता, शरीर क्षेत्र से अशाता या उनके दर्शन वचन से शाता और पश्चाताप से अशाता इस तरह शाता अशाता वेदना का अनुभव करता है।

चत्वारो नरकद्वाराः, प्रथमं रात्रिभोजनम्।

परस्त्रीगमनं चैच, सन्धानान्तकायिके।

नरक के चार दरवाजे है, पहला रात्री भोजन, दुसरा परस्त्रीगमन तीसरा बोरा का आचार, चौथा अनंतकाय का भक्षण।

नेरइयाणं भंते ! केवइकालं ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसणं, तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिइं पन्नता।

हे भगवंत ! नारकीओं की स्थिति कितने काल की होती है।

हे गौतम ! जधन्य से दशहजार वर्ष और उत्कृष्ट से तैतीस सागरोपम की स्थिति है।

सात नरक भूमिओं ने नारकी के निवासों की संख्या पहली में (३०) त्रीस लाख, दूसरी मे २५ लाख, तीसरी मे १५ लाख, चौथी में (१०) दश लाख, पांचवी में ३ लाख, छठ्ठी में ९९९९५ और सातवी नरकमें ५ स्थान है।

नारकी के जीव आत्मा के वश-संयम से नहीं पर आत्मा के अवश-असंयम से उत्पन्न होते है।

उनके शरीर पर अति दुःखदायक खरज(खुजली) उत्पन्न होती है जो छुरि आदि से कुरेदने पर भी शांत नहीं होती।

यहाँ के बुखार से अनंतगुना ज्यादा बुखार वहाँ होता है। उनको दाह, शोक, भय, पराधिनता इत्यादि कई गुना यहाँ से ज्यादा होता है। शत्रु तथा उनके शस्त्रादि देखकर भय पेदा होता है। उनका विशेष ज्ञान भी कष्टदायी है।

से दुक्खाए-मोहाए-माराए-णरगाए-णरगतिरिक्खाए।

भोग आशक्ति से जीव दुःख, मोह, मरण, नरक और नरक तिर्यंच को प्राप्त करता है।

सद्यः संमूर्छितानंतजंतुसंतानदूषितम्।
नरकाध्वनि पाथेयं कोऽश्रीयात् पिशितं सुधीः ॥

प्राणीओं का घात करने के बाद तत्काल उसमें संमूर्छिम अनंत जीवों की परंपरा का सर्जन हो जाता है। उसका मांस भक्षण मनुष्य को नरक गतिमें ले जाता है।

अनुत्तर नरको में महावेदनाओ झेल कर वापस प्रमादमें रहेने से भी वे दुःख अनंत बार प्राप्त कर लिये।

पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं।
पंद्रह परमाधामी से (प्रतिक्रमण करता हूँ।)

अधर्मो नरकादीनां हेतुर्निन्दितकर्मजः। नरकादि का हेतु अधर्म है। निंदीत कार्य से अधर्म उत्पन्न होता है।

१) हिंसा आदि पाप की भयंकर सजा :

पापकर्म है तो उसे भोगने के लिये अधो लोक का ७ रज्जु प्रमाण विशाल नरक क्षेत्र भी है। जहाँ पापी जीव भयंकर सजा भुगत रहे होते है। ऐसे पाप की प्रवृत्ति और उसकी कडक शिक्षा सहन करना भी एक शाश्वत क्रम है।

पापो की सजा का रौद्र-डरावना स्वरुप देखने-जानने के बाद ऐसे दुःखी कोई भी जीव न हो। कब ? जब सर्वथा सर्व पाप न करने की प्रतिज्ञा लेंगे तब, क्योंकि अगर पाप किया तो उसके उदय होते ही उसकी सजा जीवों को भुगदनी पड़ती है। यह शाश्वत नियम है। पाप से अनजाना कोई भी व्यक्ति नहीं होता। व्यक्ति खुद जीवनमें पाप करता है, इसलिये वह पापों को प्रत्यक्षरुप से पहचानता है। हिंसा, जूठ, चोरी, दुराचार, व्यभिचार क्रोध, अभिमान, माया, कपट, छल-प्रपंच, अतिलोभ, चाडी-चूगली क्लेश-कषाय, कलह कंकास, आक्षेप-आरोप, अभ्याख्यान, संग्रह-परिग्रह, इर्ष्या-द्वेष, परनिंदा, मिथ्यात्व आदि कई प्रकारके पाप है। इन सब पापों का आचरण मानवी प्रतिदिन करते रहते है। अरे ! बहुतसे लोग खुद पाप नहीं करते पर दुसरों से करवाते है। कभी कभी ऐसे पाप और पापीओं की प्रशंसा-अनुमोदना भी की जाती है। इस तरह से इतने सब पाप जो मानव दैनिक जीवन में कर रहा हो वह पाप से अनभिज्ञ नहीं हो सकता।

इन पापों को तो जिंदगी में हजारों बार कर चुके हैं। इसलिये एक एक पाप से अच्छी तरह परिचित हम हैं। कौनसा पाप किस तरह जाय उसके हर पहलु से हम बाकिफ है। कब यहाँ किस प्रकार से झूठ बोलना, बड़े की हाजरी में कैसे सिफत पूर्वक चोरी की जाय एसी कला में मुझे अच्छी तरह आती है। क्योंकी-हिंसा, झूठ चोरी इत्यादी पाप मैने कई बार किये है।

अनंत भवोकी वात ही कहां ? इस वर्तमान भव का विचार कर कि अपने जन्म से आज तक कितनी बार बोले ? किन बाबतौं में बोले ? किन किन विषयो पर गलत बोले ? अथवा एक विषय में, एक ही बाबतमें जिवन के इतने वर्षोके आयुष्य में कितनी बार बोले होंगे ? तथा कितनो के समक्ष जूठ बोले होंगे ? इसकी क्या कोई गीनती है ? किसी ने भी अपने किये हुए पापो का हिसाब रखा है। कौन रखता है ? पाप करते है, करबाते है, तथा करते जाते है। इसलिये हर एक पाप से हर व्यक्ति अच्छी तरह जानता है अनजान नही है। यह तो जूठ नाम के एक पाप की बात की इस तरह चोरी, इसी तरह जीव हिंसा, क्रोध गुस्सा करना, मान अभिमान करना, माया कपट करना, अतिलोभ करता, राग द्वेष करना, इर्ष्या प्रत्यारोप करना चुगलखोरी करना, अतिसंग्रह करना औरो की निंदा करना पसंद नापसंद के बारे में अच्छा बुरा कहकर खुशी अथवा दुःख जाहीर करना, माया व कपट पूर्वक छल प्रपंच से सच्चे झूठ खेल खेलना, मिथ्या वृति से देव-धर्म तथा तत्त्वों को न मानना आदि अठारह पापों को आज तक हर जिवो ने कितनी बार, किस तरह कहां कहां किस किस के साथ किन बातो पर, किन विषयो पर पापो को पोषा है। ऐसे एक एक पाप कितनी ही बार किये है इसका हिसाब कहाँ है।

अपने आप द्वारा किये गये पापोकी संख्या देखकर चकर आ जाते है। यह तो सिर्फ वर्तमान ने एक भव की बात है, उससे भी अवसपींणी काल के पांचवे आरे के कम आयु वाले छोटे भव की बात है तो फिर कल्पना करो के ? दुसरे, तीसरे व चौथे आरे के लाखो, करोडो अरबो वर्ष के आयुष्य काल वाले बडे भवो में एक एक पाप कितनी बार किये होगें ? इसका हिसाब कैसे करोगे ? इस तरह अनेक भवो के सब पाप इकट्ठा करे तो कैवल्य ज्ञानी भगवान भी उसकी संख्या अनंत है कैसे बतायेंगे।

इस तरह अनंत जन्मों से भवो से जीवो को पाप करने की आदत है। व्यसन है। अनंत भव बिते, काल अनंत गुणा बिता, इसमे अनंतगुणा पाप किये हुऐ, इस तरह यह स्पष्ट है कि जीव पापो से रंगा हुआ है। पाप करने की आदत, व्यसन तथा संस्कार, पाप करने की इस वृत्ती के कारण पूर्व संस्कारो के कारण आगामी काल तथा भवों में भी पाप होते रहते है। पापकी इस वृत्तिसे बंधे कर्म अपने, उदयकाल मे वापस पाप वृत्ति कराते है। तथा वापस पाप कर्म बंधते है तथा फिर से कर्मो का उदय होता है। इस तरह पाप का कभी अंत नही आता। फल स्वरुप जीव को चारगति में (८४) ८४ के चक्र छुटकारा नहीं मिलता।

आप पाप में मानते हो और सजा में मानो के न मानो उससे क्या फरक पडेगा ? सजा चाहिये या नहीं वह तो मिलेगी ही और भुगतनी ही पडेगी। जिस तरह जहर को भले ही न मानो पर पीने के बाद, पेट में गया फिर जो असर होती है वह होकर ही रहेगी। उसमें कोई विकल्प नहीं है।

महावीर प्रभु के जीव ने १९ वे भव में ७वी नरक में ३३ सागरोपम जितने दीर्घ समय पर्यंत कडक सजा सहन की

है। हाँ...पापके आधार-तीव्रता के प्रमाण से पहली नरक से लगाकर सातवीं नरक तक जीव को जाना पड़ता है। वहाँ के कानून। ठराव के मुताबिक जीव को असह्य वेदना भुगतनी पडती है। जो उसने किये हुए पाप कर्मो का फल होता है।

श्रीकृष्ण गीता में कहते है, कृर्त कर्म अवश्यमेव भोक्तव्यं, कल्पकोटि शतैरपि करोडों साल का लंबा समय बित जाय फिर भी जो पाप कर्म किये है। उसकी सजा अवश्य भूगतनी ही पडती है, उससे कोई छूट नहीं सकता। सर्वज्ञ प्रभु श्री महावीर परमात्मा अंतीम देशनारुप उतराध्ययन सूत्र में स्पष्ट शब्दो में कहते है कडाण कम्माण न मोक्खोति। किये हुए कर्मो से कोई छूट नहीं सकता। जो कर्म जिस रीत से किया हो उसकी सजा सहन करनी पडती है। न्यायाधीश किसी को क्या सजा देगा ? जब कर्म खुद ही जीव को सजा देते है वह बहुत ही लंबी और भयंकर होगी। जिसका अंत शायद कितने ही जन्मों के बाद होगा यह तो सिर्फ ज्ञानीजन ही बता सकेंगे।

अगर पाप की सजा कीस तरफ निगाह डाली जाय तो सजा की भयंकरता समझाती है जिससे पापों से मन जल्दि विमुख हो सकता है।

यहाँ जेल में दी जानेवाली सजा हम देख नहीं सकते तो फिर नरक में जाकर वैसी सजा कब और कैसे देख सकेंगे ? कया नरकमें जाकरके देख आना संभव है ? ना, क्योंकि नरक में जाकर तो वहाँ से शायद सीधे ही यहाँ आये है परंतु यहाँ नरक की कोई भी बात याद नहीं। सहन की हुई सर्व प्रक्रिया, यहाँ तक कह देते है कि.....नरक है ही नहीं ? कहाँ है नरक ? कौन कहता है नरक है ? ये तो सिर्फ अपने जैसे लोगों को डराने की बात है। ऐसी बातों से मिथ्यात्वी जीव नरक वगैरह कुछ नहीं उनके विचारों से खुद तो छूट जाता है और अन्य को भी बहताता है। इसलिये पाप करने का छूटा दौर प्राप्त हो जाता है।

जो सर्वज्ञ परमात्मा ने नरक का वर्णन स्वमुख से अनंतज्ञान से किया था, वह अक्षरश: आगमशास्त्रो में स्पष्ट शब्दो में वर्णित है । श्री उतराध्ययन सूत्र में महावीर प्रभु स्वयं स्पष्ट शब्दो में और सूयगडांग-सूत्रकृतांग सूत्र में भी नरक का, नरकगति के दु:खो का वर्णन ऐसे धारदार शैली में रजू किया है जिसे सुनते ही अपने रोम रोम खड़े हो जाय, काँपने लगे। ये वर्णन पढने सुनने से आज भी मानसपट्ट पर चित्र अंकित हो जाते है, जिससे शायद इन भयंकर पापों से बचना और फिर दुबारा उसे नहीं करने का मन करेगा।

शास्त्रो में सिर्फ पाप नहीं, अपितु उसकी सजा कितनी डरावनी और दारुण है यह भी विस्तार से लिखा है, इसलिये सिर्फ पाप देखकर उषका अनुकरण करनेवाला कया सजा और दु:ख तरफ नजर नहीं करेगा क्यों ?

१८ वा भव में त्रिपुष्ट वासुदेव बने...तीन खंड के राज्य सता के स्वामी बने... खुद ने किये हुए पूर्व में संकल्प (नियाणा) के मुताबिक सिंह को जीर्ण वस्त्रकी तरह चीर कर मार डाला। पंचेन्द्रिय तिर्यंच पशु को मारने से पंचेन्द्रिय हत्या का पाप लगा।

खूद की रानी के साथ कलह किया। रानी ने आर्तध्यान किया। जब वे सत्ताधीश हुए तब संगीत श्रवण करते सो गये। उसमें खलेल होने से शय्या पालक पर आक्रोश कर कान में गरम गरम शीशा डलवाया।

वे सब भयंकर पाप किये। सिंह के हिंसक भव में पेट भरने के लिये कितने ही पंचेन्द्रिय जीवों की हत्या के सिवाय अन्य कोई विकल्प ही न था। ये सब पाप ही है।

जो पाप करेगा वह सजारुप दु:ख भोगेगा। जो पुण्य धर्म करेगा वह सुखी होगा। जैसा करोगे ऐसा भरोगे। इसमें किसी के लिये भी कोई भेद नहीं। कर्म के लिये राजा-रंक का, अमीर-गरीब का कोई भी भेद नहीं होता।

१८ वे भव में सिंह को फाडना तथा कान में गरम-गरम शीशा डलवाना जैसा भयंकर पापके परिणाम से १९ मे भव में ऐसे बडे तीन खंड सत्ताधीश वासुदेव त्रिपुष्ट को भी सातवी नरक में जाना पडा। वशा ३३ सागरोपर तक गाढ अंधकारवाली ७ वी महातम: प्रभा नरक में दु:ख सहने पडते है। वे सब प्रभु वीर के जीव ने सहन किये। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि इतने दु:ख नरक में उत्तर में ना कहते है। इसका प्रत्यक्ष पूरावा है कि २७वा भव में दीक्षा लेने के बाद जब वे साधना कर रहे थे तब कान में खीले जड दिये गये।

७ वीं नरक में इतने समय रहेने के बाद भी सर्व पाप पूर्ण नहीं हुए। अरे ! नरक में अगर सब पापों का क्षय हो जाता है तब वहाँ से ही मुक्ति मिल जाती है ?

परंतु ऐसा नहीं होता । नरक में कर्म निर्जरा हेतु आलंबन रुप देव, गुरु, धर्म कुछ भी नहीं।

पाप कर्म करोगे तो उसकी सजा भुगतने दुबारा जन्म लेना पडेगा। एक ही भव में किये हुऐ अनेक पापों की सजा अनेक भवों तक सहन करनी पड़ती है ?

दु:ख विपाक ग्रंथ के १० वें अध्ययन मृगापुत्र आदि के अध्याय में पहले भव में जीव पाप करता है और असंख्य भवो तक उसका फल भोगता है। इस तरह एक ही भव में किये हुए भयंकर पाप के दारुण विपाक भवो भवो तक जीव सहन करता है। इस प्रकार पापों के कारण उसका संसार चक्र कभी खत्म नहीं होता। पाप करते वक्त कितना समय लगता है ? उसकी सजा सहने में और उसके बाद की सजा में कितना समय बितता है उसका तो अंदाज भी लगाना मुश्किल है।

पाप की प्रवृत्ति सफल होते ही जीव खूब अभिमान करता है। राजा श्रेणिक का द्रष्टांत स्पष्ट है। हिरनी के शिकार में तीव्र चीकने कर्म बांधकर प्रथम नरक का आयुष्य कर्म निकाचित किया। क्या फायदा हुआ ?

अनंत भवों से...वर्षो से..अनंत समय से जीव पाप करते ही आया है। पाप करने के संस्कार भवोभव की आदत और व्यसन के कारण जोरदार है। इस भव में प्रभु का शरण मिला है, वीतराग का शासन और धर्म प्राप्त हुआ है । सर्वोत्कृष्ट देव, गुरु और धर्म की प्राप्ति होने से कर्म निर्जरा द्वारा कर्म को खत्म कर उससे मुक्त हो जाना चाहिये । अगर इस भव में धर्म का सहारा होते हुए भी कर्म है और दुसरी बाजु नये पाप करने चालू रखेंगे तो उसका परिणाम भव परंपरा और दु:ख के सिवाय कुछ नहीं होगा।

मन नी जीते जीतवुं रे, मननी हारे हार, मन लइ जावे मोक्ष मां रे मन ही नरक मोझार...

पाप देखनेवाले व्यक्ति का भय के बदले खुद पाप का भय होना चाहिये। पाप देखने वाला अपना इतना बूरा नहीं करेगा जितना हजार गुना पाप कर्म अपना बूरा हाल करेगा । पाप देखनेवाला हमारे साथ अगले भव में नहीं आनेवाला, जब कि किये हुए पाप जन्म जन्मांतर तक आत्मा के साथ चिपक कर रहेते है। पाप कर्म के उदय होते ही नरक, तिर्यंच आदि दुर्गति में कई जन्मों तक पाप की सजा भुगतनी पडती है।

अपने पाप देखनेवाले व्यक्ति को तो शायद हम डरा सकते है। इसलिये वह हमारा तो कुछ न बिगाड़ सकता, सिर्फ थोड़ी सामाजिक बदनामी कर सकता है। परंतु, बांधे हुऐ पापो में से, जन्मों जनम तक साथ देनेवाले कर्म, कई भवो तक नरक आदि जैसी दुर्गतियोंमे हमे दु:खी करते है। इसलिए सच्चाई इसी में है कि पाप देखनेवाले व्यक्ति से डरने के बजाय, पाप से ही डरना चाहिए।

पाप कर्म के बंध रुप १८ पाप स्थानक :

१. प्राणातिपात-हिंसा-जीव को प्राण से रहित करना, वध करना। छोटे बडे कोई भी जीव को मारना वह हिंसा है।

२. मृषावाद-असत्या बोलना, जो है उससे अलग स्चरुप बताना।

३. चौर्य-अदत्तादान - अ अर्थात लेना। किसी को पूछे बगैर लेना, मालिक की आज्ञा के बिना लेना अदत्ता दान-चौर्य कहलाता है।

४. मैथून - अब्रह्म-मिथुन, युगल स्त्री-पुरुष साथ में रही कामक्रीड़ा करना। काम वासना में आशक्त रहना। आत्मा में लीन न रहना।

५. परिग्रह-धन-धान्य आदि में अत्यंत ममत्व भाव होना। तीव्र इच्छा से संग्रह करना

६. क्रोध - गुस्सा, आक्रोश, कषाय है। पापवृत्ति है।

७. मान-कषायजन्य मद, अभिमान, गर्व पाप है।

८. माया - छल-कपट अन्य को ठगना।

९. लोभ - तृष्णा, मोहनीय कर्म के उदय से तृष्णा, अतृप्ति के पापजन्य भाव से धन-वैभव-सत्ता की स्पृहा।

१०. राग - प्रेम स्नेह, जड पदार्थो में आशक्ति, आकर्षण

११. द्वेष - तिरस्कार, अप्रियता, बेर-झेर

१२. कलह - क्लेश, झगड़ा, उग्रवृत्ति

१३. अभ्याख्यान - आरोप, किसी के उपर झूठा आरोप लगाना।

१४. पैशून्य-चाडी-चूगली, किसी के दोष को अन्य के पास खोल देना, आपस में झगडा कराना।

१५. रति-अरति-हर्ष, शोक। इष्ट चीज की प्राप्ति में प्रीति-रति-हर्ष। अनिष्ट चीज मिल जाने से शोक करना। इष्ट चीज की निवृत्ति से दु:ख होना।

१६. पर परिवाद - अन्य की निंदा और स्व की प्रशंसा अन्य की बात को बढ़ा चढ़ाकर नींदा करना।

१७. माया - मृषावाद - कपट सहित झूठ बोलना।

१८. मिथ्यात्वशल्य - देव, गुरु, धर्म में यथार्थ श्रद्धा न होना ? जीवाजीव के तत्त्वो में अश्रद्धा होना।

जगत के महापुरुष कहते है कि जिस तरह जहर परखा नहीं जाता उसी प्रकार से पाप को भी परखा नहीं जाता। जहर का असर तुरंत दिखता है। जब कि किये हुए पापों का असर कुछ समय बाद या कुछ भवों के बाद दिखाई देता है। इसलिये पापों को भोगने का या करने के बाद छोडने का नहीं होता अपितु पापों तो दूर से ही भांपकर(देखकर) छोड देने के होते है। किचड में पहले पाँव खराब करो फिर उसे धोनो का नहीं होता।

पाप के बुरे फल इस संसार में रोज देखने को मिलते हैं। दु:खी लोगों को अनेक प्रकार से दु:खी होते देखकर, वे सब दु:ख उनके किये हुए पापों का फल है यह जानकर तुरंत ऐसे पाप का आचरण करना हमें त्वरित छोड़ देना चाहिये। जिससे वैसे दु:ख सहन करने का मौका ही न आये।

गुरुजनों के अनुभव ज्ञान से शास्त्रज्ञान से, उनके पास पाप का स्वरुप, परिणाम, सजा आदि की सर्व हकिकत समझकर पाप करना छोड़ देना चाहिये। पाप न करने की प्रतिज्ञा लेना भी अपने ही हित में है।

पानी का बाँध तूट जाय उसके पहले ही उसके आसपास मजबूत पाळ बाँध लेना या आग लगने से पहेले ही कुआ खोद लेना ज्यादा अकलमंदी का कार्य है। अन्यथा बाद में करनेवाला कार्य मूर्खता है। इसी प्रकार से जब पाप कर्म उदय में आ गये जीव पाप की सजा भुगतने नरक में परमाधामी देवों के समक्ष पहोंच गया तब क्या धर्म करने बैठोगे ? अब मै ऐसा नहीं करुगा, ऐसा बोलकर उनसे विनंती करोगे तो वह क्या सुनेगा ? क्या उसको अपने पर करुणा भाव आयेगा ? क्या वह अपने को छोड़ेगा ? ना...ना... यह संभव नहीं कि वह छोडे। परंतु परमाधमी कहेगा, भाई आगे से तुम पाप न करना पर अब तक जो किये है उसकी सजा तो तुझे मिलेगी ही ।

अठारह पाप स्थानक मोक्ष मार्ग की प्राप्ति में अंतराय करनेवाले है। ये पाप मोक्षमार्गरुप धर्मतत्व के धातक और अवरोधक दोनों हे। वे मनुष्य को दुगर्ति में ले जाते है। नरक और तिर्यंच गतिरुप दुर्गति का आयुष्य बंधानेवाला ये अठारह पाप स्थानक साधक मुमुक्षओं को छोड देना चाहिये।

दिनभर में मैंने मन से कुछ खराब विचार किया हो, वाणी से जो कुछ बुरा बोला हो और शरीर से जो कुछ पाप किया हो, उसके लिये मैं माफी मांगता हूँ। मिच्छामी दुक्कडम अर्थात क्षमापना करता हूँ। मेरे सब पाप मिथ्या हो एसी भावना से प्रतिक्रमण प्रारंभ करना चाहिये। पाप त्याग का प्रतिक्रमण होना चाहिये।

जो घर में पाप का व्यापार-वाणिज्य हो तो उसमें पुत्र पौत्र को उससे दूर रखकर उन्हे अलग व्यापार सीखना चाहिये ताकि संपूर्णपरिवार धीरे धीरे पाप की कमाई से बच जाये। कालसौरिक नाम कसाई : राजा श्रेणिक के समय में यह कसाई रोज के ५०० भैसा मारने का व्यापार करता था। उसको पाप से बचाने के लिये श्रेणिक ने उसे सुके कुएँ में उतारा जिससे वह जीव हत्या न कर सके। वहाँ पर भी वह मट्टी से भैंस जैसी लकीर बनाकर उसको, हाथ से मारता था जैसे वह तलवार से उस पर वार करता हो। इस तरह वह कायिक नही पर मानसिक हिंसा करने लगा। उसका पुत्र सुलष था वह बोला पिताजी मैंने प्रभु महावीर देवका उपदेश सुना है, वहाँ करोडों वर्ष उसकी सजा भुगतनी पडेगी।

पिता बोला, कुल की परंपरा को त्यागना पाप है।

पुत्र सुलष ने पिता को समझाया, अगर मै ऐसा पाप करुगा हिंसक वृत्ति वाला अभव्य था। वह यह बात कैसे समझे ? पुत्र सुलष कसाई के घर जन्मा था फिर भी प्रभु की देशना सुनकर हिंसा की परंपरा त्याग कर नरक से बच गया। काल सौरिक मरने के बाद सातवी नरक में गया। हम सब जीवों को हिंसा के पाप से बचना चाहिये।

१३) श्रेणिक महाराजा से छुटे हुए तीर ने गर्भवती हिरनी को मार गिराया। हिरनी और पेट का गर्भ दोनो तडप कर मर गये। श्रेणिक को जब मालुम पडा, तब उसने पाप की प्रशंसा की। इस तरह हिंसा की अनुमोदना द्वारा खूब गाढ़ निकाचित कर्म बंध किया। बाद में धर्म तरफ अत्यंत श्रध्धा उत्पन्न हुई और आराधना की, तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन भी किया परंतु उसे नरक में जाना पडा। कल से कोई ऐसा कहे कि पुरी सृष्टि इश्वर ने मनुष्यों के लिये ही बनायी है तो फिर शेर और चित्ता भी ऐसा कह सकते है कि प्रभु ने मनुष्य सृष्टि हमारी खोराक के लिए बनायी। फिर उसका परिणाम क्या आयेगा ?

किसी को बचाना वह हिमालय उठाने जितना बडा कार्य है, अति दुष्कर कार्य है। परंतु किसी को मारना अति सरल है, उसमें कोई बडी बात नहीं है। चप्पु या बंदूक से पल भर में किसी को भी आप मार सकते हे।

मरना कितने को आता है ? और मारना किसे आता है ? मारना लाखो लोगों को आता है। रोज अखबार में समाचार पढ़ते है कि पुत्र ने पिता को मारा, भाई ने भाई को मारा, पतिने पत्नि को मारा, सास ने बहु को मारा। सब को मारना आता है। परंतु मरना कितने को आता है ? यहाँ आत्महत्या की बात नहीं है, कुत्ते के जैसी मोत की बात नहीं है। यहाँ तो मृत्यू को महोत्सव मनाकर हँसते हँसते मरने की बात है।

किसी ने दु:ख से छुटकारा पाने के लिये आत्महत्या कर ली। पर आगे के परिणाम के बारे मे सोचा ? अतृप्त तृष्णा, वासना अपूर्ण इच्छा के साथ आर्त और रौद्र ध्यानमें बेचारा मर तो गया, पर बाद में प्रेत योनि में व्यंतर-राक्षस, चुडेल, भूत बनकर तृष्णा में ही भटकता रहेगा। हजारो साल तक इन जीवात्माओं की मुक्ति नहीं होती। उसके बाद भी अनेक जन्म में वह भटकता ही रहेगा।

अनेक जन्म बरबाद करने के बदले थोडा सा दु:ख सहने में कुछ बुराई नहीं है। मनुष्य जन्म अति मूल्यवान है। यहाँ से ही सर्वोच्च गति प्राप्त होती है तो उसे व्यर्थ क्यो गँवाना ?

पशु पंखी बेचारे, निर्दोष प्राणी है, जो जंगली घास खाकर गुजारा करते है, नदी-नाले का पानी पीकर अपनी प्यास बुझाते है, उन्होंने आपका क्या बिगाडा ? ऐसे निर्दोष प्राणीओं की हत्या क्यों ?

नरक की दुर्गति ऐसो घातकी, क्रूर और हिंसक मानवो के लिये आज भी तैयार है।

१४) विश्व में चारो और कितनी हिंसा ?

जिसकी कोई गिनती नहीं जिसकी कोई सीमा नहीं जिसका कोई अंत नही और जिसकी कोई मर्यादा भी नहीं। आज के समय में भिन्न २ कारणों से अत्याधिक हिंसा हो रही है। कहीं पर खाने के लिये तो कई जगह मौज शौक, सौंदर्य प्रसाधनों के लिये या फिर वस्त्र आदि को बनाने में हिंसा हो रही है। कुछ क्षेत्रो में व्यापार के लियेभी खूब बडे प्रमाण, में हिंसा चल रही है।

आधुनिक कत्तलखानों में एक ही दिन में १५-२० हजार गाय, बैल, बकरी आदि का वध किया जा रहा है। एक ही झटके में ५०० (पांचसौ) मेंडको मारा जा सकता है। ऐसी तेकनीक को चीन, बैंगलोर के मत्सत्य संस्था ने विकसित करी है।

उसे कई गुना अधिक भी किया जा सकता है। अरेरे ! अफसोस की भारत जैसे आर्यदेश को आज विदेशी मुद्रा प्राप्त करने के लिये हजारो टन मेंडको की, हजारो टन मांस और हजारो टन मछलियों का व्यापार करना है।

(बुचरखाने) कत्लखाने में पशुओं का वध किया गया, खून की नदिया बहाई गई, बडे २ ड्रम आदि भरकर दवाई की कम्पनियों नें सौंदर्य प्रसाधन आदि बनाने वाली कम्पनियों के खरीद कर उसका रुपांतरण कर अपने (ग्राहक) के पास भेज रही है। कई एलोपेथीक, दवाई प्राणीजन्य हो गई है। इन दवाइयो का डॉक्टर अपने मरीजो के ऊपर जाने या अनजाने उपयोग कर रहे है।

मांसाहारी मनुष्य मांस का उपयोग करता है। चमार चमड़े से जुते-चप्पल बनाता है और हम आप उसे खरीदते है । हड्डियों का पावडर बना कर उसमें सुगंधित वस्तुएँ मिलाकर आकर्षक डिब्बों में पैक कर बेचा जाता है।

पशुओ की चर्बी का उपयोग शुद्ध घी में मिलावट में होता है और लोग भी उसे खरीद कर खाते है।

मनुष्य इतने नीम्न स्तर पर जा चुका है - सूअर जो विष्टा खाकर जीता है, मनुष्य ने उसे भी नहीं छोडा। सुअर को पाव बाँधकर अग्नि में लटकाया जाता है और चर्बी निकाली जाती है। यहाँ नहीं बाजार में नमकीन फरसाण को इस प्रकार के तेल में तलकर नमक-मिर्च डालकर स्वादिष्ट बनाकर बेच जाता है और लोग उसे खरीद कर खाते है। लाखो सर्पो को मारते है स्वार्थ के लिए।

१५) अंडे खाने में पंचेनिद्रय जीव की हत्या :

आज सरकार कर माफ की दलीले दे कर देश के कोने २ में पोल्ट्री-फार्म बनाती रही है। इस कारण से चारो - और हजारो - लाखों मुर्गिया पाली जा रही है। इन मुर्गियों को जीवन भर जान के ऊपर खेल कर जीना पड़ता है। उन्हें मछलियों का पावडर आहार के रुपमें दिया जाता है। साथ ही इन मुर्गियों को एक विशेष प्रकार के कृत्रिम उष्णता से निर्मित तापमान में रखा जाता है। और फिर वे बार-बार गर्भवती होती है, प्रसुति के समय अंडे में मौजूद जीव की मृत्यू हो जाती है कृत्रिम तापमान के कारण ।

अब विचारिये अंडा शाकाहारी है या मांसाहारी क्या अंडे वृक्ष या झाड पर लगते है ? कदापि नहीं ! ये तो सभ्य सुशिक्षित समाज की कमजोरी है।

अंडे का उत्पादन १० गुना बढ़ गया है और उसके उपयोग भी खूब बढ़ा दिये है। आजकल शैम्पू, दवाई, आईस्क्रिम और ऐसे कई खाद्य पदार्थो में अंडे का उपयोग किया जा रहा है। कई प्रकार की ब्रेड में भी अंडे का उपयोग किया जाता है।

अंडे खाना मतलब मुर्गी के बच्चे की हत्या के समान है। या कहें कि अंडा शाकाहारी तो नहीं है उसमें से भी पंचेन्द्रिय जीव निकलता है - ना कोई पत्थर।

अंडा खाना मतलब पंचेन्द्रिय जीव की हत्या का पाप है, दूसरी तरफ अंडे में कई वैषिले पदार्थ होते है जो स्वास्थ्य को खूब नुकसान पहुँचाते है। कई रोगों का कारण अंडा और मांसाहार है। इस पंचेन्द्रिय जीव हिंसा से जरुर बचना चाहिये।

१६) गर्भपात

गर्भपात करवाने की सलाह देने वाली जैन कुल मे जन्मी महिलाए जब व्रत उपवास, पूजा-पाठ सामायिक, तीर्थ-यात्रा करती है तब खूब आश्चर्य होता है।

गर्भपात जीवित मनुष्य की हत्या है।

आफ्रिका में मानव मांस भी बिकता है। सुना है युगान्डा के इदी अमीन जीवित मनुष्य का रक्त पीते और मांस भी खाते थे।

वर्तमान काल में अश्लील सिनेमा, टी.व्ही. आदि पर देखने का परिणाम है समाज में अनाचार का बढना। युवक-युवतियों की कामवासना भी खूब बढ गई है।

कुंवारी कन्या गर्भपात करवा रही है कई-कई बार। आज के युवाओं को भ्रष्ट करने के कई साधन बाजार में उपलब्ध है। कालेज की लड़कियाँ कोल गर्ल का व्यवसाय करती है, हाय कैसा कलयुग। जहाँ लडकियाँ शरीर बेचकर पेट भरती है। अच्छे घर की स्त्री भी आजकल खाली समय में काम करती है।

कलयुग की बिडम्बना यह है कि जो कानून रक्षक या आज वो भक्षक बन गया है। कानून ने भ्रूण हत्या को स्वीकृति प्रदान कर दी है। जिसके परिणाम स्वरुप समाज में व्यभिचार, दुराचार बढ़ गया है। गर्भपात के विषय में खुले तौर पर, जाहिर किया जाता है, कि मात्र १५-२० मिनिट में किया जा सकता है और खर्च भी मात्र १०० रुपये आदि। गर्भहत्या एकदम आसान बन गई है और उसमें योगदान वैज्ञानिक तेकनीक का है, जिसके कारण देश के कोने २ में मानव हत्या के कत्लखाने चल रहे है, इनमें सुशिक्षित कसाई आधुनिक हत्यारों से ये काम कर रहे है। हाय ! बेचारा गर्भस्थ शिशु का नसीब जोकि गर्भ में उल्टा लटक कर सो रहा है उसे चाकू छुरी से काटकर निकाल देते है। सच कहा जाता है डॉक्टर याने डोक (गर्दन) कटर। भ्रूण हत्या का आधुनिकिकरण विज्ञान का महा अभिशाप है ।

कौन कहता है गर्भ में जीव नही होता ?

जीव तो पहेले ही क्षण से उसमें होता है, जीवन होते १-२-३ महिने का विकास भी किस प्रकार हो सकता है नहीं तो फिर मृत बालक ही रहता गर्भ में, ये सब बचाव पक्ष की दलीले है।

अंधा कानून भ्रूण हत्या को अपराध नहीं मानता पर माँ के गर्भ से नौ मास पूर्ण कर निकले बालक हत्या को बाल हत्या करार देता है। देखो कितना आश्चर्य बालक तो वही है, जीव भी वही है पर मान्यता में अंतर। आज भ्रूण हत्या परम सीमा पर है।

इस धरती पर पाप का बोझ बढ़ता जा रहा है। मनुष्य का पाप का घड़ा भर गया है और अब सर्वनाश, प्रलय से बचना है, तो भ्रूण हत्या को बंद करना ही है नहीं तो माँ भी माँ न होकर राक्षसी कही जायेगी।

लाखों माताओं ने अभी संसार देखा नहीं पर स्वत: के निर्दोष बालक की हत्या का पाप करा है। इस प्रकार के कार्य में सहभागी आज का डॉकटर वर्ग भी है जो मात्र कुछ हजार रुपयों के लिये ये घोर अपराध करते है।

भारत के सभी धर्म ने भ्रूण हत्या को महापाप कहा है पर फिर भी कानून इसे स्चीकृति दे रहा है।

धरती पर अभी तक जिसने जन्म नहीं लिया ऐसे बालक ने क्या अपराध किया कि उसे दुनिया में आने ही नहीं दिया गया।

हे भारतीय नारी ! आर्य की भूमि पर डाकू, हत्यारे आदि ने गर्भस्थ शिशु की हत्या से द्रवित हो संत बनकर सिद्ध बने।

पूर्व भव में की भ्रूण हत्या के कारण परिवार में बालक नहीं जन्म लेते या पशु, पक्षी, मनुष्य के बच्चो का जो वियोग करवाते हैं उन्हे पुत्र/पुत्री नही होते हैं या फिर जन्म के तुरंत बाद मृत्यु हो जाती है।

गर्भस्थ शिशु की हत्या करने वाली स्त्रीयों का मुँह देखना भी महापाप है, अमंगल है।

महानिशीय सूत्र में गौतम स्वामी भगवान से पूछते है सूर्यश्री के बारे में

तब प्रभु उत्तर देते है कि छठी नरक में गई है। हे प्रभु किस कर्म के उदय से बेचारी वहाँ पहुँच गयी ?

गर्भपात विचार मात्र से सूर्यश्री छठी नरक में गई, भ्रूण हत्या से नरक का रास्ता निश्चित हो जाता है।

दवाखाने या कसाईखाने ? भ्रूण हत्या खूब बढ़ गई है जिसके कारण संसार में चारों और अशांति का वातावरण है।

गर्भ हत्या जैसे पाप के बारे मे तुम कभी विचार भी न करना।

कैची जैसा हथियार अंदर डालकर जीवित शिशु को काट-पीट कर, लहूलुहान कर बाहर निकाला जाता है, इस दौरान मासूम जीव को असह्य वेदना झेलनी पड़ती है। फिर चम्मच जैसे साधन द्वारा उन टुकडो को बाहर निकाला जाता है।

अंधेरे में तीर मारने के समान ये ओपरेशन होता है। जीवित बालक के पैने हथियारों से छलनी किया जाता है।

कई दयालु उन्हे गोद भी ले लेते है।

अहिंसा का दर्शन भारत वर्ष में खूब समझा है। यहाँ जैन धर्म का प्रादुर्भाव हुआ है और उसमें पंचेन्द्रिय से एकेंद्रिय जीव को मारने की हिंसा करार दिया है। गौ हत्या बंद कराने के लिये आचार्य, संत आदि उपवास । अनशन आदि करते है तो गांधी के इस देश में भ्रूण हत्या को सरकार प्रोत्साहन दे रही है। गुजरात राज्यमें संपूर्ण गौवंश हत्या (वध) प्रतिबंध सुप्रिम कोर्ट ने दिया। नरेन्द्र मोदी का साथ लेकर विनियोग परिवारने सबसे महान कार्य में वर्षो के बाद सफलता मिली।

महिलाये जब परिवार कल्याण केंन्द्र पर जाती हैं तो उन्शे गर्भपात के लिये तैयार किया जाता है। उन्हे कहा जाता है इस बालक की अभी जरुरत नहीं है, तुम्हारा रुप, यौवन अचूक रखना हो तो गर्भपात करा लो। तुम्हे नौकरी करनी है, पति को कंपनी देनी है, विदेश यात्रा आदि करनी है या मौज-मजे करने है तो ये बालक उसमें बाधक बन रहा है इसलिये गर्भपात करा लो। कानून ने भी गर्भपात को स्चीकृति दे दी है। गर्भपात में कोई तकलीफ नहीं होती, नौकरी कर रहे हो तो चालू तनख्वाह पर छुट्टी भी मिलती है।

हजारों वर्षो के धार्मिक संस्कार लिये हुए भारतीय नारी इस अपराध करने में हिचकती है। तब उसे समझाया जाता है अभी शुरुआत है - उसमें जीव नहीं आया, यह तो, मांस का लोंदा है इसे निकाल देने में कोई अपराध नहीं, पाप नहीं। आठ दिन में तो फिर तुम तैयार हो जाओगे और किसी को खबर भी नहीं लगेगी। इन सब वातों में स्त्री आ जाती है पर उस मूर्ख को यह पता नहीं कि तिसरे महिने में तो बालक पेट में हलचल शुरु कर देता है और जीव तो उसमें गर्भाधान के वक्त ही आ जाता है।

जीव ही जीव को जन्म दे सकता है । मृत पदार्थ में से जीवन संभव ही नहीं। जन संख्या कम करने की यह एक नीच-खूनी चाल है।

कुँवारी माता लोकलाज के कारण गर्भपात कराती है उससे कही ज्यादा विवाहित महिलाएँ कायदे के आधार पर खुलेआम भ्रूण हत्या करती है। बच्चे नहीं चाहिये तो विवाह क्यों किया ? मौज करने के लिये लग्न किये तो फिर सुरक्षा के साधन क्यो नहीं वापरे और अगर भूल हो गई तो उसे क्यो नही भुगतनी ? अकाल समय पर निकाले गये शिशु अगर माँ-बाप के समान कोर्ट में खडे हो तो ? या सरकारी वकील की उन्हें मदद मिले तो ? अपने माँ-बापने अपने को इस प्रकार निकाल बहार फेंका होता तो ?

अनइच्छित बालक को जीवन प्रदान करने से बेहतर है उसे गिरा देना। अगर ये दलील चल सकती है तो आने वाले समय में अनइच्छित पत्निया को जला देना एक दिन राष्ट्रसेवा माना जायेगा। अंधे, लूले, लंगडे या मंदबुद्धि बालकों को और बोझ रुप बने वृद्धों को भी जहर का इंजेक्शन देकर खत्म करने का कानून बन सकता है।

लोक में बहुत पाने वाले के मनपसंद कानून बन सकता है। सत्ताधारीओंको भी बहुमती के मतकी जरुरत पडती है। बहुमती समाज बीडी, सिगरेट, दारु, भांग आदि नशा करें तो कल्याण राज्यमें क्या शिष्टाचार गिना जायेगा ? डोक्टरों के सोगंधविधि में स्पष्ट कहेने में आता है कि गर्भपात करके हमने कितने राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, गांधी, नेहरु और अन्य महान विभूतिओं को धरती पर आने से पहले ही मार डालते है। मैं डॉक्टर बना जीवन बचाने के लिये-जीवन नाश करने के लिये नहीं ।

गर्भपात

यह सब पढ़ने के बाद संकल्प करें कि जीवन में कभी से पाप (भ्रूण हत्या) जो सीधा नरक गति में ले जाता है अत: हम नहीं करेंगे। भूल से अगर ये पाप हो गया तो किसी महापुरुष या गुरु भगवंत के पास जाकर पाप का प्रायश्चित सच्चे हृदय से करें और इसकी निंदा-गर्हा बार-२ करें तो बांधे कर्म निर्बल बनेंगे। शायद आयुष्य का बंध न हुआ हो नरकादि की दुर्गति से बच सकते हो।

पशु-पक्षी भी अपने बच्चों से प्यार करते हैं। कुतिया कभी - २ अत्याधिक भूख के कारण अपने तुरंत जन्मे बच्चे को खा जाती है। आज की नारी तो बिना कारण बस स्वत: की मौज-मस्ती के निमित्त जन्मे बालकका खून करवा देती है। ये नारी तो उस कुतिया से भी गई-गुजरी है।

१७) पंचेद्रिय जीव की हत्या

तिर्यच-गाय, बैल, बकरी, बाघ-सिंह, पक्षी, मछली आदि की हत्या से नरकायु का बंध होता है । श्रेणिक महाराजा ने शिकार के समय गर्भवती हिरणी की हत्या की और फिर उसकी प्रशंसा करी... नरकायु बंध हुआ और १ली नरक में गये। प्रभु महावीरका संसर्ग पाकर धर्म समझा तीर्थंकर नामकर्म बांधकर आनेवाली चौवीसी में प्रथम तीर्थंकर बनेंगे। पर हिरणी के शिकार द्वारा बंधी नरकायु में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। तो विचार करे आज के समय में कत्तलखाने चलाने वाले, मछली पकड़ने वाले, बचनेवाले आदि की गति क्या होगी। मनुष्य की हत्या करने वाले और करवाने वाले भी नरक की हवा खाएंगे।

मासांहार पंचेन्द्रिय जीव जैसे पशु-पक्षी, का मांस खाने वाले मछली आदि खाने वाले, मुर्गी-चिकन आदि खाने वाले ज्यादातर मृत्यु के बाद नरक में जाते है।

मनुष्य क्रूर-हत्यारा बन गया है। खुद की सुंदरता के लिये कितने ही सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग करता है । जिनमें इन मूक जीवों से निकले पदार्थ मिलाये जाते है या फिर इन सौंदर्य-प्रसाधनों को तैयार करने के बाद खरगोश, बंदर आदि जानवरों पर टेस्ट परिक्षित किया जाता है यह जानने के लिये की इनका कोई द्रव्य भाव उपयोग करने वाले मनुष्य पर तो नहीं पडेगा । आजकल लिपस्टीक, परफ्युम आदि भी प्राणी जन्य ही चुके है।

१०० ग्राम रेशम बनाने में १५०० रेशम के कीड़ो को उबलते पानी में डालकर मौत के घाट उतार दिया जाता है जरा विचार करे आपकी रेशम की साड़ी का वजन और उसमें होने वाली हिंसा की कल्पना कर हृदय हिल जायेगा... बैंग्लोर आदि शहरो में सिल्क रेशम के बड़े २ कारखाने है और उसमें मौत के घाट उतारे जा रहे रेशम कीड़ो की

संख्या...हाय ! ये सिल्क के परिधान जो आपकी शान दिखाते है अत्यंत हिंसक तरीके से बने हैं।

जिंदगी का दोहरा मापदंड एक तरफ अत्यंत धार्मिक जीवन सुबह के समय और शाम को शान बढ़ाने वाले हिंसा जनीत परिधान।

हाथी दात : आफ्रिका, केन्या आदि देशों में हाथियों की बडे पैमाने पर हत्या हो रही है जहरीले तीरों से ताकि हाथी दांत लेकर आभूषणो का निर्माण किया जा सके।

लेदर : जानवरो को मारकर चमड़ा उतारकर पर्स, चप्पल, जुते, बेल्ट आदि बनाये जाते है। यह चमड़ा भी अगर नवजात पशु का हो तो उससे निर्मित वस्तुएं बाजार में खूब महंगी बिकती है। (काफ लेदर) के नाम से क्योंकि ये वस्तुएं खूब मुलायम होती है।

बड़ी संख्या (पचास हजार के करीब) में व्हेल मछली का शिकार हो रहा है। चर्बी और तेल के लिये। शेम्पू, क्रीम, साबुन आदि के लिये हजारों खरगोश पकड़कर गर्दन बाहर रखकर बाकि शरीर पेटी में डालकर बंद कर दिये जाते है। उसके पश्चात शेम्पु आदि उनकी आंख में डालकर प्रयोग किया जाता है और परिणाम रुप कई बेचारे अंधे हो जाते है। एलोपेथी दवाई का भी इस प्रकार परिक्षण किया जाता है इन मूक प्राणियों पर अंत में इन प्राणियों की चमड़ी उतार कर पर्स आदि बनाये जाते है।

हजारो की संख्या में बंदरो का निर्यात होता है, उन्हे भी इसी प्रकार बांधकर विभिन्न प्रयोग करे जाते है और अंत में मृत्यु हो जाती है उनकी नाभि में से कस्तुरी निकाल कर खूब महेंगे दाम पर बेचा जाता है। अरेरे ! मानव के सौंदर्य की अभिलाषा ने भयंकर क्रुर आचरण कर लिया है।

स्त्री रोग में दी जानेवाली, ऑस्ट्रेजन नाम का हारमोन जीवित गर्भवती घोड़ी में अत्यंत त्रास पूर्वक निकाला जाता है विटामीन ए और डी वाली दवाएँ। डायबिटीज के मरीज को दिया जानेवाला इंसुलिन भी जानवरों के लीवर में से बनाया जाता है। दम-अस्थमा के इलाज में उपयोग आनेवाली दवा... कत्ल करे जानवरों की ग्रंथियों में से बनाई जाती है। आजकल अब सिंथेटिक भी बनाई जा रही है।

दवाइयाँ प्राणियों की क्रुर हिंसा के द्वारा बनायी जाती है।

१८) हिंसा का फल - ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती

कांपिल्यपुर के राजा ब्रह्मदत्त ने राज्याभिषेक कर अपने पुत्र ब्रह्मदत्त को राजा बनाया। ब्रह्मदत्त अपने बाहुबल से षट्खंड जीतकर चक्रवर्ती बने। एक दिन एक ब्राह्मण ने उनसे भोजन की मांग की। ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने भोजन कराया

चक्रवर्ती ने उसे पकड़वा लिया और पूरे परिवार के साथ उसे मारकर वंश समाप्त कर दिया। चक्रवर्ती ने मंत्री से कहा हर रोज ब्राह्मण को मारकर उसकी आंखे लाओ मै नींद में से उठकर दोनो हाथो से उनको मसलकर आनंद प्राप्त करुगा। चक्रवर्ती की आज्ञा पालन अपना फर्ज समझकर मंत्री उसी प्रकार किया और आँखो को थाली में रखकर चक्रवर्ती के सामने रखी। ब्रह्मदत्त ने आँखे खूब जोर से मसलकर कहा इसी प्रकार रोज लेकर आना।

१९) अक्खाई

महावीर भगवान को वंदना कर गौतम स्वामी एक दिन मृगागाम में मृगाराणी के घर गोचरी लेने गये। मृगापुत्र को देखकर उन्होंने आकर प्रभु से पुछा - है कृपालु ! इस जीव के ऐसे कौन से पाप कर्म है ? तब प्रभु ने मृगापुत्र के पूर्व भवका इस प्रकार वर्णन किया। वह महाशतद्वार नगर का स्वामी धनपति राजा का सामंत अक्खाई राठोड (राष्ट्रकुट वंश) नामक था वह ५०० गाँव का स्वामी था। वह महापापी, हिंसक, लंपट और व्यसनी था। कर वसुलने के लिये प्रजा को खूब हैरान करता था और खुद मौज मजे करता। किसी की आँखे फोड़नी, हाथ पैर काटने, नाक कान काटने आदि के क्रुर आचरण करना। अंत में कमजोर और रोगी हो गया। महाहिंसा या तीव्र पापो की सजा यही भोगनी पड़ती है।

२५० वर्ष का आयुष्य पूर्ण कर राठोड मर गया। हे गौतम ! राठोड का जीव मरकर मृगाराणी की कुख से जन्म लेता है। जन्म के साथ ही भूमिगृह में दुर्गंध फैल जाती है, आँखे नहीं होने के कारण अंधा है। कान - नाक भी नहीं। गुंगा - बहरा है, नाक के स्थान पर एक छिद्र है उसी से श्वास आ जा रहा है, मुँह भी पूरा नहीं, हाथ पैर भी नही। मात्र माँस का पिंड जैसा शरीर है। भयंकर वेदना भोग रहा

है। असंख्य सुई एक साथ चुभाने पर जो वेदना होती है वैसी तीव्र वेदना झेल रहा है। एक साथ अनेक महारोग का उदय हुआ था।

प्रभु के द्वारा यह वर्णन सुनकर गौतम स्तब्ध रह गये और मुँह में से शब्द निकले - साक्षात नरक यही तो है और क्या ? प्रभु ने कहा है गौतम ! ३२ वर्ष की आयु इस स्थित में पूर्ण करके यहाँ से मरकर सिंह योनि मे जन्मकर फिर १ ली नरक में जायेगा। ऐसे अनेक भव नीची गति मे पूरा करेगा। सच में, पाप की सजा खूब भारी है यह प्रसंग विपाक सूत्र के ११वें अंगसूत्र में दु:ख विपाक नाम के प्रथम अध्यन में आता है।

आत्मन : प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्

स्वत: के लिये जो प्रतिकुल है उसे दुसरो के प्रति कभी आचरण नहीं करना चाहिये।

२०) असत्य का फल - कौशिक तापस

ऐसा सत्य नहीं बोलना चाहिये जिससे दुसरे को पीड़ा हो या दु:ख पहुँचे। कौशिक तापस की बात सुनकर पता चलेगा -

कौशिक तापस गंगा किनारे रहता था। लोगो में उसकी गिनती सत्यवादी के के रुप में होती थी। कुछ चोर पास के गांव से चोरी कर दौडते हुए पास की झाड़ी में घुस गये। उनके पीछे गांव के लोग भाले - तलवार लेकर चोरों को ढुंढने आये। लोगोने चोरो के बारे में तापस से पूछा - कहते की आप तो सत्यवादी हो कृपा कर बताओ कहाँ छुपा है चोर ? कौशिक विचारने लगा - सत्यवादी नाम से प्रसिद्ध हूँ तो झूठ बोल नहीं सकता। उसने बता दिया चोरों का ठिकाना और लोगोंने चोरों का वहाँ जाकर मार डाला। इन सब सत्य बोलने से पहले जीवदया - जीवरक्षा, अहिंसा हिंसा आदि का ख्याल करना चाहिये। कौशिक मर कर नरक में गया।

२१) वसुराजा - झूठा अर्थ समझने के कारण वसुराजा नर्क में गये।

वसुराजा सत्यवादी के नाम से प्रसिद्ध था। उसके दो मित्र थे नारद और गुरुपुत्र पर्वत। पर्वत कुलपति हुआ और छात्रो को पढ़ाता था। एक बार नारद पर्वत से मिलने गया तब पर्वत छात्रोको अज का अर्थ बकरा बता रहा था। यज्ञ में अज का होम करो मतलब यज्ञ में बकरे की बलि चढाओ। यह सुनकर कितने ही विधार्थी ऊपर-नीचे हो गये। चतुर नारद ने कहा अपने गुरु ने अज का अर्थ... किया है और इस अर्थ से पाठ किया है उसने स्पष्ट कहा अज - जिसका जन्मफिर से न हो। जूनी डाल को फिर से जमीन में उगाओ तो उगती नहीं है। पर्वत को नारद की बात स्वीकारने में अपमान लग रहा था। इसलिये हठपूर्वक कहने लगा- अज मतलब बकरा और यज्ञ में होम करने की बात है। नारद उसे मित्र वसुराजा के पास ले गये जिसकी सत्यवादी के तौर पर किर्ती फैली हुई थी। पर्वत ने शर्त रखी की जो झूठा पड़ेगा उसे अपनी जीभ काटनी पड़ेगी। दोनो ने शर्त मान ली और वसुराजा के पास जाना निश्चित किया।

इधर पर्वत ने यह बात अपनी माता को बताई। माता एकदम दु:खी होकर बोली तुम्हारे पिता जब पढाते थे तब मैने भी सुना है अज का अर्थ यज्ञ में क्या बकरे को होम हो सकते है ? अरे ! अब तू क्या करेगा ? पुत्र को बचाने माँ वसुराज के पास गई। पर्वत, नारद प्रेम वशी भूत होकर गलत अर्थ पर सहमति देकर पर्वत को बचाया जा सके, यह स्वीकार किया।

तीसरे दिन पर्वत, नारद वसुराजा के पास गये और अपने पक्ष प्रस्तुत किये गुरुमाता को दिये वचन में बंदी होने के कारण पर्वत के पक्ष में निर्णय दिया। स्वीकार लिया गया की अज का अर्थ बकरे का होम करना यज्ञमें।

यह अर्थ का अंतर सुनकर शासनदेवी कोपायमान हुई, सत्य के कारण जो देव वसुराजा के अनुचर थे छुट गये और सिंहासन से नीचे उतार दिया। सत्यवादी झूठा करार दिया गया। पर्वत भी राज्य छोडकर चला गया और अंत में सत्य की विजय हुई सत्य मेव जयते। वसुराजा और पर्वत दोनो मरकर नरकगामी बने जूठ बोलने हेतु से

२२) दत्तराजा ने आचार्य कालकासूरि को मृत्यू की धमकी दी पर उन्होंने असत्य कथा नहीं करा।

अल्पादपिमृषावादाद्, रौरवादिषु सम्भवः।
अन्यथा वदतां जैनीं, वाचं त्वहहः का गतिः ॥

जरा भी झुठ बोलने पर रौख्रादि नरक मे जाना पड़ता है नहीं तो दुर्गति में जाना पड़ता है तो फिर भगवानके सिद्धांत का विपरीत अर्थ करना, महामृषावादी की तो क्या गति होगी ? हेमचंद आचार्य योगशास्त्र में बिना संकोच कहते हैं कि ऐसे असत्यवादी के लिये निगोद के सिवाय कोई स्थान नहीं।

निगोदेष्वथ तिर्यक्षु तथा नरका वासिषु।
उत्पद्यन्ते मृषावादप्रसादेन शरीरिण : ।।

झूठ के कारण आने वाले जन्मो में जीव अनंतकाय निगोद में उत्पन्न होता है और अनंतकाल तक जन्ममरण करता रहता है। जहाँ पलक झपकने में लगनेवाले समयमें १७ १/२ बार जन्म मरण होता है। ऐसी भयंकर स्थिति में जीव कितना समय यहाँ निकालता है और नरक के फेरे भी करता है। निगोद - तिर्यंच और नरक गति मृषावाद के कारण होती है।

२३) चोरी का फल : अभग्नसेन चोर को भयंकर सजा विपाक सूत्र में दु:ख विपाक के दुसरे अध्ययन में इस कथा का वर्णन है।

पुरिमताल नगरके राजा महाबल थे। नगर के बाहार अमोध दर्शन नाम का बगीचा था। एक प्रभु महावीर गौतम आदि के साथ इस बगीचे मे पधारे। देवताने समवसरण की रचना की और प्रभु ने देशना दी। गौतमस्वामी प्रभु आज्ञा से गोचरी के लिये गये, तब पुरिमताल के राज मार्ग से जा रहे थे तो एक प्रसंग सामने आया -

अनेक हाथी-घोडे, राज सैनिक आदि खडे थे, इन सब के बीच एक मनुष्य को स्तंभ से उल्टा लटका रखा था। उसके नाक-कान काट लिये थे। आसपास खडे पहलवान उसे मार रहे थे। उसके बाद उसके आठ काका को मारा। फिर आठ काकीओ को, फिर पुत्र, पुत्रवधु जमाई, पौत्र-पौत्री आदि संबंधिओं को सैनिक ने खूब मारा। उससे भी करुणा जनक स्थिति स्तंभ से बंधे मानव की थी उसे भालो से छेदा जा रहा था, उसका मांस और रक्त उसीको पिलाया जा रहा था।

यह क्रूर प्रसंग गौतम स्वामी ने देखा और उद्‌गार निकले साक्षात नरक का द्रश्य। समवसरणमें बिराजित प्रभु के पास गौतम स्वामी ने प्रसंग वर्णन किया और पूछा।

ये मनुष्य कौन है और इसका इस जन्म का पाप या पूर्वजन्म का ?

हे गौतम पुरिमताल नगर के बाहर चोरों की बस्ती है, पहाड़ो के बीच गुफा भी है। इस बस्ती में महाभयंकर चोर विजय रहता है। वह क्रूर, हिंसक, लंपट और शूरवीर भी था। दुसरों की चोरी करना सिखाता था और इन्ही सबमें उसका जीवन व्यतीत हो रहा था। उसकी स्कंदश्री नामकी पत्नी थी जिससे उसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम अमग्न सेन था और पूर्व भव में अंडे का व्यापार करता था। निहन्न नाम का व्यापारी जिसकी मदद के लिये पांच सौ व्यक्ति थे, जंगल में जाता और पक्षियों के अंडे लाता, बेचता था इस प्रकार के विविध महाभयंकर पाप करता था तो निहन्न अंडवणिका (१०००) हजार वर्ष का आयुष्य पूरा कर तीसरी नरक में उत्पन्न हुआ। असंख्यात वर्ष का आयुष्य नरकायु पूर्ण कर विजय चोर के यहाँ भग्न के रुपमें जन्मा हैं।

मनुष्य जन्म मिलने पर भी पाप के पूर्व संस्कार के कारण महाचोर हुआ और पुन: पाप व्यापार करने लगा। पिता की मृत्यु के बाद उसे मुखियां घोषित किया और चोरो का सेनापति बन गया। पिता से ज्यादा बेटा चतुर चोर निकला। पुरिमताल के राजा और प्रजा परेशान हो गई और प्रजा

अपनी गुधर लेकर महाबल राजा के पास गये। अभग्नसेन को युक्तिपूर्वक पकड़ा गया और उसे फांसी दी जायेगी।

हे गौतम ! इस प्रसंग की यह कहानी है। ये अभग्नसेन जो असह्य वेदना झेल रहा है। ये उसके तीव्र पापों का फल है। इस प्रकार भयंकर वेदना झेलता हुआ मरणोपरांत अनेक नीच गतियों में भ्रमण की सजा किये हुए कर्म भोगे बिना नहीं छुटते।

हिंसा भयंकर पाप हैं इसमें कोई शंका नहीं हिंसा जनित वेदना कुछ क्षण की है परंतु जो किसी व्यक्ति की संपति छीन लूट लेता है तो वह व्यक्ति जीवन भर दु:खी होता है। आर्तध्यान करता है और कई बार पागल भी हो जाता है।

व्यवहार में धन ११ वा प्राण है।

चोर सात प्रकार के है १) जो स्वयं चोर है २) चोर को सब प्रकार की सामग्री देकर मदद करने वाला ३) चोर को चोरी की सलाह देनावाला मंत्री ४) चोरी की योजना का भेद जाननेवाला ५) चोरी का माल लेनेवाला ६) चोर को भोजन आदि देनेवाला ७) चोर को आश्रय देनेवाला - ये सात प्रकार के चोर बताये है।

चोरी की सजा शारीरिक पराधीनता, जेल की सजा, अंगोपाग की विकृति। भयंकर चोरी की सजा तो तिर्यंच गति या नरक गति भी होती है।

कर्मके हिसाब से गति मिलती है। नरक गति में तो परमाधामि राक्षस तैयार है, वे महाक्रूर हैं उन्हे तुम्हारे पर कोई दया नही आयेगी जैसे कसाई गाय-बकरी आदि को दया रहित होकर काटता है उसी प्रकार नरक गति में तुम्हारी खैर नहीं, तेल में भजिये की तरह तल देंगे, पत्थर पर पटकेंगे ऐसे अनेक असहनीय दु:ख तुम्हे अपने किये हुए पापों के स्वरुप झेलने पड़ेंगे।

२४) अब्रह्म पाप का फल - ब्रह्मदत चक्रवर्ती

लक्ष्मणा साध्वी को तिर्यंच की कामक्रीडा देखकर ही मानसिक विषय वृत्ति उत्पन्न हुई थी। साधु दिवाल पर लगे स्त्री चित्र आदि नहीं देखते लकडी की बनी पुतलियों को हाथ नहीं लगाते, ये जो पुतली जड़ है कई बार काम वासना को उत्तेजित करने में निमित्त बन जाती है। जड़ पुतली, चित्र आदि का देखना भी निषेध है तो फिर सजीव स्त्री सौंदर्य आदि को देखना या स्पर्श करना कितना खतरनाक सिद्ध हो सकता है ? इसलिये आगम में स्त्री तो क्या स्त्री के कपड़ो का स्पर्श भी वर्जित है।

मासक्षमण तपस्वी संभूति मुनि को चक्रवर्ती सपत्नीक वंदन करने आये। वंदन करने वक्त पटरानी को ध्यान न रहा और उनके बालका स्पर्श मुनिराज से हो गया। मात्र स्पर्श से मासक्षमण तपस्वी मुनि काम वासना लिप्त होकर नियाणा करते हैं कि अगले भव में मै स्त्री रत्न का भोगी बनुं।

साथी मुनि ने खूब समझाया पर न सुनी उन्होंने और अगले भव में ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती के रुप में जन्म लेकर अनेक पाप का सेवन कर सातवी नरक में उत्पन्न हुए। एक क्षण के स्पर्श के इतने भयंकर परिणाम।

प्राणी को उत्पन्न करनेवाला मार्ग या स्थान योनि होता है। इस योनितंत्र में स्वभाव से अनेक सूक्ष्म जीव पैदा होते है तो आंखे से देखे भी नही जा सकते - मैथुन क्रीडा में इस प्रकार के जीवों का नाश होता है।

योगशास्त्र में द्रष्टांत दिया है कि जिस प्रकार से रुई भरी हुई नली में अति गरम सली डाली जाये तो सब रुई जल कर भस्म हो जाती है, इस प्रकार से स्त्री की योनि में अनेक सूक्ष्म जंतु होते है, वे पुरुष के संसर्ग मे तीव्र संघर्ष में प्राय: मर जाते है। जिन आगमों में लिखा है कि दो लाख से लेकर नव लाख तक अत्यंत सूक्ष्म त्रस जीव वहाँ उत्पन्न होते है। वे प्राय: पुरुष के संसर्ग में मरते है, कोईक भाग्यवश नौ महिने बाद जन्म लेता है। इस तरह मैथुन सेवन में अति हिंसा है।

चौथे व्रत के भंग में अन्य व्रतो का उल्लंघन भी होता है।

वरं ज्वलदयस्तम्भ-परिरम्भो विधीयते।
न पुनर्नरकद्वार-रामाजघन-सेवनम्॥

आग से तपे हुए लोहे के स्तंभ से आलिंगन करना अच्छा है पर नरक के द्वार सम स्त्री का संग करना बूरा है। तीव्र कामी परस्त्री गामी नरक में जाता है। जहाँ लोहे के तपे हुए लाल खंबे से आलींगन कराया जाता है।

छेदन, भेदन, काटना आदि अनेक महा वेदना में से जीव को गुजरना पड़ता है। परमाधमीओं के हाथ से बचना अति मुश्किल होता है।

२५) परिग्रह पाप का फल

मम्मणसेठ के पास क्या कमी थी ? अखूट धन संपति दो सोने के हिरे, मोती, रत्नों से सजे हुए बैल की जोड़ी। जिसमें सिर्फ एक शींगडा बाकी था। उस पर रत्न नहीं जड़े थे। मगध को सम्राट श्रेणिक भी उसकी ऋद्धि देखकर दंग रह गया। इतना सब होते हुए भी मम्मण ने जिदंगी भर क्या खाया ? सिर्फ तेल और चने या चवले। अरर ! इतना अन्न होते हुए भी बेचारा खा नहीं सका, लक्ष्मी होते हुए भी उसको भोग न सका। मम्मणसिंह के जीवन में देखा जाय तो उनके जीवन में इच्छाएं ज्यादा है, लोभ का कोई अंत नही है।

आशा आकाश की तरह अनंत है। वस्तु मर्यादित है । संसार में ऐसा तो शक्य नहीं कि एक आदमी इच्छा करें और उसे जगतकी सर्व चिज मिल जाये। वस्तुओं की प्राप्ति पूर्व के पूण्योदय से होती है उसमें कोई शंका नहीं है। परंतु, इच्छा तृष्णा, मूर्च्छा आशक्ति मोहनीय कर्म के उदय से होती है। वस्तु की प्राप्ति और उसका भोग-उपभाग करना दोनो भिन्न है। वस्तु पूर्व के पूण्योदय से प्राप्त होती है। परंतु अंतराय कर्म के उदय से चीज होते हुए भी व्यक्ति दुःखी रहता है। उस चीज का भोग-उपभोग नहीं कर सकता। साधु महाराज को लड्डू वहोराने के पूण्य से मम्मण सेठ का ऋद्धि सिध्धि प्राप्त हुई, परंतु महाराज के पास से लड्डू वापस लेने के कारण भयंकर अंतराय कर्म बांधा। यह अंतराय कर्म के कारण वह सारी जिंदगी तेल और चने के अलावा कुछ भी खा नहीं सका। उसका पूण्योदय था पर साथ में पाप का भी तीव्र उदय था। लक्ष्मी थी परंतु मूर्च्छा-इच्छा उससे भी अधिक थी। ऐसी मूर्च्छा उसे सातवी नरक में ले गई। क्या फायदा हुआ ? क्या लाभ हुआ ? सुंदर किंमती दुर्लभ मनुष्य जन्म भी लक्ष्मी के पीछे सर्वथ हार गया। कुछ धर्मध्यान भी न कर सका । गति बिगडी, जन्म बिगडा, मृत्यू भी बिगडा और मिला क्या नरक गति।

बह्वारंभ परिग्रहत्वं च नारकस्यायुषः। (तत्वार्थ सूत्र)

अतिशय आरंभ और अत्यंत परिग्रह के संग्रह से नरकगति को आयुष्य बंध होता है। ऐसे प्रकार के बहुत आरंभ समारंभ कर महापरिग्रहधारी को नरकगति में जाना पड़ता है। शास्त्रो में तो यहाँ तक कहा है कि यदि चक्रवर्ति भी संसार छोडकर चारित्र का स्वीकार न करें तो उसे नरक में जाना पडता है। इसलिये कहा है कि चक्रेश्वरी सो नरकेश्वरी, राजेश्वरी सो नरकेश्वरी।

२६) तिलक शेठ

अचलपुर शहरमें तिलकसेठ किराणा का व्यापार करते थे, अगले साल अकाल होगा ऐसा ज्योतिष का वचन सही जानकर बहुत ज्यादा अनाज संग्रहित किया। गोडाऊन, घर, भूमिग्रह, सब जगह अनाज से भर दी। अपनी पूंजी से जितना अनाज खरीद सकते थे, उतना लेकर भर लिया। इसके पीछे एक ही विचारधारा काम कर रही थी कि अगले साल अकाल के समय में दोगुना-चारगुना कमाई कर लुंगा। परंतु भविष्य किसने देखा ? दुसरे साल जरुरत के मुताबिक वर्षा हुई। खेतो में फसले बहुत ही अच्छी हुई। सेठ कमाई कर लुंगा। परंतु भविष्य किसने देखा ? दुसरे साल जरुरत के मुताबिक वर्षा हुई । खेतो में फसले बहुत ही अच्छी हुई। सेठ के पास अनाज खरीदने को कोई नही आया। वर्षाऋतु के अंत में इतनी मुसलाधार वर्षा हुई की सेठ के गोडाऊन और भूमिगत संग्रहस्थानो में पानी भर गया। सब अनाज सड गया। सेठ को लाखो रुपयों का नुकसान हुआ, सेठ को भारी सदमा पहुँचा और आसक्ति के कारण वे मरकर नरक में गये।

२७) नंदराजा :

पाटलीपुत्र के राजा नंद अति लालची थे। उनको जीवन में एक महेच्छा उत्पन्न हुई कि त्रण खंड का अधिपति बनुं। उसने आनन फानन लोगों से कर लेना चालु कर दिया। वह अन्य और अनिति से पैसे इकट्ठे करने लगा। उसे पैसे पर अत्यंत मूर्छा थी। चारो तरफ से सोना इकट्ठा कर अपना खजाना भरने लगा। सोने की गिनी और रुपये का चलन। बंद कर चमडे के सिक्के बनाये। ऐसी परिस्थिति में तीव्र लोभी, महापरिग्रही सुवर्णाशक्त नंदराजा के देह में अति भयंकर पीडा आरंभ हुई। अनेक रोग के वे शिकार हुए। इतनी विशाल धनराशी होते हुए भी वे दीन और लाचार बनकर अशरण होकर मृत्यु की शरण में गये। हाय मेरा सोना...मेरे साथ नहीं आयेगा ऐसे दुःखी हुए। ऐसी निराधार परिस्थिति में वे मरे, कैसी दुर्दशा हुई। तीव्र परिग्रह के कारण नरक गति का आयुष्य बंध होता है।

२८) क्रोध का फल-सुभूम चक्रवर्ति और परशुराम :

क्रोध संताप कराता है। परिताप-संताप-पीड़ा-दुःख और आग की तरह जलाता है। चारों तरफ से जलाता है, दाह-ज्वर जैसी क्रोध की स्थिति है। क्रोध सब जीवों को उद्वेग कराता है। घर में क्रोध कोई एक व्यक्ति करता है परंतु उद्वेग सब को होता है। क्रोध सब को डराता है, वैर की परंपरा खडी करता है और सद्गति का नाश करता है। शास्त्रो में दो नाम ऐसे हे जिन्होंने अपने क्रोध के कारण धरती पर हाहाकार मचा दिया। एक सुभूम चक्रवर्ति और दुसरा परशुराम।

धारणी परशूरामे, क्रोधे निःक्षत्रि क्रोधे निःक्षत्रि कीधी। धरणी सुभूमराये क्रोधे निर्ब्रह्मी कीधी

परशुरामने अपने क्रोध से संपूर्ण धरती क्षत्रिय वगैर की अर्थात सभी क्षत्रियों को खत्म कर दिये। संपूर्ण क्षत्रिय जाती का विनाश कर धरती को पानी के बदले मानो खून से भर दी। वैसे ही सुभूम जैसे चक्रवर्ति ने संपूर्ण धरती ब्राह्मण रहित बनाई। समस्त ब्राह्मणों की कतल करवाई, उनको मौत के घाट उतारकर रुधिर की नदी बहा दी। ऐसे अधर्म मनुष्यने अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के निमित्त संपूर्ण जाति का विनाश किया। इतने क्रोध के कारण क्या उनकी सद्गति संभव हो सकती है ? ना कभी नही ! चक्रवर्ति होने से भी कुछ नहीं होता। वे मरकर सातवी नरक में गये। अब वहाँ ३३ सागरोपम जितने असंख्य वर्ष दीर्घ काल तक दुःख सहने के सिवा और कोई विकल्प शेष नहीं रहता। क्रोध के ऐसे करुण अंजाम देखकर आत्मा को क्रोध से मुँह मोड लेना चाहिए।

२९) अग्नि शर्मा तापस :

क्रोधो वैरस्य कारणम्। क्रोध को अगर शांत न किया जाय तो क्रोध वैर की परंपरा को आगे बढ़ाता है अग्निशर्मा तापस मासक्षमण के पारणे मास क्षमण करते थे। परंतु तीन वार वे संजोग वशात् पारणा न कर सके इसलिये उनको भयंकर गुस्सा आया, गुस्सा बढ़ता ही गया, क्षमा भाव जागृत न हुआ। गुणसेन के साथ द्वेष की गांठ ऐसी बाँध ली कि तप में संकल्प भी कर लिया की... जन्मोजन्म उसका नाश करनेवाला बनु। उनके तप का पुण्य धुल मे मिल गया। मानवजन्म ऐसे ही फोकट गया। बाद के भव में गुणसेन के आत्मा को बार बार मारकर कितनी ही बार वह नरक में गया।

कमठ अपने ही छोटे भाई मरुभूति पर पत्थर से शिर फोडा और संकल्प किया कि अगले जन्मों में भी उसे मारु। वैसा ही हुआ। दस दस भवों तक वैर की परंपरा चली और सभी भवो में कमठ मरुभूति के आत्मा को मारता ही गया। महापाप उपार्जन कर बारबार नर्क में गया।

विश्वभूति राजकूमार, जो भगवान महावीर के ही जीव है, १६ वे भव में, मासक्षमण की तपस्या करके विशाखानंदी पर क्रोध करते है, और संकल्प करते है - अगले जन्ममें भी तुझे में ही मारनेवाला बनुं। आखिर में ऐसा ही हुआ और १८ वे जन्ममें त्रिपुष्ट वासुदेव बनकर सिंह को मारा। कई कर्मो को बांधकर १९ वे जन्ममें सातवी नरकमें गये। क्रोध १ मिनिटका एक क्षणका और सजा कितने वर्षो की ? कितने जन्मों की ?

प्रसन्नचंद्र राजर्षि को क्रोध आया तो जरुर, पर एक ही क्षण में मनके विचार बदल गए-जिससे सांतवी नरकमें जाने से बच गए और कर्मो को भुगतकर केवलज्ञान तक पहोंच गए।

३०) लोभ का फल - कौणिक

प्राणी परिग्रह के पाप के भार से नारकीय पीडा सहन करने नरक जा पहुँचे। जिस तरह ज्यादा भार से छोटी नाव समुद्र में डुब जाती है। उसी तरह परिग्रह के भार से मनुष्य नरक में डुब जाता है।

लोभी देश परदेश सभी जगह घुमता रहता है तथा धन प्राप्ति की लालसा में शरीर सुख देता है। वह न तो धुप, गरमी न ठंड देखता है। सब दुःखो को सहन करता रहता है। यह वही लोभ है जिसके कारण पिता पुत्र झगडते है। अगर लोभ से धन प्राप्ति होती है तो राजा भी जंगलो में दिन गुजारने को तैयार हो जायेगा। भगवान ऋषभदेव के दोनो बडे पुत्र १२ वर्षो तक लड़ते रहे। भगवान के होते हुए भी दोनो भाई कितने लड़े, विचारकरो क्या कारण होगा। सिर्फ लोभ राज्य का राज्य लोभ भी बहुत भारी होता है। यहाँ तक की कोणिक जैसे पुत्र ने मगधके महान सम्राट श्रेणिक(बिंबीसार) को भी कारागृह में डाल दिया तथा पिता को बहुत दुःख दिया। कोणिक मृत्यु के पश्चात छट्ठी नरक में गया। छखंडो अधिकारी बनने के लालच में कालकुमार नरक मे गये। तथा आगम में निरयावलिका सुत्र में जिनके बारे मे लिखा गया है, कैसे नरक में गये, कैसी वेदना सही। इसलिये हे भाग्यशालीयो लोभ का त्याग करके संवर धर्म का पालन करो।

समरादित्य चरित्र में गुणसेन व अग्निशर्मा की जो भव परंपरा आगे बढती है उसके तीसरे जन्म मे शिखिकुमार ने आचार्यदेव श्री विजयसिंह सूरि महाराज से वैराग्य का

कारण पुछा। उन्होने अपने पूर्व जन्म की भव परंपरा का कारण बतलाते कहा कि लोभवृत्ति के कारण हमारे कितने जन्म हुए। कितनी लंबी वैर वृत्ति लोभ के कारण चली ये विचार करने जैसी बात है।

३१) गुणचंद्र और बालचंद्र

अमरपुर शहरमें अमरदेव सेठके दो पुत्र गुणचंद्र और बालचंद्र थे। व्यापार के लिए विदेश गया। खुब धन प्राप्त करके, बाकीकी चीजे बेचकर उन्हें हीरे, मोती रत्न सोनाचांदी आदि जेवरों में बदलकर स्वदेश लौट रहे थे। तभी उन्हे समाचार मिले की अमरपुर देश में युद्ध चल रहा है। चारों तरफ प्रजाजन भाग रहे थे। दोनो भाई भी नजदीक के विजयलक्ष्मी पर्वत पर चढ़ गए। आपसमें विचार विमर्श करके सारा धन एक सोने के कुंभ में भरके यहीं जमीनमें गाढ़ दिया। फिर वहाँ से चले गए। कुछ दिनों पश्चात युध्ध समाप्त हो गया।

दोनो के मन में लोभवृत्ति जागी गुणचंद्र ने सोचा कि ये सारा धन मैं ही ले जाऊँ, सब मुझे ही मिले। यह सोचकर बडे भाई ने छोटे बालचंद्र को जहर देकर मार डाला। लोभ की ताकात कितनी ? एक ही माता की दो संतान - एक ही खुन - फिर भी लोभ की पीछे पागल व्यक्ति, सगे भाई को मारने में झिझक महसुस नहीं करती। धन के बारे में वह सोचकर खुश होने लगा पर उसकी खुशी ज्यादा समय नहीं टिकती तीव्रता से किये हुए पाप का फल भी उसे शीघ्र मिला और अशुभ कर्म होने के कारण फल भी अशुभ प्राप्त हुआ। गुणचंद्र को सर्प ने पर्वत पर ही डँस लिया और वह जहर की तीव्र असर से तुरंत ही मर गया। इस तरह दोनों भाइयों ने पर्वत पर ही दम तोड़ दिया और धन वहीं रहा।

धन के पीछे दोनो भाइयों का मनुष्य जीवन निष्फल गया। गुणचंद्र मर कर नरकमें गया और बालचंद्र व्यंतर देव बना। अगले जन्म में बालचंद्र का जीव देवदत्त नामका सार्थवाह का पुत्र बना। गुणचंद्र का जीव सर्प बना और जहाँ धन छुपाया था, वहाँ रहने लगा। बालचंद्र का जीव सार्थवाह का पुत्र लक्ष्मीनिलय पर्वत पर दोस्तो के साथ गया वहाँ धन लेने को झुका और उसे गुणचंद्र का जीव सर्प ने डँस लिया और वह मर गया।

वहाँ वस्तुपाल-तेजपाल के द्रष्टाँत याद आते है। जब आत्मा की परिणती शुभ हो तो शुभफलकी प्राप्ति होती है। वस्तुपाल-तेजपाल जब धन छुपाने गये तब उन्हे और ज्यादा गाड़ा हुआ धन मिल गया। बालचंद्र के जीव को खुद का धन ही लेने में सर्पने डँस लिया। अध्यव्यवसाय मे यहाँ लोभ रहा है। देवदत्त के दोस्तो ने उस सर्प को पत्थर से मार डाला। सर्प वह पर्वत पर सिंह बना। बालचंद्र का जीव इन्द्रदेव नामका मनुष्य बना। वह शिकार करने वही लक्ष्मी निलय पर्वत पर गया। उसने सिंह देखकर तीर छोडा। सिंहने भी उस पर वार किया। इन्द्रदत मर गया और तीर के गाव से सिंह भी मौत की शरण मे पहुँच गया। दोनों मरकर युगल पुत्र के रुप में चांडल के घर जन्म लिया।

एक का नाम कालसेन और दुसरे का चंद्रसेन। एक बार दोनों डुक्कर को लेकर लक्ष्मीनिलय पहाड पर गये। वहां पर गत जन्म में उन्होने जहाँ धन छुपाकर रखा था वहीं पर उस भूंड को मार कर पकाने लगें। लकडी जली और वहाँ सोना के चरु के पास जा गिरी। सोना लेने के लिये कालसेन ने चंद्रसेन को मार डाला। दुसरे चंडालो ने चंद्रसेन को मार डाला।

दोनो भाई मरकर नरकमें नारकी के जीव बने। वहाँ भयंकर सजा भुगतने के बाद एक ने गृहस्थपुत्र के रुप में और दुसरा उसी घर में दासीपुत्र के रुप में जन्म लिया। उनके नाम समुद्रदत्त और मंगलक थे। दोनों मित्र बन गये। मंगलक विश्वासघाती था। समुद्रदत्त की शादी हुई, पत्नि को लेने वह मंगलक के साथ लक्ष्मीनिलय पर्वत आया। वहाँ दोनों वृक्ष के नीचे बैठे। धन का राग जागृत हुआ और मंगलक ने माया से समुद्रदत्त को पेटमें छुरी मारकर भाग गया, पर बह बच गया था उसने संसार की असार जानकर योग्य आचार्य के पास दीक्षा ग्रहण कर ली। मंगलक मरने के बाद छट्ठी नरक में गया। समुद्रदत्त उत्तम चारित्र निर्माण कर ग्रेवेयेक देवलोक में गया। मंगलक नरक में से आकर पशु बकरा बना। एक गोबाला उसे चरने के लिए वही पहाड पर ले गया। लोभवशात् वही जगह पर वह बैठ गया। गोबाल ने उसे बहुत मारा तो वह मर गया और वहाँ पर चुहा बनकर बील में रहने लगा। बील में से हीरे-पन्ने, मोती से खेलकर प्रसन्न रहता।

एक बार जो जुआरे आये, उन्होंने उसे मार डाला। फिर दासी के यहाँ पुत्र बना, चोरी की, फाँसी हुई। मरने के बाद वापस दुसरी नर्क में गया। बाद में यह पर्वत पर एक स्त्री के रुपमें जन्म हुआ। समुद्रदत्त का जीव देवलोक से नीकलकर उस स्त्री-श्रीदेवी के कुक्षी में जन्म लिया। पुत्र बडा हुआ शादी हुई। माता-पुत्र एक बार बहार गाँव जा रहे थे। रस्ते में लक्ष्मी निलय पर्वत आया। खजाने के पास ही दोनों खाना खा रहे थे। पुत्र ने थोडासा खोदकर धन निकाला। उसने सोने के चरु अपनी माता को बताया। सुषुप्त लोभदशा उसकी जागी। माता ने सब धन पाने की लालच में बेटे को जहर देकर मार डाला। पुत्र को किसी गारुडी मंत्र के जानने वाले तांत्रिक ने बचा लिया। उसने बाद मे ज्ञानी गुरु भगवंतके पास दिक्षा ली। आत्मकल्याण करके वह गैवयेक देवलोक में गया। माता, पुत्र हत्या के कारण पाँचवी नरक में गई। बाद में लोभ के वश नारीयल का वृक्ष बनी। पुत्र का जीव देवलोक से निकलकर श्रेष्टिपुत्र बना है। और मेरे पास खडा है। यह वही पर्वत है जहाँ तुमने धन छुपाया था। वृक्ष तेरी माता है जिससे तुझे ममत्व जागृत हुआ। इस तरह मैने मेरी पूर्व भव परंपरा आचार्य श्री के पास सुनी और उनके पास दीक्षा ली। वह मैं हूं दीक्षा के बाद मेरा नाम विजयसिंह आचार्य पड़ा। शिखि कुमार तुमने जो कुछ सुना वह मेरा जीवन चरित्र था जैसे मैने ज्ञानी गुरुभगवंत के पास से सुना वैसा ही कहा।

मात्र लोभ के कारण जीवों की कितनी भव परंपरा चलती है। देखा जाय तो सिर्फ लोभ नहीं पर माया, मान, क्रोध कोई भी कषाय आत्मा का अधःपतन कराता है। चौयाँशी के चक्कर से बचना हो तो संतोष धन पास में रखो संतोषी नर सदा सुखी।

३२) द्वेष करने से नुकसान :

चौथे जन्ममें मरुभूति का जीव किरणवेग नामक विद्याधर बना और कमठ का जीव नरक में नीकल कर फिर सर्प बना। इस तरफ किरणवेग ने दीक्षा ली। वे मुनि बने। एक बार वे जंगल में कायोत्सर्ग कर रहे थे। पूर्वजन्म के वैर के कारण यहाँ आकर उस सर्प ने डंख मारा। विष पुरे शरीर में फैल गया। फिर भी मुनि शुभ ध्यान में ही रहे और कालधर्म के बाद अच्युत नामके देवलोक में गये। सांप मारकर पाँचवी नरक में गया।

छट्टे भव में मरुभूति का जीव शुभकर नगर मे वज्रनाभ राजा बना। उसने राजपाट छोड़कर दीक्षा ली। एक बार उन्होने मासक्षमण तप किया। वे पारणा के लिये जंगल में प्रवेशे। वहाँ दुसरी तरफ कुरगंक नामक भील(कमठ का जीव) शिकार करने जंगल में जाने लगा। इस मुंडिया मुनि के दर्शन को अपशकुन समझ कर तीर फेंक कर उनकी हत्या कर ली। मुनि समता भाव रखकर कालधर्म प्राप्त हुए और ग्रैवेयक देवलोक में ललितांग देव बने। भील मरने के बाद सातवी महाभयंकर नरक में नारकी बना।

आठवे भव में मरुभूति(वज्रनाभ) का जीव्र कनकबाहु नामके चक्रवर्ति बने और छःखंड के चक्रवर्ति सम्राट बने। इतने सुख के होते हुए भी असार संसार छोड कर, राजपाट का वैभव त्याग उन्होंने दीक्षा ली थी। वे मुनि बने और जंगल में कार्योत्सर्ग करने लगे। पूर्व भव के वैर के कारण सर्प आया, उनको डँसा। पूरे शरीर में विष फैला फिर भी वे शुभ ध्यान में रहकर देवलोक में गये। सांप मरकर पांचवी नरक में गया।

३३) तीव्र द्वेष के पीछे पूर्व भव का वैर कारणभूत होता है। और ऐसे तीव्र द्वेष के पीछे संकल्प की संभावना है। संकल्प (नियाणु) करने में क्रोध, कारण बन सकता है। पिता-पुत्र श्रेणिक और कोणिक का पूर्व जन्म उपदेशमाला ग्रंथ में पू. धर्मदासजी गणि ने और उसकी टिका में पू. रत्नप्रभसूरिजी ने लिखा है जो इस प्रकार है।

सीमाडा नगर में सिंहराजा को सुमंगल नाम का युवराज पुत्र था। राजा के मंत्री को सेनक नाम का पुत्र था। सेनक बेचारा संयोगवश उंट के अंग टेडे मेडे जैसा था। इसलिये राजपुत्र हंमेशा सेनक की मजाक उडाता था। एक दिन तंग आकर सेनक घर छोडकर निकल गया। जंगल में जाकर वह तापस बन गया और तपस्या करने लगा। महिनों तक उपवासी रहने लगा।

एक दिन राजा बना हुआ सुमंगल आखेट करने जंगल में गया। वहाँ सेनक को देखकर पूर्वस्मृति से पहचाना। बातचीत करते उसकी उग्र तपस्या की जानकारी मिलते ही राजमहल में आने का आमंत्रण दिया। एक महिना बाद पारणा करने महल पहुँचा। उस दिन राजा को अति वेदना थी जिसके कारण महल बंद था और द्वारपालों ने उसे वहाँ

से भगा दिया। तापस ने दुबारा मासक्षमण किया। राजाने उसे वापस जाकर निमंत्रण दिया। वह तापस पारणा करने आया तब राजा के यहाँ पुत्र जन्म की खुशी मनाई जा रही थी इसलिये वह चुपचाप निकल गया। इस तरह जब उसने तीसरी बार मासक्षमण किया तो राजा ने आकर क्षमायाचना कर उसे बुलाया। तापस आया पर उस दिन राजदरबार में किसीका खून हो गया था इसलिये सख्त पहेरा था तो वह ऐसे ही चला गया। इस बार उसे अत्यंत क्रोध आ गया। क्रोध के आवेश में उसने दृढ संकल्प(नियाणा) किया कि उस राजा ने मुझे बहुत सताया है। अब अगले जन्म में उसका वध करनेवाला मैं ही बनूं, मेरे तप का अगर कोई श्रेष्ट फल मुझे मिलता हो तो मुझे यह ही चाहिये। वैर की परंपरा बढती गई। दोनों का आयुष्य पूर्ण हुआ। बिच में एक व्यंतरगति का जन्म पसार कर दोनों मनुष्यगति में आये। सुमंगल का जीव राजा श्रेणिक राजा बना और सेनक का जीव श्रेणिक का पुत्र कोणिक बना। गत जन्म के संकल्प अनुसार युवान होते ही उसने पिता श्रेणिक को जेल में डाला, उस पर चाबूक की मार भी पडवाई थी। एक जन्म के वैर द्वेष दुसरे जन्म में भी साथ आता ही है। वैरी पुत्र कोणिक मरने के बाद छठ्ठी नरक में और श्रेणिकराजा (नरक में) वहाँ से नीकलकर ८४ हजार साल बाद आनेवाली चौबीशी के प्रथम तीर्थंकर पदमनाभ स्वामी बनेंगे।

सबसे पहली बात यह है कि राग-द्वेष मिटाना है, इसके लिये हमें वितरागी का ही आश्रय लेना चाहिये। जो सर्वथा राग-द्वेष रहित है, जिन में राग-द्वेष लेश मात्र भी नहीं है उनका शरण ही स्वीकारना योग्य होगी। अगर रागी या द्वेषी देव-देवी, गुरु, साधु का शरण स्वीकारने में आये तो हम कभी वितरागी नहीं हो सकते क्योंकि जो खुद वितरागी नहीं है वे हमें वितरागी बनायेंगे ? इस लिये विरक्त वितरागी देव गुरु ही हमें राग-द्वेष के चक्रसे बाहर निकाल सकते है। उनका आलंबन होगा। झगडा प्रायः सगे संबंधीओ में होता है। पिता-पुत्र, माता-पुत्र, सासु-बहु, पति-पत्नि, भाई-भाई, काका-भतीजा, आदि भिन्न-भिन्न संबंधो में ही संघर्ष होता है। वैसे कभी कभी अपरिचितो के बीच में भी कुछ निमित्त मिलते ही झगडा बढ सकता है।

संबंधो के बीच बार बार संघर्ष का प्रमाण ज्यादा रहता है। पत्नि-पुत्र, सास-बहु के बीच में झगडा तो कभी कभी समुद्र की लहर की भांति अविरत रहता है। एक बार अगर झगडा शुरु हुआ तो फिर मनुष्य मर्यादा के सभी बंधन तोड देता है।

भावों में मलिनता आयी नहीं कि भाषा के शब्द प्रयोग बदल जाते है। शिष्ट भाषा का स्थान अश्लिल भाषा ले लेता है। क्लिष्ट भाषा इस्तेमाल करने में झगडा पर उतारु व्यक्ति तनिक भी संकोच नहीं करता। गाली, गलोच, निम्न स्तर की भाषा ये सब कलह को हवा देते हैं।

जब पति-पत्नि दोनों झगडते हो तब एक-दुसरे पर दोषारोपण करने के लिये कैसी भाषा प्रयोग में लाते है। भाषा में आक्रोश, व्यंग, कषाय की तीव्र मात्रा किती ? ये सब अशुभ गति में ले जानेवाली क्रियाएँ है।

दुर्गति में जाने के लिये अशुभ पाप कर्म ही जबाबदार है। कलहशील-झगडालू मनुष्य क्लिष्ट भाषा के प्रयोग द्वारा पुण्य उपार्जन करेगा यह तो संभव है ही नहीं। कुछ नहीं तो ऐसी गई गुजरी भाषा से उसका अध्यवसाय बिगडेगा। उसमें बुरे बिचारों की तीव्रता दुर्गति बंध करा देती है। हम पिताजी के मृत्यू पश्चात स्वर्गवासी या सद्गति लिखकर प्रकाशित कराते है परंतु सब की गति तो अपने कर्मानुसार ही होती है।

कलह के तीन मुख्य कारण है जर, जमीन और जोरु। जर अर्थात जवेरात। गुजरातीमें एक कहावत है - जर,जमीन ने जोरु ते त्रण कजियाना छोरु।

नरकगतिमें नारकी जीवों की भी ऐसी ही दशा या फिर इससे भी बूरी दशा रहती है। नारकियों की लेश्याएं अशुभ होती है। कषाय की मात्रा ज्यादा होती है। अध्यवसाय भी अशुभ होता है। वे सब नपुंसक भी होते हैं। इन सब कारणों की वजह से वहाँ लडना-झगडना जन्मजात स्वभाव की भांति रहता है। चारों तरफ वहाँ अंधकार रहता है इसलिये वे लोग एक-दुसरे से टकराते रहते है और झगड़ते रहते है।

पाप कर्म की प्रवृत्ति थोडे समय के लिये होती है। परंतु उसकी सजा की अवधी लंबे समय तक होती है। एक मिनीट में किये हुए पाप की सजा नरक में हजारों लाखों वरसो तक भूगतनी पडती है। यहाँ पर कोई गुनेगार को

चोरी करने में १ से २ कलाक लग सकता है, पर अगर वह पकडा गया तो १०-२० वर्ष की जेल या उमर कैद की सजा भी हो सकती है। कोई कोई देश में बलात्कारी को उम्रकेद भी होती है।

३४) किये हुए पापों की सजा।

१) १८ वा त्रिपुष्ट वासुदेव के भव में शय्यापालक के कान में गरम गरम शीशा डालकर जो पाप किया उसका फल प्रभु २७ के भव में भुगतना पड़ा। सिंह को मारा था उसके परिणाम स्वरुप सातवी नारक में गया।

२) सूभूम चक्रवर्ति अति लोभ के कारण मर कर सातवी नरक में गया।

३) कोणिक राजा अपने पिता सम्राट श्रेणिक को जेल में बंद कर के उनको चाबूक मरवाकर, पिता को मारने का भयंकर पाप और दुसरे भी पापों के परिणामरुप (६) नरक में गये।

४) ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति ने कई ब्राह्मणों की आँखे फुडवाई। सारी पृथ्वी को निर्ब्रह्म करने की हिंसा का पाप किया जिसके फल स्वरुप उसे ७ वी नरक में जाना पड़ा।

५) कमठ ने प्रथम भव में सगे भाई से वेर किया उसे मार डाला और भविष्य में भी मारेगा एसी संकल्प वृत्ति से मुनि हत्या का पाप कर नरक में गया।

३६) अग्निशर्मा और गुणसेन के समारादित्य चरित्र में क्या हुआ ? अग्निशर्मा ने गुणसेन को हर एक भव में मारने का संकल्प किया था। उसके फलस्वरुप वह मारता ही रहा, वह मनुष्य हत्या और मुनि हत्या के पापों की सजा सहन करते करते एक से बढ़कर एक कडक शिक्षा सहन करता है। जब पाप करते समय कोई दया-शरम न आती है, तो फिर पापों की सजा देने में परमाधमीओं को कैसे दया आ सकती है ? हाँ उनको कर्मबंध जरुर होता है जिसकी सजा वे बाद में काटेंगे। इस तरह जब जीव हजार प्रकार के पाप कर के जीव जब नरक गति में जाता है वहाँ भी वह हजारों प्रकारकी तीव्र वेदना सहता है। वहाँ परमाधमी के जीव पकडने से या माफी माँगने से कुछ फर्क नहीं पडनेवाला इससे तो अच्छा है यहाँ पाप न किया जाय। पाप नहिं करेगे तो नरक में जाने का प्रश्न ही उपस्थिति नहीं होगा। यदि कभी जाना अनजाने में पाप हो गया तो पाप का प्रायश्चित ले लेना चाहिये। धर्म आराधना, जप, तप आदि द्वारा और पाप का प्रायश्चित द्वारा पाप कम हो सकते है। पर अगर ये कुछ भी नहीं किया तो नरक में जाने के सिवा कोई विकल्प नहीं रहेगा।

यहाँ पृथ्वी पर पापों का क्षय प्रायश्चित द्वारा हो सकता है। जब मनुष्य जन्म, आर्यक्षेत्र, आर्य कूल, वितराग को धर्म और देवगुरु मिले हो तब धर्म आराधना के द्वारा पापों का नाश कर लेना चाहिये। नरक में पापों का क्षय करने के लिये एक भी साधन नहीं मिलता अतः यहाँ पर देव, गुरु और धर्म की सहायता लेकर पापों का क्षय अवश्य करें नरक में पाप कर्म की सजा भुगतने से ही प्राधान्यता है। सजा से डरे बिना समतापूर्वक सहन करना ही अकलमंदी है। अति उत्तम मार्ग तो यह है कि पाप न करने की प्रतिज्ञा लेना।

जीवन साधना में साधक और मुमुक्षु आत्माओं का मुख्य दो लक्ष होना चाहिये-

१) भूतकाल में जो पाप किये गये उसकी कर्म निर्जरा करना अर्थात पाप कर्म का नाश करना।

२) जीवन में कभी नये पाप न करने का संकल्प। इन दो ध्येयों को जीवन में अपनाने से सर्व आराधना समाहित हो जाती है। प्रथम लक्ष्य निर्जरा धर्म है। दुसरा लक्ष्य संवर है। जैन शासन में महामंत्र नवकारने साधक को सर्व पापों को क्षय करने का ध्येय दर्शाया है - सव्व पावप्पणासणो।

३५) वाणिज्य गाँव में एक कामी पुरुष रहता था। उसका नाम उज्झितक कुमार था। यह काम ध्वजा. वेश्या मे आशक्त रहता था। वह वेश्यागमन का पाप में २५ वर्ष तक रहा। श्री गौतमस्वामी उस गाँव में पधारे थे उन्होंने उसे वध स्तंभ पर लटकते हुए देखा।

राजा के सैनिक हजारों लोगों की भीड़ में उसके नाक, कान, मांस आदि तीक्ष्ण भाला से काट रहे थे। महावेदना में जीवन के अनमोल २५ वर्ष पुरे करके वह प्रथम नरक में गया। मृगापुत्र की करह वह भी सातों नरक में ८४ लाख जीवायोनि में भटकेगा। यह मैथुन पाप की सजा थी।

३७) शकट कुमार नामका महाचोर गत जन्म में

कषाई था। वहाँ से मरकर नरक में गया। अब यहाँ चोर बना है। साहंजणी नगरी की वेश्या सुदर्शना में आशक्त है। वेश्या को राजा ने महल में रखा। वह चोर वहाँ भी पहुँच गया राजा ने उसे फाँसी दी। गरम पुतलियों से आलिंगन कराया। वह प्रथम नरक में गया। आगे सात नरक तक भटकेगा।

३८) कौशाम्बी नगर में बृहस्पतिदत्त नामका पुरोहित था जो पौरोहित्य कर्म करता था। वह राजा और प्रजा का पशुयज्ञ आदि का कार्य करता था। वह राजमहल में अंत:पुर की रानीओं के पास भी बगैर रोकटोक के जाने लगा। उसने शतानिक राजा के पुत्र उदायन की पट्टरानी पद्मावती के साथ व्यभिचार किया। राजा ने बृहस्पतिदत्त को फाँसी दी।

शरीर के टुकटे कर दिये गये। भयंकर वेदनाएँ ६४ वर्ष तक सहने के बाद वह प्रथम नरक में गया। गत जन्म में उसने नरबली यज्ञ भी करवाये थे जिंदा पुरुषों के कलेजे काल निकालने वाला पाप संस्कारो से युक्त वह सातों नरक में भटकेगा। यह प्राणातिपात हिंसा की सजा है।

३९) मथुरा में श्रीदाम राजा का पुत्र नंदिसेन था। वह अपने पिता का वैरी बना था। उसने एक चित्र नाम के हजाम को विश्वास में लिया। उसने हजाम को आधा राज्य देने का लोभ दिया। बात अंत तक छुपी न रह सकी सब को मालुम पड़ गई। राजाने पुत्र को उत्पीदन किया - गरम पानी में डाला, तपे हुए लोहे पर बैठाया, गरम पानी से अभिषेक करवाया। नंदिसेन मरकर पहली नरक में गया। वहाँ से वह सातों नरक में घोर यातना सह कर असंख्य भव संसार में भटकेगा।

४०) विजयपुर नगर में कनकरथ राजा के यहाँ धनवंतरी नाम का वैध था। वह आयुर्वेद का जानकार था। अष्टांग विद्या का भी उसे अच्छा ज्ञान था। वह वैध राजा, रानी और अन्य सब की चिकित्सा कराता था। दवा में वह कछुआ का मांस, जलचर, भेड-बकरी, भूंड हिरण, खरगोश, भैंस आदि का मांस भक्षण करने को कहता था। वह खुद भी दवा के लिये ताजा मांस भी लाकर देता था। उसने बाद में वैदक के नाम पर लोगों को मदिरा पिलाना भी चालू किया। उसका आयुष्य ३२०० वर्ष का था। वह मरकर छठी नरक में गया। वहाँ से निकलकर वह पाडलखंड नगर में सागरदत्त का पुत्र उंबरदत्त बना। माता के पेट से ही उसे मांस खाने को मन करता था। बडे होकर उसे मांस-मदीरा खाने की वजह से १६ प्रकार के विभिन्न रोग उत्पन्न हुए। रक्तपित्त और कुष्ट रोग भी हुआ। घाव में कीडे गये। ऐसे महाव्याधि की वेदना भुगत कर वह प्रथम नरक में गया आगे भी वह सातों नरक में भटक कर असंख्य जन्म तक पाप की सजा झेलेगा।

पाप कर के जीव अधोलोक नरक में जातें है। जो खुद अपनी इच्छा से नरक में जाते है उनको भला कौन कैसे बचा सकता है ?

४१) शशी और सूर की कथा।

भरतक्षेत्र की शुक्तिमति नगरी में शशीराजा राज्य करता है। वह महा प्रतापी है। उसके छोटे भाई का नाम सूर है। वे दोनों भाई एक दिन जंगल में घूमने गये। वन में उन्होंने एक घटादार वृक्ष की छाँव में एक साधु को देखा। दोनों भाई घोडे पर से उतरे और साधु की वंदना की। साधुने भी उन्हे धर्मलाभ प्रदान कर उपदेश दिया।

॥ गाथा ॥ माणुस्स खित जाइ,
कुल रुवारोग आउयं बुद्धि ॥
सव्वाणुग्गह सिध्दा, संजय लोगंमि दुल्लहो लहियं ॥१॥

चिक्कणधडेण साचिय, ढलीउणं पाणियं जाइ ॥
कोरं कुंभं च भेदइ, तहावि भव्वजीवाणं ॥१॥

आप सत्पुरुष है, धर्म करने में प्रमाद नहीं करो। उपदेश सुनकर सूर राजा दीक्षा लेकर अति दुष्कर तप करने तैयार हो गये । भाई शशी पर हेत होने के कारण उन्होंने उसे समझाया, हे बांधव, इस जीव ने अनेक जन्मों में भोग भोगे है। समुद्र जितना पानी पिया, मेरु जितने धान्य आरोगे तो भी तृप्ति न हुई। तब शशी ने कहा, हे भाई, ऐसा शायद ही कोई मूर्ख होगा जो राज्यभोग, ललित लोचना स्त्री, पान, फूल, इत्यादि सुख सबंधी साधनो को त्याग परलोकके लिये व्रत उपवास आदि कष्ट सहन करते हो लेकिन परलोक है या नहीं किसे मालूम ? किसने देखा ? आप समझदार हो तो जीव को आनंद-प्रमोद में लगाओ। यौवन बार बार नहीं आता। भाई के ऐसे वचन सुनकर सूर गुस्से हो गया। उसने सब कुछ त्याग कर चारित्र अंगिकार किया।

अंत अवस्था में अनशन कर स्वर्ग गया। शशी विषययुक्त होकर नरक में गया। सूरराजा ने देवलोक से अवधिज्ञान के बल से अपने भाई को नरक की यातना सहते हुए देखा। वह नरक में पहुँचकर अपने भाई के पास प्रत्यक्ष हुआ। शशी उसे देखकर खुश हो गया और बोलने लगा कि जाकर मेरे देह की रक्षा कर में अभी नरक से नीकलकर आउंगा और फिर सुख से रहुँगा। सूर ने उपदेश दिया कि, जीव के बगैर देह रह नहीं सकता। इससे तो अच्छा है पाप नहीं करता तो नरक में जाने की बारी आतीं नहीं। अब शांत भाव से वेदना सह कर कर्म खतम कर, पश्चाताप कर जिससे अगले जन्म मे सुखी हो सके। इतना कहकर सूर वापस देवलोक में गया। इस तरह अगर कोई भी शशी की तरह धर्म न करे तो फिर पछताने की बारी आयेगी। इसलिये सर्व जनों को धर्म कार्य करने चाहिये। शशीप्रभ राजा मरने के बाद तीसरी नरक में गये थे और सूरप्रभ राजा आयुष्य पूर्ण कर पाँचवे देवलोक में गये थे। परमेश्वर की वाणी सुनने से जीव कष्ट, भूख, तृषा का अनुभव नहीं करता।

४२) एक गांव में कोई वणिक रहता था। उसके घर में एक वृद्धा चाकर थी। एक दिन की बात है - वह लकडी लेने वन में गई, वहाँ भूख और प्यास से बेहाल हो गई। वह थोडी लकडी लेकर के घर आ गई। सेठने कम लकडी देखकर उसे वापस लकडी लेने भेजा। दोपहर का समय था। गर्मी के दिन थे। गरम हवा चल रही थी। धूप और ताप सहन करती हुई वह आगे घर की तरफ बढ रही थी। इतने में उसके हाथ से एक काष्ट नीचे गिर गया। वह उठाने के लिये नीचे झुकी। वहाँ उसे प्रभु वीर की मधुर ममता मयी वाळी सुनाई दी। वह वृध्धा वहाँ पर खड़ी होकर सुनने लगी। धर्म देशना सुनने लगी। धर्म देशना सुनते हुए उसकी भूख, प्यास सब मीट गई। हर्षित होकर वह घर आई। सेठजी ने देर से आने का कारण पूछा। वृध्धाने सच सच बता दिया। सेठजी ने भी श्री वीर के वचन सुने। उस वृद्धा के धार्मिक गुणों की उन्होंने तारीफ की और उसका बहुमान किया। परमेश्वर की वाणी से वह दु:ख के बंधन से छूट गई।

॥ दोहा ॥

जिनवर वाणी जो सुने नरनारी सुविहाण॥
सूक्ष्मबादर जीवनी, रक्षा कर सुजाण॥ १ ॥

श्री वीर भगवान कहते है कि है गौतम, तेरा प्रश्न यह है कि - वे सर्व जीव अपने अपने कर्मो को वश है। कर्म का स्वरुप जो मै कहता हूँ, वह सूनो। ऐसा कहते हुए भगवान पूर्वोवत उडतालीश प्रश्नो के उत्तर देते है।

प्रथम पृच्छा का उत्तर

जो धायइ सत्ताइं, अलियं जंपेइ परधणं हरइ॥
परदारं चियवंचइ, बहुपाव परिग्गहासत्तो॥१५॥
चंडो माणो धिरो, मायावी निरुरो खरो पावो॥
पिसुणो संगहसीलो, साहूणं निंदओ अहमो॥१६॥
आलप्पाल पसंगी, दुरो बुध्दिइ जो कयग्घो य॥
बहुदुरक सोग पउरे, मरिउ नरयम्मि सो जाइ॥१७॥

४३) सूभूम चक्रवर्ति

सुभूमने तलधर के बाहार की दुनिया देखी न थी। इसलिये उसने अपनी माता से प्रश्न किया, हे माता, क्या पृथ्वी इतनी ही है ? माता ने उत्तर दिया ना वत्स ! पृथ्वी तो अति विशाल है। परंतु तेरे पिता को परशुराम ने मार डाला और उनका राज्य लूट लिया, तब से डर कर हम तलधर में रहते है।

यह बात सुनते ही सुभूम का क्षत्रिय खून उबलने लगा। माँ से आशीर्वाद पाकर वह मेघनाद विद्याधर के साथ हस्तिनापुर गया। वहाँ प्रथम तो वह दानशाला में गया। वहाँ उसने सिंहासन के पास रखे हुए थाल की तरफ देखा। उसकी पैनी निगाह पड़ते ही थाल में रखी हुई सब दाढ़ पीधलकर खीर बन गई। वह खीर सुभूम पी गया। यह समाचार परशुराम ने सुने, वह तुरंत ही अपने शत्रु को मारने अपना परशु लेकर दौड आया। सुभूम ने उसी वक्त खाली थाली को घूमाते हुए उस पर वार किया। वह थाली देवोंसे अधिष्ठित (अभिमंत्रित) चक्र बन गई। परशुराम उससे वींध कर मौत के शरण में गया। देवो ने सुभूम पर पुष्यवृष्टि की।

पूर्व के वैर से सुभूम ने इक्कीस बार पृथ्वी का ब्राह्मण के वगैर की बनाई। वह छ: खंड का चक्रवर्ति बना। परंतु उससे उसे संतोष नहिं हुआ। उसे घातकी खंड में आये हुए छ: खंडो को जीतने की लालसा जागी। इस समय देवताओं ने उसे समझाया, हे सुभूम ! तुं जरुररत से ज्यादा इच्छा कर रहा है, यह गलत है, इसके परिणाम तुम्हारे लाभ में न रहेंगे। आज

तक जितने भी चक्रवर्ति हुए सब ने मात्र भरतक्षेत्र के छः खंड को जीते थे। अनंतकाल में अनंत चक्रि बने और बनेंगे। सब भरतखंड ही जीते है, घातकी खंड जीतने की इच्छा कोई भी नहीं करता, इसलिये तूं भी यह इच्छा छोड दे।

सुभूम ने देवताओं की बात को टाल दिया और अपनी सेना लेकर लवण समुद्र के किनारे गया। उसने चर्मरत्नको हाथ के स्पर्श से विस्तार किया। उसपर पुरी सेना को बैठाकर समुद्र पार करने लगा।

इस समय सब देवतागण सोचने लगे कि, चक्रवर्ति के बहुत से देव सेवक है मैं और मेरी शक्ति क्या काम आयेंगी। ऐसा सोचकर कोई देव उसे सहाय करने नहीं गया। समुद्र के मझधार में वह सेना सहित मर गया। वह नरक में गया। इसलिये लोभ से सदा दूर रहना चाहिये।

४४) सातवी नरक ५ क्रोड, ६८ लाख, ९९ हजार ५८४ रोग सातवीं नरक में इतने सब रोग हेाते है। वहाँ दुखों की चरमसीमा होती है। सामान्य रोग भी हम सह नहीं सकते, उसे दूर करने के उपाय सदैव खोजते रहते है। वहाँ लाखों रोग सहते है। कोई डोकटर, वैद्य या माता-पिता, भाई-बहन कोई स्वजन भी नहीं होता है। इसलिये न रोगों का इलाज संभव है, न आश्वासन के दो शब्द किसीसे सुनने मिलते है। वहाँ जीव की उत्पति से आयुष्य समाप्ति तक, कम से कम १० हजार वर्ष पर्यंत ५ करोड से भी ज्यादा भयानक दर्दो को एकसाथ नारकी के जीवों को सहना पड़ता है।

४५) कंदमूळ भक्षण नरक का अंतीम द्वार

जमीन कंद में एक शरीर में अनंत जीव रहते है। थोडे से स्वाद की खातर अनंत जीवों का संहार। क्या आलू प्याज के बीना जीवन शक्य नहीं ? हाँ भोजन और जल के बीन जीव मर सकता है। जीभ के लिये नहीं पर जिनाज्ञा पालन तो मनुष्य भव में ही कर सकते हैं, कुत्ते, बिल्ली तिर्यंच में जन्म होगा तो त्याग और धर्म संभव न होगा। अनंत जीवों को अभयदान देना हो तेा लसन, आलु, गाजर, मूला आदि को जीवन में से विदाय कर लो। प्रभु ने हमें बत्तीसी अनंत काय को चबाने के लिये नहीं दी है। अनंत जीवों का नाश करेंगे। तो अगले भव में जीभ भी मीलनी मुश्किल होगी।

अनंत जगत मे।

जमीन कंद में इतने जीवों का भक्षण होता हो फिर भी भगवंत के वचन पर अश्रध्धा रखकर बहुत से नास्तिक भोगविलास में मस्त रहते है। नरक कहाँ है ? ८ वी नरक तो है ही नही ऐसे कुतर्क कर के नरक में जाते हैं। दुःखदायी नरको में चौबीसों घंटे सतत दुःख, भयंकर वेदनाओ गर्मी-ठंड-भूख-तृषा सहना पडता है। २४ घंटे फ्रीज का ठंडा पानी पीनेवाला किस प्रकार से गर्म शीशे का रस पीयेगा ? अति पापी, महा हिंसक, वैरभाव, मांस भक्षण दारु, परस्त्री सेवन, आरंभ परिग्रह आदि कर्मदान के व्यापार, पंचेन्द्रिय जीवों का वध जैसे घोर पाप करने के बाद वहाँ नरक में जीव उत्पन्न होता है।

नरक के विषय में शंका :

हर एक तीर्थंकर केवलज्ञान प्राप्ति के बाद तीर्थ स्थापन करते हैं और उपदेश-देशना देते है।

।। गणधर अगर परस्पर संशय पूछते तो शंका निवारण होती थी। गणधरवाद में ८ वें गणधर श्री अकंपित अपने आगे के विद्वान पंडीत को प्रभु के पास वाद कर के निःशंक, निरुत्तर होकर दिक्षीत हुए जान कर चल गये। अकंपित अपने ३०० शिष्यों के साथ मीठा आवकार के साथ अकंपित आगे बढा, जिसने मेरा नाम और गौत्र के साथ बुलाया - गौतम गौत्रिय अकंपित सुख से पधारो। सुंदर मीठा आवकार के साथ अकंपित आगे बढा, जिसने मेरा नाम और गोत्र कहा है वह मेरे मन की शंका भी बता सकता है।

अंकपित तो अभी मन में सोच रहा है, इतने में भगवान ने कहा ''नेरइया अत्थि-तप्पिति संसओ तुज्झ'' हे अकंपित, जगत में नारकी जीव है क्या ? ऐसे प्रश्न-संशय तुम्हारे मन में हैं, वे सशंय भी तुझे वेद के पदों का अर्थ बराबर न करने से हुआ है। अब तुझे मैं वेद के पद कहता हूँ।

वै एष जायतेय शुद्रान्न मश्नत्ति अर्थात जो ब्राह्मण होकर शुद्र के हाथ का अन्न खाता है वह नारकी बनता है। नरक में जाता है।

दुसरा वेद वाक्य इस प्रकार है।

नहीं वै प्रेत्य नारकाः सन्ति। अर्थात जीव मरने के बाद नारक नहीं होता। प्रथम वेद वाक्य नरक के अस्तित्व को

सिध्ध करता है। दुसरा वाक्य नरक को सिध्ध करता है । ये दोनों परस्पर विरुध्ध अर्थवाले वाक्योंसे तुम द्विधा में थे।

हे अकंपित नरकगति व नारकी जीवों नहीं है। अगर नारकी हो तो दिखने में क्यों नहि आते ? अब तक मुझे वे दिखे क्यों नहि ? तेरी सोच और मान्यता सही नहीं है। वेद वाक्यो से तुझे शंका इसलिये है कि तुमने उसका पूर्व बताये हुए सबंध के साथ अर्थघटन नहीं किया। पृथ्वी पर मेरु पर्वत आदि शाश्वत है, नित्य है। वैसे नरक में नारकी गण शाश्वता नहीं है। हर हंमेश रहनेवाले नहीं है। जो जीव उत्कृष्ट पाप करता है वह मरकर अगले जन्म में नारकी बनता है। नारकी मर कर वापस नारकी नहीं बनते - नरक में जन्म नहीं लेते ऐसा उसका अर्थ है। इस तरह से वेद का अर्थ है कि जीव को पाप नहीं करना चाहिये जिससे अगले भव में नारकी बनना पडे।

४६) नारक सिध्धि

मैने देखा है जाना है, वैसा ही वर्णन तेरे आगे कर रहा हूँ उसमें शंका मत रखो। हे कृपालू परमात्मा ! नारकी जीव है तो फिर यहाँ क्यों नहीं आते। प्रश्न २ - राजा प्रदेशी ने केशी गणधर को प्रश्न पूछा था कि मेरे दादा महा नास्तिक थे अति पाप करते थे, अगर आपके कथन अनुसार ज्यादा पाप करनेवाले नरक में आते है, मैंने दादाजी से कहा था अगर आप नरकमें जाओ तो हमें यहाँ कहने आना कि वहाँ कैसा दुख है ? पाप की कैसी सजा भुगतनी पडती है ? मेरे दादा को गुजर गये बरसों हो गये फिर भी अभी तक वे आये नहीं। नरक जैसी कोई गति होती तो मेरे दादा अवश्य हमे बताने को आते-वे आये नही इसलिये मै नरक नहीं है ऐसा मानता हूँ। केशी गणधर कहते है कि है प्रदेशी, मानलो के व्यक्ति घर से कह के निकला है कि मैं वापस थोड़ी देर में आता हूँ और उसके जाने के पश्चात तुम्हारी अत्यंत मानीती रानी किसी कार्य वश बाहर निकली हो ऐसा एकांत निर्जन स्थान देखकर वह कामवश होकर तेरी रानी पर बलत्कार करता है, उसका शील लुटता है तथा रानी की चित्कार सुननेवाला कोई भी नही हो तथा रानी मारने के लिये उसके शरीर पर हमला करता हो तभी अचानक सैनिक आ जाते है व उस दुष्ट व्यक्ति को पकड़ कर तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत करते है यह सब देख कर तुम लाल पिले हो जाते हो तथा उस दुष्ट अपराधी को फांसी की सजा सुनाते ही तथा वह दुष्ट तड़फता हो या त्रासदी अनुभव करता हो उस वक्त क्या वह घर जा सकेगा ? उसके मन मे बहुत इच्छा होती है कि घर जाकर अपने पत्नी व संतानो को मिलने की ऐसी बहुत इच्छाएं होती है तथा वह तुम्हारे सामने गिड़गीड़ाये भी सही कि मुझे छोड़ दो मै कल वापस आ जाऊंगा। तो है राजन क्या तुम उसे छोड़ दोगे ? (हरगीस) ही नहीं। तो नरक में ऐसाही है वह पृथ्वी के निचे अधोलोक मे ही है। वहाँ जो जीव तीव्र पाप के कारण नरक में गये हैं वे महाभयंकर दु:ख झेल रहे होते है। परमाधमी को दु:ख देने में आनंद आता है, वे क्यों किसी को छोड़ देंगे। असह्य वेदना सहन करते हुए वे परमाधमी के आधीन होते है। तो फिर हे प्रदेशी, तुम्हारे दादा खुद यहाँ कैसे कुछ कहने को आ सकते भला ? इस तरह तर्क और युक्ति पूर्ण उत्तर से वह सच्चाई समझने में कामयाब हुआ। नारकी जीव यहाँ नहीं आ सकते ? जीव यहाँ पाप की प्रवृत्ति निरंतर करता है। कहीं तो उसे पापकी सजा मिलेगी। जैसे कि एक मनुष्य सो बार चोरी करता है। मुश्किल से वह एक-दो बार पकडाता है। दो-चार साल जेल में सजा काटकर आता है। पर जो ९८-९९ बार की चोरी में न पकडाया वह पाप से छूट नहीं सकता। पोलिस के सिकंजे से तो वह छूट सकता है, पर पाप करने के बाद परमाधमी से बचना अति मुश्किल है, कोई चांस नहीं। आदमी मृत्यु के समय खाना-पीना भूल सकता है पर किये हुए पाप कभी नहीं भूल सकता।

बाकी - है अकंपित पाप दो प्रकार के होते है कुछ सामान्य और कुछ उत्कृष्ट कक्षा के। यहाँ जीव जो वेदना सहता है वे सामान्य है। मनुष्य और तिर्यँच (पशु-पक्षी) भूख-प्यास छेदन-भेदन, मरण आदि वेदना सहते हैं उन्हे नारकी नहीं कह सकते क्योंकि उसमें थोडा सुख का अंश है। नरक में उत्कृष्ट दु:ख होता है। यहाँ का सुख भी सामान्य है। दु:ख मिश्रित सुख है। क्षणिक सुख है, सुख का आभास मात्र है। उत्कृष्ट सुख भोगने की गति स्वर्ग गति है। अगर नरक गति न माने तो मनुष्य गति में सब पापों का उदय आता है जो गलत है। १०० साल में किये हुए पापों की सजा यहाँ लोक में सहे तो आयुष्य पूर्ण हो जाता है पर लाखों पाप रह जाते है। हजारों हत्याएं लूट फाट, चोरी की सजा ज्यादा से ज्यादा फांसी होगी, तब बाकी साल का आयुष्य नहीं चलता। आयुष्य पूर्ण हो गया और पापकी सजा बाकी रह

गई तो ? दुबारा नरक गति आना पडेगा, इसलिये यहाँ आयुष्य ज्यादा है । यहाँ कीये गये पापाचार की सजा यहाँ भूगत पाना मुश्किल है। तीव्र कषाय, तीव्र राग, जो कृष्ण लेश्या में परिवर्तित हुआ हो ऐसे कर्मो की स्थिति बंध दीर्घ होती है। २०-३०-७० कोडा कोडी सागरोपम की है। उसके अबाधित काल प्रमाण २ हजार, ३ हजार, ७ हजार वर्ष है। यहाँ के आयुष्य के १०० साल की सजा भुगतने नरक में जाना पडता है। मनुष्य और तिर्यंच के दुःख तो मर्यादित है। हे, अकंपित सिंह और शेर को पिंजरे में भी खाना मिलता है, मनुष्य को भी जेल में खाना मिलता है। परंतु नरक में इतना सुख भी नसीब नहीं होता। वहाँ खाने के लिये भी खुद के शरीर के हिस्से से माँस के टुकडे काटकर ही खिलाते है। कैसी भयंकर सजा। मान लो कि यहाँ फांसी की सजा, जेल की सजा जैसा कुछ न हो तो गुनाह कम ज्यादा हो सकता है। लूट, बलात्कार, खून आतंकवाद आदि बढ जाय पर इन सब का परिणाम नरक है ये सोचकर कुछ जीव पाप करने से रुकते जरुर है।

नरक भूमि क्षेत्र किसने बनाये ? ईश्वर ने इन सबको नहीं बनाये। वह तो अति दयालू और करुणा का अवतार है। उसका हृदय तो क्रूर नहिं है। अनादि काल से चौद राजलोक में शास्वत नरकभूमि है । परमाधमी की वेदनाएँ है। कोम्प्युटर सीस्टम है। स्वयंसंचालित है, कही कोई गडबड नहीं।

प्रत्यक्ष नहीं दिखा रहा है, इसलिये नारक का अभाव है यह मानना सरासर गलत है। भगवान कहते हैं कि में कैवलज्ञान से देख सकता हूँ। सिंह का प्रत्यक्ष दर्शन सब को नहीं होता फिर भी उसे अप्रत्यक्ष कोई नहीं कहता। सब लोग ने परदेश, नदी, समुद्र नहीं देखा तो भी सब मानते हैं क्योंकि अन्यने उन्हे देखा है। आँख से मुझे नहीं दिखता इसलिये इन्द्रिय ज्ञान प्रत्यक्ष नहीं पर परोक्ष है जहाँ धुँआ हो वहाँ आग हो सकती है। ऐसा अग्नि का अनुमान इन्द्रिय ज्ञान परोक्ष होने पर भी उपचार से प्रत्यक्ष कह सकते है। इसलिये नारकों का अस्तित्व नहीं है ऐसा हम नहीं कह सकते। प्रकृष्ट पाप करनेवाला मर कर नरक में जाता है। संसारी जीव खराब दुष्ट कर्म बंध बाँध कर दुर्गति में न जाय इस लिए नरक का स्वरुप दिखाया जाता है, जिससे जीव पाप प्रवृत्तिसे पीछे हट शके। भय, लज्जा, शरम, संकोच आदि से सहजता से जीव अशुभ कर्म बंध से बच जायेगा।

अविनय, निर्लज्जता, हिंसा आदि सात व्यसन, कपट, विश्वासघात, देवगुरु की आशातना, धर्म की अवहेलना, निंदा परिग्रह, आरंभ, रात्री भोजन, कंदमूल, वडिलों के अपमान, माता-पिता को त्रास देना, आदि से कर्मबंध होता है। हँसते हँसते बाँधे हुए कर्म रोते रोते भी नहीं छुटते। कषाय, वासना संज्ञा अगले भव में नरक में अनेक प्रकार की वेदनायें काफी लम्बे समय तक भोगनी पडती है। चारो गतियो में अधिक दुःखदायी नरक गति है। रौद्र ध्यान जैसा अशुभ ध्यान नरकगति का अनुबंध कराता है। प्रसन्न चंद्र राजर्षिने पहेले तो रौद्रध्यान करके नरकगति का आयुष्यबंध किया पर तुरंत बाद में शुभध्यान में अपने आप को परिणित किया अशुभ ध्यान पहेले तो रौद्रध्यान करके नरकगति का आयुष्यबंध किय और तुरंत बाद में शुभध्यान में अपने आप को परिणित किया अशुभ ध्यान से हट गया और आत्माकी शुभ परिणिति से मोक्ष में गया। हिरनी के शिकार के बाद पाप की अनुमोदना की इसलिये साक्षात भगवान मिलने पर भी उसकी नरक गति मीट नही सकी। उन्होंने तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन किया था, फिर भी कर्मसत्ता के आगे मजबूर थे। रामचंद्रजी के भ्राता लक्ष्मण, प्रति वासुदेव रावण जैसे तीर्थंकर आत्माओं को भी अपनी भूल के कारण नरक में जाना पड़ा। श्रीकृष्ण महाराजा को अंत समय में अशुभ विचारों के कारण नरक में जाना पड़ा।

अति लोभ के कारण धवल सेठ और मम्मण सेठ मरने के बाद नरक में गये। सुभूम चक्रवर्ति षट् खंड के अधिपति थे पर और बारह खंड जितने की लालच में सातवी नरक में गये। जीवन में किये हुए अनेक पापों का प्रायश्चित तथा तप और संयम द्वारा पाप मुक्त होकर सदगति प्राप्त कर सकते है।

४७) नरक गति के आयुष्य बंध के कारण :

अभिमान, मत्सर, अति विषयी, जीव हिंसा, महारंभी, मिथ्यात्वी, रौद्र ध्यान, चोरी जैन मुनि का धातक, व्रत भंग करने वाला, मदिरा मास भक्षी, रात्री भोजन, गुणिजन की निंदा आदि - कृष्ण लेश्या वाले ऐसे जीव नारकी में उत्पन्न होते है।

नरक आयुष्य का बंध पहले गुणस्थानक तक है, उदय चौथे गुणस्थानक तक और सत्ता ७ वे गुणस्थानक तक रहता है।

नेरइयाणं भंते केवईकालं ठिई पन्नता ? गोयमा ? जहन्नेण दस वास सहस्साई उक्कोसणं तेतीसं सागरोपमाई ठिई पन्नता।

सर्व नारको की उत्कृष्टा स्थिति :

नारकीओं की जधन्य स्थिति १०,००० वर्ष और उत्कृष्ट स्थिति ३३ सागरोपम की है।

सात नरकों का आयुष्य :

प्रथम नरक धम्मा १ : सागरोपम तक का आयुष्य
दुसरा नरक वंसा ३ : सागरोपम तक का आयुष्य
तिसरा नरक सेला ७ : सागरोपम तक का आयुष्य
चौथी नरक अंजना १० : सागरोपम तक का आयुष्य
पाँचवी नरक रीष्टा १७ : सागरोपम तक का आयुष्य
छरी नरक मधा २२ : सागरोपम तक का आयुष्य
सातवी नरक माधवती ३३ : सागरोपम तक का आयुष्य

आत्मा को कर्म बंध करते समय सोचना चाहिये। कर्म उदय में आने पर संताप करने से पीडा-कष्ट कम नहीं होते इसलिये अशुभ कर्म बंध करते समय सो बार सोचो।

नरक जीव ज्ञानबल से पूर्व भव के वृत्तांत जान कर परस्पर झगडते है। रावण-लक्ष्मण लडते है। सीतेन्द्र बारहवे देवलोक से आकर रावण लक्ष्मण को उपदेश देते है।

असत्य उच्चारण से वसुराजा सातवी नरक में गये।

अनंतानुबंधी कषाय जीव को नरक में ले जाता है।

थिणध्धि निद्रावाले जीव मरकर नरक में जाते है। निद्रा में वासुदेव से आधा बल होता है। द्रमक(भिक्षु) राजगृही नगर में घूमकर भिक्षा से अपना पेट पालता था। उसका लांभातराय कम का उदय था इसलिये लोग उसे कुछ देते न थे। वह रौद्रध्यान में रहने लगा। द्वेष के कारण वैभारगिरि पहाड पर से विशाल शीला फेंकने लगा उस कार्य में वह खुद ही मर गया और सातवी नरक में गया।

४९) नारक के आवास:

तीसाय पन्नवीसा पन्नरस दसेया, सयसहसा तिन्नेगं पंचूण अणुत्तरा निरया,

प्रथम नरक में ३० लाख आवासों की संख्या है।
दुसरी नरक में २५ लाख आवासों की संख्या है।
तीसरी नरक में १५ लाख आवास है।
चौथी नरक में १० लाख आवास है।
पाँचवी नरक में ३ लाख आवास है।
छरी नरक में ९९९५ आवास है।
सातवी नरक में ५ स्थान है।
सात नरक में ८४ लाख नरकावास है।
नरक में ४ लाख योनि २५ क्रोड लाख कुल है।

५०) नारको की लेश्या :

काउ-हासु तईयाई मीसिया नीलिचउत्थीए पंचमियाए मीसा कण्ह ततो परमकण्हा।

प्रथम और दुसरी नरक में कापोत लेश्या
तिसरी नरक में मिश्र लेश्या
पाँचवी नरक में नील लेश्या
छट्टी नरक में मिश्र लेश्या
सातवी नरक में परम कृष्ण लेश्या

५१) कौन, कौनसी, नरक तक जा सकता है ?

१. असंज्ञी जीव जिन्हे मन नही होता) पंचेन्द्रिय तीर्यंच जीव प्रथम नरक तक जा सकते है।

२. गर्भज, भूज परिसर्प(हाथ से चलनेवाले) बंदर, छिपकली, चूँहा, खिसकोली दुसरी नरक तक जा सकते है।

३. पंखी तीसरी नरक तक जा सकते है।

४. सिंह आदि हिंसक प्राणी और चौथी नरक तक जा सकते है।

५. सांप आदि हिंसक सरिसृप पाँचवी नरक तक जा सकते है।

६. स्त्रियाँ छट्टी नरक तक जा सकती है।

७. मनुष्य और मच्छ सातवी नरक तक जा सकती है।

अर्थात ये सब जीव ज्यादा से ज्यादा इतनी नरक तक जा सकते है। स्त्रियाँ १ से ६ तक कोई भी नरक में जा सकती है पर सातवी नरक में नहीं जा सकती।

५२) अलग अलग संघयण वाले जीव की नरकगति :

कौनसे संघयण वाले जीव कौनसी नरक तक जा सकते है यह बताने के लिये प्रथम संघयण के बारे में जानना जरुरी है। संघयण अर्थात शरीर की हड्डियों की मजबुताई।

छेवट्टु - सेर्वात संघयण वाला जीव ज्यादा से ज्यादा दुसरी नरक तक जा सकते है। किलीका संघयण वाला जीव... ज्यादा से ज्यादा चौथी नरक तक जा सकता है। पाँचवी नरक तक नाराच संघयण वाला जीव... छट्ठी नरक तक ऋषभ नाराच संघयण वाले जीव।

ज्यादा से ज्यादा सातवी नरक तक जा सकते है वज्रऋषभ नाराच संघयण वाला (उच्च संघयण है)। पुण्य प्रकृति होती है । मोक्ष जाने के लिये जरुरी है। तीर्थंकर, चक्रवर्ति ६३ शलाका पुरुषों को यह संघयण मिलता है, इस संघयण का दुर उपयोग कर सत्ता के मद से चक्रवर्ति भी सातवी नरक में गये। त्रिपुष्ट वासुदेव के भव में सत्ता के मद के कारण भगवान वीर का आत्मा मर कर सातवी नरक में गया। तंदुलीया मच्छ मगरमच्छ के नयन की पलक पर रहता था। वह अति संकलिष्ट परिणाम से अंतमूर्हत में मर कर सातवी नरक में जाता है। वर्तमान काल में इन अंतीम संघयणवाले (छेवट्टु) जीव है इसलिये दुसरी (२) नरक से आगे नहीं जा सकते।

५३) नरक में से निकला हुआ जीव क्या बन सकता है ?

पहली नरक से आया हुआ जीव चक्रवर्ति बन सकता है। दुसरी नरक से आया हुआ जीव बलदेव और वासुदेव हो सकता है। प्रथम तीन नरक में से आया हुआ जीव तीर्थंकर हो सकता है।

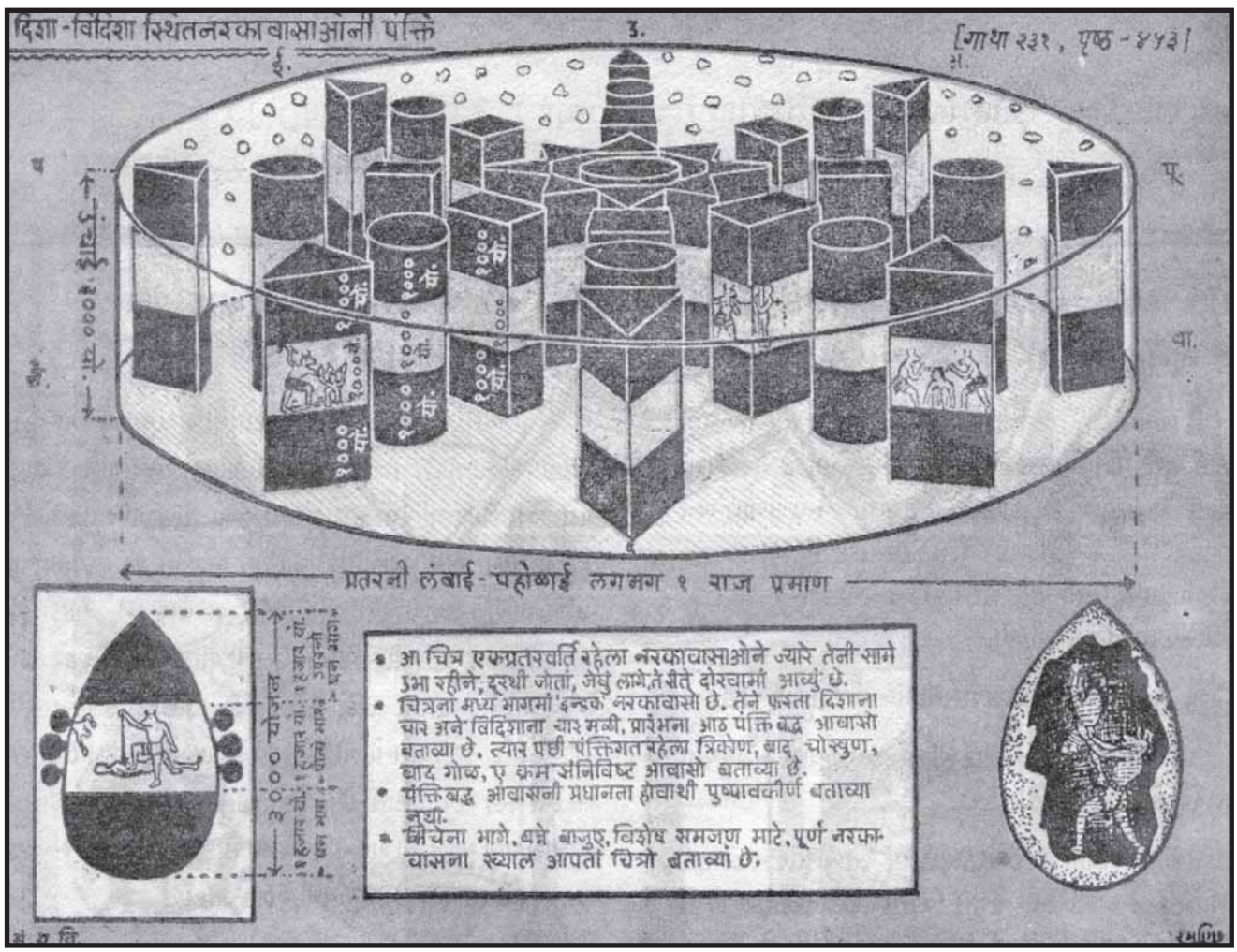

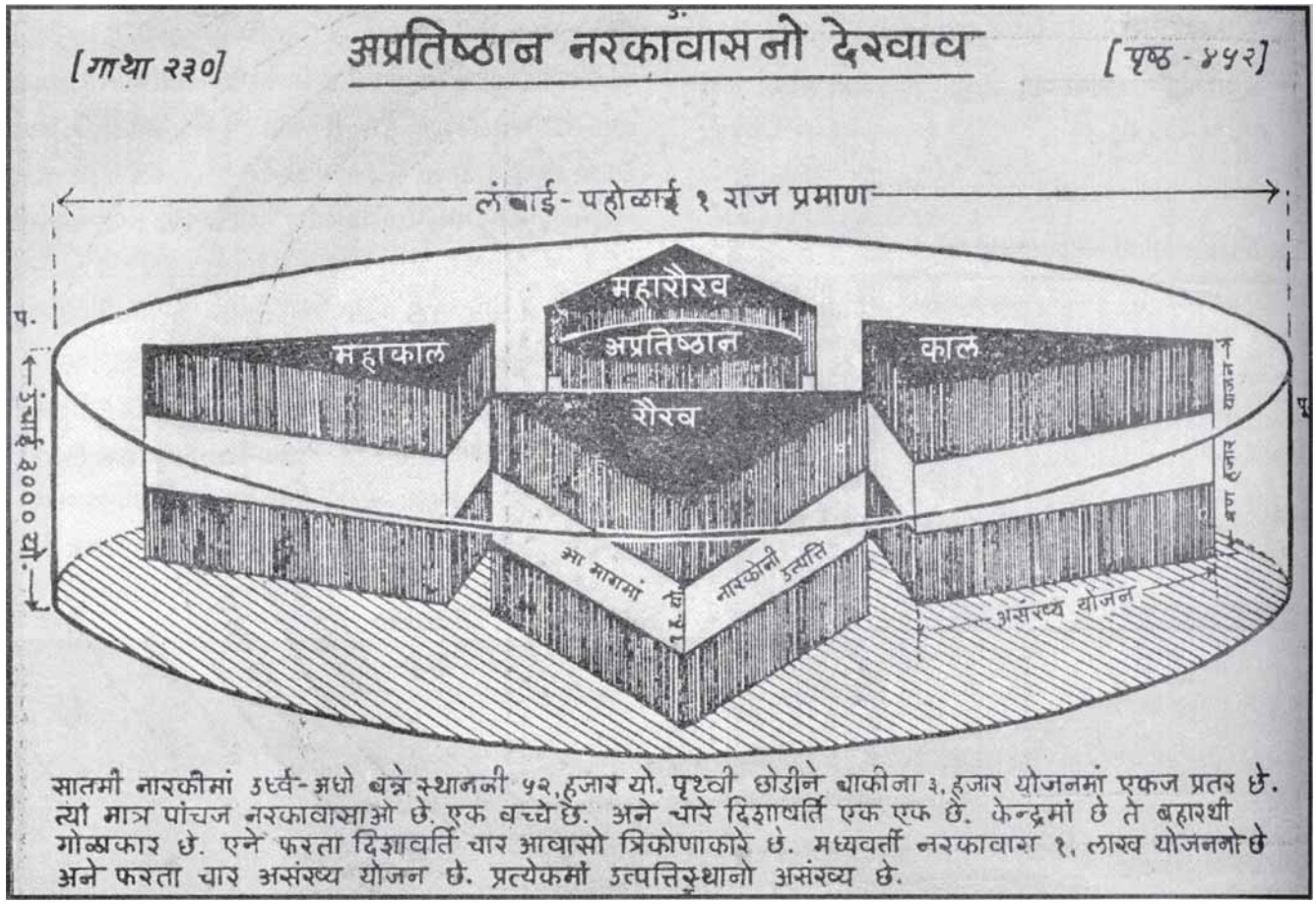

प्रथम चार नरक में से आया हुआ जीव केवली बन सकता है।

प्रथम पाँच नरक में से आया हुआ जीव साधु बन सकता है।

प्रथम नरक से छट्ठी नरक से आया हुआ जीव देश विरती श्रावक बन सकता है।

जीव कोई भी नरक से नीकल कर समकित प्राप्त कर सकता है। सम्यक दर्शन प्राप्त कर सकता है। श्रेणिक प्रथम नरक से और कृष्ण महाराजा तीसरी नरक से नीकलकर तीर्थंकर बनेंगे।

५४) नरकवास कौन से आकार-संस्थान से है ?

भगवान कहते है, गौतम, अंदर से गोलाकार बाहार से चोरस, नीचे क्षुरप्रना आकार जैसी है, वहाँ दुर्गंध रहती है। अशुचि से ग्रस्त, खून-मास-परु से सना हुआ कीचड, अत्यंत उष्ण, अति ठंड, अंधकार वाले दुःख की खाण रुप सर्व स्थान है। कोई देव अगर मेरु जितने विशाल पहाड को उष्ण नरक में डाले तो वह बरफ का विशाल पहाड जमीन पर गीरने से पहेले ही पिघल जाता है। ऐसी अग्नि का फुककर अग्नि जैसा लालचोंर बने हुए मेरु जीतना लोढा गोलाजो शीत नरफ भूमि में अति कठीन व्रजमय विभाग पास छोटा मुख जैसा बनाया हुआ स्थान है।

नरकवास दो प्रकार से है।

१. श्रेणि बंध(अवलिका बंध) पंक्ति बंध

२. अलग से पंक्ति आकार से

मध्य मे वृत्ताकार(गोलाइ में) और त्रिखुटाकारे तीन भेद के नरकावास है। गोलाइ, त्रिकोण, चोरस, सुरेख पंक्ति बाहार के आवास विभिन्न प्रकार के होते है।

५५) नरकावास की लंबाई, चौडाई और परिधि :

है गौतम, कोई नरक आवास संख्याता योजन विस्तार वाला है। तथा कोई नरक आवास असंख्याता विस्तार वाला है। वे राज योजन की लंबाई-चौडाईवाले है। परिधि संख्याता लाख योजन की है। ऐसा छट्ठी नरक तक असंख्याता लाख योजन के विस्तार और परिधि सहित है।

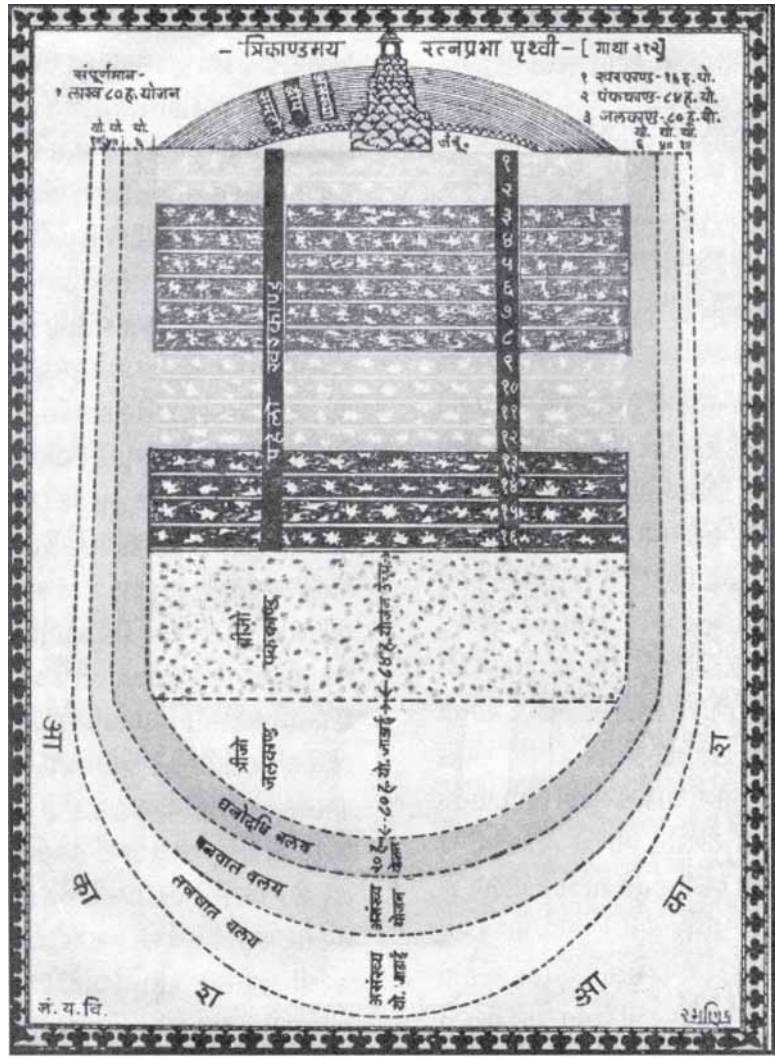

सातमी नरक के आवास की लंबाई चौडाई और परिधि :

५६) रत्नप्रभा पृथ्वी के नरकावास कितने बडे है ?

है गौतम, इस जंबुद्विप के सर्व द्विप समुद्र में अभ्यंतर द्विप सब से छोटा है। वह तेल के पुडले जैसा गोल है और रथ के पैये जैसा गोल तथा पूर्णिमा के चंद्र जैसा गोल है।

आचार्य भगवंत कहते है कि, तिन बार आंख मीचकर खुले उतनी बार वापस आये वो देव जंबुद्वीप के परिध के उत्कृष्ट शीघ्रता से गति करे तो ये देवको चलते चलते १दि, २ दि, ३दि, उत्कृष्ट ६ मास तक तब कुछ नरकवासका पार आये उतना बडा नरकवास है। सातवी नरक अप्रतिष्ठान नरकवासो अतिक्रमी जाय बाकी के चलते ६ मास भी अतिक्रमी कर सके इतना बडा है। सर्व वज्ररत्नमय है द्रव्य से शाश्वता है, पर्याय से अशाश्वता है।

५७) नरक की भयानक स्थिति :

महामूढ अज्ञानी जीव महारंभ, घोर परिग्रह, पंचेन्द्रिय का वध, मांसाहार आदि पाप करके, उस पाप के भार से ही पानी में लोहे के गोले की तरह वे जीव बिना कोई शरण के नीचे कुंभिओ में चले जाते है। वहाँ पहले तो उसके शरीर अंगुठे का बारिक हिस्सा जैसा होता है। जधन्य अंतमूर्हत में ही वह बड़ा हो जाता है। संकिर्ण कुंभी में वह समा नहीं सकता है।

वह जीव तेल की धाणी पीलाते हुए हाथी की तरह पोकार करता है। उसको पैदा हुए देखकर यमदूत प्रसन्न हो जाते है।

यमदूत उसे कहते है कि अर...र...र... यह दुष्ट को पकडो पकडो बोलकर बांस के टुकटे की तरह शस्त्र से पकड प्रलाप-चित्कार करते जल्दि से मारो, छेदो, काटो, बोलते हुए कठोर शस्त्र खड्ग, भाला आदि से कुंभीमेंसे नीकलते

हुए जीव को चारों तरफ से विदारते है। पछाडते है। अन्य देव उसे वज्र अग्नि वाली चिता में फेंकता है। वे नारकी के जीव चीरना, छेदना, भेदना, दौडाना, भरोडना आदि अनेक प्रकार से पीडा सहने के बाद भी तीव्र पापोदय के कारण वापस पारा की तरह अपना शरीर संकोच लेते है। बार बार मरने की इच्छा करने के बाद भी उन बेचारों को मरण नसीब नहीं होता। वे अरज करते हैं कि हे स्वामीनाथ ! हमें मत मारीये यह असह्य वेदना-दुःख सहन नहीं होते । आप मुझ पर प्रसन्न हो।

प्रभणंति तओ दीणा मा मा मारेह सामि पहुनाहु।
अई दुस्सह दुःख मिण पस्सियह मा कुणह एत्ता है।

नारकी जीव जब ऐसा मत किजीए इस तरह कहते हुए देवों के पाँव पडता है, दीन वचन बोलता है, तब उसकी बातें सुनकर नरकपाल जवाब देते हैं। मुर्ख, दुष्ट, आज दुःख सहने में कष्ट हो रहा है पर जब अपने आप को सर्वस्व मान कर पाप करते थे और कहते थे कि मोजमजा करो। परलोक किसने देखा ? मांसाहारी बनकर पशुहत्या करते थे। अंडे, चर्बी आदि खुब प्रेम से खाते थे वे सब भूल गया और अब पोकार-चित्कार कर रहे हो। ये दुःख सहनशक्ति की सीमाके बहार है, दुःसह्य है, ऐसे वचन अब बोल रहे हो। जब झूठे वचन बोलकर कपट से भोली प्रजा को ठगते थे और हर्षित होते थे अब व्यर्थ प्रलाप करके क्या फायदा ? जब भोले लोगों को लूटा था, रोंध मारकर गांव नगर लुटते थे और चोरी करते थे, डाका डालते थे, पराये धनकी लालच में उद्यम करते थे वह सब भूल गये। अब चित्कार करने से क्या। तब तुझे कोई समझाता कि पराया धन हडपना अति भयंकर पाप है, तब तुम कहते थे कि धन तो सब के लिये पराया है वह किसी का भी संबंधी नही होता। परस्त्रीगमन, चोरी आदि को तब तुम सुख के साधन मानते थे वैसी स्त्रियों के पति को तुम मरवा देते थे, अब गरम शीशे की पुतलिओं से दूर क्यों भागते हो ? असंतोषी बनकर बहुत पाप परिग्रह इकट्ठा करते थे, उसके आरंभ से प्रसन्न होते थे। अब ये दुःख सहते हुए चिडना क्यों ? आरंभ परिग्रह के बिना कुटुंब निर्वाह किस प्रकार होगा ऐसा कहते हुए परिवार के लिये पाप उपार्जन करता था, वह पाप की सजा सहने के लिये तुम तुम्हारे कुटुंबीजनों को बुलाओ, हम तुम्हारी मुंह चिटीओं से भर देते है। पहले तो रात को मिष्टान्न खाता था, सूरपान करता था। अब है दुर्भागी, अब अति उष्ण तेल और शीशा क्यों नहीं पिते ? राज्यमें सत्ताधारी बनने के बाद किसी को भी शूली पर चढ़ाना, आँख फोडना, हाथ कटाना, आदि अनेक कार्य रिश्वत लेकर किये और करवाये। नगर का कोतबाल बनकर घात करता, यातना देना, आदि कार्यो द्वारा खूब पापी काम किये। देव, गुरु से लोगों को परेशान किया, अब ऐसे ही, पापो से सींचे हुए अपने वृक्ष के मलीन फल तुम आज भूगत रहे हो इसमें हमारा क्या दोष ? नरकपाल तुम्हे पूर्वभव के दुष्ट कार्यो की याद दिलाते हुए अनेक प्रकार की वेदना का उपार्जन करते हैं। नरकपाल, नारकीओं की चमडी उधेडकर उनके मांस नोंचकर सेंकते है और फिर उन्ही के मुँह में ठुँसते है। ऐसे कार्य करते हुए नरकपाल उसे अवगत कराते है कि उसे गत जन्म में मांस भक्षण अति प्रिय था इसलिये खुद का ही मांस-खून ग्रहण करो। गतजन्म में नारक ने यदि कहीं कोई आग लगायी हो तो नरकपाल देव चारों तरफ बड़ी बड़ी अगनज्वाला प्रगट कर उसे उसकी याद दिलाते हैं। शिकार की विविध क्रिया याद कराने के लिये वे आत्मा को वज्रकूट के पास (रस्सी) में बांधकर लकडी से पीटते हैं। उसे त्रिशुल सें विंध कर अग्नि में शेकते हैं। अग्नि की ज्वाला नीचे लगाकर नारक को उलटे मुँह लटकाकर सेंका जाता है। शस्त्रों से छेदन किया जाता है। परमाधमी देव वाघ, चित्ता, वरु सिंह आदि का रुप बनाकर नारकी पर पंजे से प्रहार करते हैं। वे वज्रमुखी पक्षी के विविध रुप द्वारा भी वे नारकी जीवों की आँखे बाहर निकलता है। मस्तक पर प्रहार करते हैं। शरीर में से मांस के लोचे बाहर निकालते हैं। नरकपाल जब अग्निवर्षा करनेवाला मेघ का रुप लेता है तब नारकी जीव के सर्व अंग जल जाते हैं। फिर वे असुर के द्वारा तैयार की हुई गुफा में प्रवेश करते हैं। वहाँ उपर से गिर रही शिलाओं के कारण सब अंग तुटकर पापड के आटा जैसा हो जाता है। वे करुण विलाप करते हैं। पशुओं पर ज्यादा भार डालने वाले जीव पर वे लोग(नरकपाल) नारकी के स्कंधों पर पूर्व भव की याद ताजा कराने ज्यादा वजन रखते है। संसार में उन जीवों को शब्द स्पर्श रुप रस, गंध आदि में अत्यंत प्रिती थी उन परिणाम को प्रत्यक्ष कराने के लिये कान मे गरम शीशा, आँख को भयंकर रुप और मांस, जलते हुए अंगार के विलेपन

उसको करवाते है। पकड-साणसी से जीभ खींचकर बाहर निकालते हैं। चिंटी, सर्प आदि अशुचि पदार्थ मुँह में डालते हैं। वज्र कंटक शैया में रखी हुई अग्निमय पुतली की साथ सुलाते है। इस तरह नारक जीवो जो यातना सहता है, उसका वर्णन भी शास्त्रों में है। नर्क भूमि में श्याम वर्ण, बिभत्स, अपवित्र, जीर्ण, आंत बाहर निकला हुआ देह, शरीर के लुले अंग, तुटे हुए मस्तक वाले दीन, कायर शक्ति हीन नरक जीव होते हैं। नरक में पलक झपकने तक का सुख भी नहीं है। सर्व जीव पूर्व किये हुए कर्मो का फल ही भोगता है। कर्म करने के बाद ही उसका अच्छा बुरा फल सहन करना पडता है। कर्म जो फल देने के बाद ही नष्ट होता है।

गलत रास्ते पर प्रयाण करनार जीव खुद का ही शत्रु बन जाता है और सही रास्ते पर आकर वह अपने आप का मित्र बन जाता है। इस तरह आत्मा ही खुद शत्रु या मित्र है। ज्ञानी गुरु भगवंतों के बहुत समझाने पर, मना करने पर भी तुमने पाप करके दु:ख खरीद लिये फिर अब तुम किस पर गुस्सा निकालोगे ? जब तुम्हे कोई समझाने की कोशिश करता तब तु चीड़ कर कहता था कि सात नरक से ज्यादा नरकभूमि है क्या ? अब खेद करने से क्या लाभ ? इस तरह की सद्विचारण सम्यक्द्रष्टि जीव नरक में करता है और अशुभ कर्मो को नष्ट करता है। ऐसे जीव बाद में राज परिवार में जन्म लेते है। धीरे धीरे बाद में कुछ जन्मों बाद उनकी सिद्ध गति होती है।

अन्य जीव नरक में कलह भाव रखकर तीर्यंच गति में जाकर भव भ्रमण करते रहते हैं।

५८) सात नरकों का स्वरुप :

प्रथम नरक रत्नप्रभा : १४ राजलोक के केन्द्र में मेरुपर्वत है। उर्ध्वलोक (देवलोक), अधोलोक (पाताल लोक) और तिर्च्छा लोक है। मेरु पर्वत की चारों तरफ जंबू द्विप आदि असंख्य द्विप समुद्र है। मेरु पर्वत की समतल भूमि से नीचे ८०० योजन तक तिर्च्छा लोक है।

उसके बाद नरकलोक(अधो लोक) प्रारंभ होता है। सात राज के विस्तार में सात नरक प्रृथ्वी है। हर एक राज प्रमाण क्षेत्र में एक नरक पृथ्वी है। हर एक राज प्रमाण क्षेत्रमें एक नरक पृथ्वी है। नीचे उतरते क्रम में है। पहली नरक पृथ्वी का नाम धम्मा है। उसके उपर वज्र वैडूर्य लोहित मसार गल्ला आदि १६ जात के रत्न है। उसकी आभा विशेष होने से धम्मा पृथ्वी रत्नप्रभा के नामसे जानी जाती है। वह एक राज चौड़ी है। स्वयंभू रमण समुद्र तक असंख्य द्वीप समुद्र का प्रमाण उसकी नीचे पहोलाइ ते २.५ पृथ्वीकी जाडाई १ लाख ६० हजार योजन उसके उपर १ हजार योजन छोडकर नीचे १ लाख ७८ हजार योजन नरकी के जीवो रहते है उसमे नरकवास का १३ रास्ता है सम श्रेणीमें रहा हुआ से एकेक रास्ता एकेक प्रस्तर कहते है। सब प्रस्तरो ३ हजारा योजन उंचा है और एकेक प्रस्तर में एकेक नरकेन्द्र है। हर एक प्रस्तर में नरकावास है। पहेली नरकमें ३० लाख नरकवास है ये नरकें दिशा विदिशाका नरकवास है हरएकमें भिन्न भिन्न संख्यामें नरकवास है। वे अंदर से गोल बाहार से चतुष्कोण है। ये नरकवास लंबा चौडा संख्यता योजन है। कितने असंख्यात योजन है। सातवे नरकमें आवासे ऐसे है, अट्टी जैसे रमणीय, सुंदर फलेट, बंगले, फर्नीचर नहीं। दिखने में भयंकर है, भूमि बरछी है, उसको देखकर डर पैदा होता है। उसका डरावना रुप है। रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे धनोदधि, धनवात, तनवात, आकाश ये चारो है। सातवी नरक तक ये सब रीत रहती है। रत्नप्रभा पृथ्वी नीचे धनोदधि का पींड २० हजार योजन जाडपणे है। रत्नप्रभा पृथ्वी के १ लाख ८० हजार योजनमेंसे एक योजन छोडकर नीचे भी १ हजार योजन छोडकर मध्यम १ लाख ७८ हजार योजन वहा ३० लाख नरकावासो है अंदर गोल है। बाहर चोखुणा है। वेदना से भरपूर नरक है।

रत्नप्रभा पृथ्वीसे १२ योजन दूर अलोक है।

दुसरी नरक शर्करा प्रभा : इसका नाम वंशा भी है वहाँ कंकर बहुत है। वे प्रभा से युक्त होने से शर्करा प्रभा कहलाती है। दुसरी नरक अढ़ाई (२१/२) राज चौड़ी है। उसमें ११(ग्यारह) प्रस्तर है। पच्चीस लाख नरकावास है। उसकी जाड़ाई १ लाख बत्तीस हजार यौजन है।

तिसरी नरक वालुका प्रभा : इस का नाम शैला भी है। वहाँ रेती बहुत है। इस लिये इसका गौत्र शैला है। यहा चार राज चौडी है। इसमें पंद्रह लाख नरकावास है। उसमें नौ प्रस्तर है। हर एक प्रस्तर में एक इंन्द्र है। शैला पृथ्वी की जाडाई १ लाख २८ हजार योजन है। नीचे और उपर के एक

एक हजार यो. छोड़कर बीच के १ लाख २६ हजार योजन में १५ लाख नरकावास है।

चौथे नरक पंकप्रभा : इसका नाम अंजना है। पृथ्वी पर सर्वत्र कींचड की प्रधानता होने से यह पंकप्रभा के नाम से प्रसिद्ध है। यह पाँच राज चौडी है। इसकी जाडाई १ लाख २० हजार योजन है। उपर और नीचे के एक एक योजन छोड़कर बीच के १ लाख १८ योजन मे रहने के सात प्रस्तर है। उसमें १० लाख नरकावास है।

पाँचवी नरक : धूमप्रभा...रिष्टा नाम से है। यह पृथ्वी तल पर धुँए की प्रधानता है। यह पृथ्वी छः राज चौड़ी है। और १ लाक १६ हजार योजन विस्तार में ५ प्रस्तर है । ये नारकी जीवों के लिये है। उसमें नारकी जीव उत्पन्न होते है। वहाँ तीन लाक नरकावास है।

छट्ठी नरक तमः प्रभा :...इसका नाम मधा है। अंधेरा होता है। साढ़े छ : राज चौडी है। उसमें तीन वलय है। १ लाख १६ हजार योजन जाडाई में १ लाख १४ हजार योजन विस्तार नारकी जीवों के लिये है। उसमें ३ प्रस्तर ९९ हजार ९९५ नरकावास है।

सातवी नरक : तमस्तमः प्रभा...माधवती नाम से है। वहाँ घोर अंधेरा होता है। वहाँ खुद की उंगली भी नहीं दिख सकती इतना अंधकार होता है और वह महातम प्रभा के नाम से जानी जाती है। वह सात राज चौड़ी है। १ लाख ८ हजार योजन प्रमाण है। उसमें १ प्रस्तर है। वह अप्रतिष्ठान नामका ३ हजार योजन उंचा है। वह १ लाख योजन के विस्तार वाली है उसमें ५ नरकावास है। अप्रतिष्ठान नरक आवास बीचमें है। बाद में चारों दिशा में काल, महाकाल, शेर, महाशेर नरकावास है। जहाँ जीव उत्पन्न होते है।

५९) नरक में क्षेत्र वेदना : रत्नप्रभा आदि तीन नारकी में सिर्फ उष्ण वेदना होती है (शीत और शीतोष्ण सुखकारी है।) इसलिये नहीं होती।

चौथी पंकप्रभा : शीत और उष्ण वेदे है। लेकीन शीत वेदना से अधिक उष्ण वेदना अनुभव करनेवाले नारकी कम है।

छट्ठी तमप्रभा : प्रभा शीत वेदना है, उष्णवेदना कम अनुभव होते है।

सातवी तमस्तम प्रभा : प्रभा परम(अत्यंत) शीतवेदना का अनुभव होता है।

नारकी में भय : वहाँ नित्य अंधकार है। अति भय और परमाधमी का डर और त्रास रहता है। परमाधमी त्रास देते है। वहाँ सदा दुःख, उद्वेग और उपद्रव ही रहता है । नारकी भय और आतंक की परंपरा सहता रहता है। उसका जल्दि अंत नहीं होता।

६०) नारकी की उष्ण वेदना :

शास्त्रकारों ने नरक में नारकीओं को सहन करना पडता उष्ण वेदना समझाने के लिये सुंदर उपमा और उदाहरण दिये है। जेठ महिना हो, आकाश, बादल से रहित हो, हवा बिलकुल ही नहीं चल रही हो। ऐसे समय पित्त प्रकृतिवाला मनुष्य छत्रिरहित घर के बाहर जाय और सूर्य के अतिशय ताप से जो वेदना हो उससे अनंतगुनी वेदना नरक के जीवों को होती है। ऐसी तीव्र उष्ण वेदना को सहन करते हुए नारक को उठाकर मनुष्य लोक में पूर्वोक्त स्थल में रखा जाय (सूर्य के ताप में) तो वह जैसे कोई बीना गर्मी के शीतल हवादार स्थल में आया हो इस तरह चैन की नींद सो जायेगा। प्रथम, द्वितिय और तृतिय नरक में उष्ण वेदना होती है। चौथी नरक में कुछ नारकों उष्ण और कुछ नारको को शीत वेदना होती है। पाँचवी नरक में बहुतसे नारकों को शीत और थोडे नारकों को उष्ण वेदना रहती है। इस तरह चौथी और पाँचवी नरक में दोनो प्रकार की वेदना होती है। छट्ठी और सातवी नरक में शीत वेदना होती है। कोई लूहार का पुत्र शक्तिवान और निरोगी हो।

६१) नारकी में अति शीत वेदना :

नरक में कैसी कड़ाके की ठंड सहन करनी होती है। उसका हलका सा अंदाज लगाने के लिये शास्त्रो में सुंदर उपमा दर्शायी है। पोष मास की रात हो, आकाश बादल रहित हो, शरीर में कंपकंपी छुटे ऐसी सनसन करती हवाएँ चल रही हो, ऐसे समय कोई आदमी हिम पर्वत पर सबसे उँची चोटी पर बैठा हो, चारों तरफ जरा भी अग्नि न हो, खुली जगह हो, उसके शरीर पर एक भी वस्त्र न हो, उस समय उस आदमी को ठंड की जितनी वेदना होती है उससे अनंतगुना दुःख नरकवास में नारकों को रहती है। वैसा दुःख भी उनको हर पल रहता है। ऐसी कडाके की ठंड सहन कर रहे नारकों को वहाँ से उठाकर यहाँ उपरोक्त वर्णित किये

गये स्थल पर लाया जाय तो वह तुरंत ही चैन से जायेगा जैसे कि वहाँ जरा भी ठंड नहीं है।

नरक में से उठाकर यदि नारकी जीव को शीत हीम पुंज जैसे हिमालय पर्वत की चोटी पर महा मास की ठंडी में प्रवेश कराया जाय तो वह भूख और ठंड भूल जायेगा। उसकी काया उष्ण हो जायेगी। वह सो जायेगा। उसका यहाँ सुख महेसुस होगा इतनी भयानक ठंडी वहाँ नरक में होती है।

६२) नारकी में भूख और प्यास कैसी होती है ?

नारकी के जीवों को इतनी ज्यादा भूख और प्यास होती है कि पुरे समुद्र का पानी उसे पिलाया जाय या पृथ्वी के सब धान्य खिलाये जाय तो भी उसकी भूख प्यास मीटती नहीं है। दुनियाभर के घी, दूध और अनाज खाने को मिले फिर भी तीव्र क्षुधा के कारण वे कभी तृप्त नहीं होते।

६३) नारकी में वैक्रिय शरीर की विकुर्वणा :

वैक्रिय शरीर एक रूप भी बना सकते है और बहुत से रूप भी बना सकता है। उसें एक रूप करवत, खड्ग, हल, गदा, मुद्गल, नाराच बरछी, त्रिशुल आदि संकल्पित होते है। ये सब रूप संख्याता ही होते है असंख्याता नहीं। ऐसे रूप की विकुर्णा कर वे एक दुसरों की काया में वेदना उत्पन्न करते है। ऐसी भारी वेदना अति कर्कश, डरावनी, निष्ठुर प्रचंड तीव्र दुःखदायक पाँच नरक तक होती है। छट्ठी और सातवी नरक में नारकी लोहे के बारिक कंथुआ वज्र मुख जैसा रूप की बनाते हैं और एक दुसरे की काया में रखते है। ये कंथुए नारकी के जीवों की चमडी का भक्षण करते हुए उनके शरीर में प्रवेश कर जाते है और भयंकर दुःख और वेदना खडी करते है।

६४) रत्नप्रभा आदि पृथ्वी (नरक) के आवासो में वर्ण, स्पर्श, गंध आदि :

वर्ण : काला। काली प्रभा इतनी डरावनी होती है कि उसे देखकर रोंगटे खडे हो जाय। सातों नरक अत्यंत भयानक और त्रासदायक काली होती है। उसका दर्शन और गंध गाय, कुत्ते, बिल्ली, पाडा, चूहा, चित्ता, शेर आदि मृत कलेवर मरने के बाद दुर्गंध मारता है। ऐसी गंध और उसमें कीडे पड़ जाय ऐसा अपवित्र, घिनौना दृश्य हो उससे अनंत गुना अनिष्ट अमनोरम दृश्य और दुर्गंध नरक में होती है।

स्पर्श : खडग् की धार, शस्त्रों की नोंक, तोमर हथियार की सुइ, वींछी का कांटा, नीर्धूम अग्नि का स्पर्श, दीपशिखा का स्पर्श निभाडा के अग्नि का स्पर्श, शुद्ध अग्नि का स्पर्श आदि सब स्पर्श से भी अणिवाला अनंत गुना स्पर्श नरकावास में होता है।

गंध : शिर घूमने लगे ऐसी भयंकर दुर्गंध वहाँ होती है। टट्टी, पेशाब, खून, मांस, पँरू, चरबी के जैसी खराब गंध वहाँ होती है।

रस : वहाँ की भूमि के पदार्थो का रस कडवे नीम जैसा होता है। वहाँ मधुर रस का नामोनिशान नहीं होता है।

स्पर्श : वहाँ पर स्पर्श सांप बिछ्छू जैसा अति उष्ण और गरम होता है।

शब्द : बेचारे जीव दर्द और पीड़ा से सतत चीखने चिल्लाते रहते है। रोते हुए आवाज में कहते रहते है कि ओ मां, ओ बाबा, मुझे छुडाव, मुझे बचाइये। ऐसे अनेकप्रकार के त्रासदायक दर्दनाक आवाजे सुनकर करूणा उत्पन्न होती है।

गति : उंट, गर्दभ आदि प्राणी जैसा अप्रशस्त गति नामकर्म के कारण होती है इसलिये नारकों की चाल भी खराब होती है।

वेदना : घोर अंधेरे में परस्पर युध्ध करते हैं इसलिये मारना, काटना, पीटना चालु ही रहता है और जीव पीडीत रहता है।

नरक में लेश्या : नारकीओं के विचार अशुभ होते है। शरीर बेडोल, कढंगा, कुरुप, हुंडक, संस्थानवाला, गंदा होता है। कृष्ण, कपोत और नील तीन लेश्याएं अशुभ होता है। वहाँ परस्पर एक दुसरे को मारने कुटने के ही विचार जीवों को होते है इसलिये शुभ लेश्या का अभाव ही रहता है। वैसे वहाँ पर सम्यक् दृष्टि जीव की लेश्या शुभ होती है।

सातवी और छट्ठी नरक में	कृष्ण लेश्या
पाँचवी नरक का नीचे का हिस्सा	कृष्ण लेश्या

पाँचवी नरक का उपर के हिस्सा	नील लेश्या
चौथी नरक में	नील लेश्या
तिसरी नरक के नीचे के हिस्सो में	नील लेश्या
तिसरी नरक के उपर हिस्सो में	नील लेश्या
पहली नरक और दुसरी नरक में	कपोत लेश्या

६५) नरक में कौन जाता है ?

कल्पसूत्रकी टीका में लिखा है कि तीव्र रागवाला, स्नेही-स्वजन पर द्वेष करनेवाला, गंदी-हलकी भाषा बोलनेवाला, मूर्ख की दोस्ती करनेवाला, नरक से आया है और नरक में जानेवाला है। इन लक्षणों से हम अनुमान कर सकते है कि साप, मछली, घडियाल, गीध, शेर, सिंह, हिंसक वृत्ति वाले मनुष्य आदि घोर हिंसा करते हैं, वे नरक से आये हैं और यहाँ से वापस नरक में जायेंगे। ये प्राय: अशुभ अध्यवसाय और हिंसकता के आधार पर कह सकते हैं। जीव नरक में नरकगति योग्य आयुष्य कर्म के आरंभ, समारंभ, हिंसा, अति परिग्रह, तीव्र मुर्च्छा मोह, तीव्र क्रोध आदि कषाय, रौद्र ध्यान से परिणित कृष्ण लेश्या वाले, पंचेन्द्रिय जीव की हत्या करनेवाले, अंडे, मांसाहार, रात्रि भोजन, शराब, चोरी, गुणीजन की निंदा, इर्ष्या आदि करने

से नरक में जाकर घोर दुःख सहता है। वर्तमान समय में भी ऐसे पाप करनेवाले मनुष्यों को हम नजर समक्ष देख सकते है। वे पाप कर्म बांधकर नरक में जानेवाले है।

६६) पाप कर्म का दारुण विपाक (परिणाम)

हँसता बांध्या कर्म ते रोता नावि छूटे रे प्राणिया।

हँसते हँसते मोजमजा के लिये जो घोर पाप मनुष्य और तिर्यंच गति में बाँधे, उसकी सजा नरकगति में मिलती है।

शुभाशुभ कृत कर्म अवश्यमेव भोगतव्यं।

शुभ और अशुभ कर्म भुगतने ही पडते है, फिर भले ही क्रोड वर्ष निकल जाये पर कर्म से छुटकारा नहीं मिलता, जैसे कर्म करेंगे वैसे ही फल सहन करने पडेंगे। आचारांग सूत्र की टिका में नरक के दुःखो का वर्णन है। कान कटना, आँख फोडना, आदि दुःख तो होते ही है पर साथ में हाथ, पाँव, नासिका आदि में तीक्ष्ण त्रिशुल से खड्डे करना, हृदय जलाना, भयंकर विशाल कंक पक्षिओं से भक्षण कराना, तीक्ष्ण तलवार, चमकीले नुकीले भाला, कुहाडा मुदगल आदि शस्त्रों से मस्तक, कान, गला आदि फाडना, शुली पर चढ़ाना। कुंभी में पकाना, असिपत्रवन से कान नाक छेदाना, आदि भंयकर दुःख और वेदना नरक में है। पलक झपकने तक का सुख भी नहीं है। वहाँ से अगर भागने की कोशिश की परमाधामी की मार खानी पडती है। वहाँ दुःख और पीडा सहन करने के अलावा कोई उपाय बाकी नहीं रहता क्योंकि नारक जीव आत्महत्या भी नहीं कर सकते। उसका आयुष्य निरुपक्रम आयुष्य होता है अर्थात आयुष्य पूर्ण हुए बिना वहाँ से छुट नहीं सकते।

६७) क्षेत्रकृत वेदना :

वहाँ वेदना का कोई अंत नहीं है। ठंडी-गर्मी और अति अधिक मात्रा में खुजली, खुजली भी ऐसी होती है कि चाकु, छुरी या तलवार से निरंतर खुजालते रहे तो भी निरांत नहीं होती। यहाँ जरासा पाँव में कांटा लगा या, इंजेकशन की सोय चुबते ही मुँह से चीख निकल जाती है। वहाँ पर एक साथ करोड सुई चुबाई जाती हो ऐसी वेदना हो तो जीव किस प्रकार वेदना सहे। कितना दुःखदायी यंत्रणा होगी। यहाँ तो डोक्टर वेदना न सहनी पडे इसलिये प्रथम क्लोरोफोर्म सूंघा देते है। बाद में ओपरेशन में काटकूट करते रहते है और नरक में सतत हाथ-पाँव कटते जाते है। बुखार-ज्वर-ताप दाह की वेदना से पिडित शरीर को स्पर्श करते ही जलते हुए अंगारे का स्पर्श सा अनुभव होता है। वहाँ नंगे पैर ही चलना पड़ता है, बूट या चप्पल थोडे ही होते है।

६८) आगम सूत्र :

द्युतं च मांस च सुरा च वेश्या, पापर्द्धिचौर्ये परदारसेवा।
सप्तानि तानि व्यसनानि लोके घोरातिघोरं नरकं नयन्ति॥

भावार्थ : जुगार, मांस, दारु, शिकार, चोरी और परस्त्रीगमन ये सात व्यसन जीव को भयंकर नरक में ले जाते है।

नेरइआणं भंते ! कइ सरीरा पण्णत्ता? गोयमा ! तओ सरीरा पण्णता, तंजहा वेउव्विए तेअए कम्मए।

भावार्थ : हे भगवन्त ! नारकीओं को (पाँच प्रकार के शरीर मेंसे) कितने शरीर कहे है (होते है) ? हे गौतम ! तीन शरीर होते है। वे इस प्रकार है।

१) वैक्रिय, २) तैजस, ३) कार्मण।

- श्री अनुयोग द्वार सूत्र

अहोलोगे णं चत्तारि अंधगारं करेंति, तं, नरगा, णेरईया, पावाइं कम्माइं असुभा पोग्गला।

- श्री स्थानांग सूत्र

पूर्वस्यां दिशि कालनामा नरकावास, अपरस्यां दिशि महाकालः दक्षिणस्यां रौरुकः, उत्तरस्यां महारौरुकः मध्येऽप्रतिष्ठानकः।

नरक में, पूर्व दिशा में काल नाम का नरक आवास, पश्चिम में महाकाल, दक्षिण में रौरुक, उत्तरे महारोरुकः, और बीच में अप्रतिष्ठान नामक नरकावास है।

- श्री प्रवचन सारोधार

पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं।
पंद्रह परमाधामी से (प्रतिक्रमण कर रहा हूँ।)

प्रतिक्रमण करते समय बोला जाता है।

श्री श्रमण सूत्र

अधर्मो नरकादीनां हेतुर्निन्दितकर्मजः।

कारिकावली (न्याय)

चत्वारो नरकद्वाराः, प्रथमं रात्रिभोजनम्।
परस्त्रीगमनं चैव, सन्धानान्तकायिके ॥

नरक के चार दरवाजे है, प्रथम रात्री भोजन, दुसरा परस्त्रीगमन, तिसरा बोर आचार, चौथा अनंतकाय भक्षण।

- श्री श्राध्ध प्रतिक्रमण सूत्र वृत्ति

पुढवीसु नेरइया महावेदणा अप्पनिज्जरा।

नरक में नारकीओ महावेदनावाले और अल्प निर्जरावाले होते है।

- श्री विवाह प्रज्ञप्ति भगवति पंचमंग सूत्र

६९) नारकी के द्वार :

नं.	द्वार	नारकी
१.	भेद	१४
२.	स्थान	७ राज
३.	पर्याप्ति	६
४.	योनि संख्या	४ लाख
५.	कुल संख्या	२५ लाख
६.	योनि संवृतत्व	संवृत
७.	भव स्थिति	ज. १० हजार वर्ष उ. ३३ सागरोपम
८.	काय स्थिति	ज. १० हजार वर्ष ३३ सागरोपम
९.	शरीर	३
१०.	संस्थान	हुंडक
११.	देहमान	५०० धनुष्य
१२.	समुद्घात	४
१३.	गति	२
१४.	आगति	२
१५.	अनंत राशि	सम्यक्त्व से मोक्ष तक
१६.	समये सिध्ध	१०
१७.	लेश्या	३
१८.	दिगाहार	६
१९.	संहनन	नहीं है।
२०.	कषाय	४
२१.	संज्ञा	४ या १०
२२.	इन्द्रिय	५
२३.	संज्ञात	हेतुवादो पदेशकी
२४.	वेद	नपुं
२५.	दृष्टि	३
२६.	ज्ञान	३ ज्ञान ३ अज्ञान
२७.	दर्शन	३ दर्शन
२८.	उपयोग	९
२९.	आहार	निरंतर
३०.	गुणस्थान	४
३१.	योग	११
३२.	प्रमाण (संख्या)	असंख्य
३३.	अंतर	ज. अंतर्मुर्हुत उ. अनंतकाल एक जीव अपेक्षासे
३४.	भवसंवेध	४ पूर्वक्रोड ६६ सागरोपम

७०) नारकी का उत्तर वैक्रिय शरीर :

नरक के अंतमूर्हत तक रहता है। जिस तरह देव का १५ दिन, तिर्यंच का चार मूर्हत रहता है।

७१) नरक में नारकी को साता कब ?

कोई जीव पूर्व भव का देव या मित्र हो और वह नरक में जाकर वेदना कम कर सकता है। तीर्थंकरो के कल्याणक के समय नारकी जीव साता का अनुभव करते है, बाकी तो वहाँ दुःख ही दुःख होता है।

७२) नरक में से चार कारणों की वजह से जीव वापस आ नहीं सकता :

हे प्रदेशी ! नरक में तुरंत उत्पन्न हुआ नारकी मनुष्य लोक में वापस आने की इच्छा करे तो भी चार कारण से आ नहीं सकता भयंकर महावेदना भुगतने की हो।

कर्म फल बाकी रहा हो।
परमाधामी बार बार सताते हो।
नरक का आयुष्य पूर्ण न हुआ हो।
सातवी नरक से वापस न आने का दो कारण है।

भक्खणे देवदव्वस्स परत्थी गमणे, सत्तमं नरयं जंति सत्तवारा उ गोयमा।

हे गौतम ! देवद्रव्य भक्षण करने में और परस्त्रीगमन से वह सात बार नरक में जाता है।

तीसरा अध्याय :

तत्त्वो की श्रध्धा के लिये तत्वों का बोध अनिवार्य है। तत्त्वों के बोध के लिये जीव आदि तत्त्वों का वर्णन अवश्य करना चाहिये। जीव चार गति के आश्रय से रहता है - मनुष्य, तिर्यंच, देव और नरक ऐसे चार भेद है।

यहाँ सबसे प्रथम नरक जीवों का वर्णन प्रारंभ करते है।

७३) नरक की सात पृथ्वी का स्वरूप :

रत्न-शर्करा-वालुका-पङ्क-धूम-तमो-महातमः-प्रभा भूम्यो, धमाम्बु-वाता-ऽऽकाशप्रतिष्ठाः सप्ता-ऽधोऽधः पृथुतराः ॥३-१॥

भावार्थ : रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुका प्रभा, पंक प्रभा, धूम प्रभा, तमः प्रभा, महात्तमःप्रभाः ऐसी सात भूमि-पृथ्वी है। ये सात पृथ्वी धनांबु, वात और आकाश के आधार से रही है। ये क्रमशः चौडी होती हुई एक के नीचे एक बसी हुई होती है।

प्रथम रत्नप्रभा पृथ्वी एक राज चौड़ी है। (स्वयंभू रमण समुद्र तक)

दुसरी पृथ्वी अढाई राज चौडी है।
तिसरी पृथ्वी चार राज चौडी है।
चौथी पृथ्वी पांच राज चौडी है।
पांचवी पृथ्वी छः राज चौडी है।
छट्ठी पृथ्वी साढ़े छः राज चौडी है।
सातवी पृथ्वी सात राज चौडी है।

इस तरह पृथ्वीएं एक के नीचे एक चौडी होने से इसका आकार छत्र के उपर छत्र जैसा दिखता है। प्रत्येक पृथ्वी धनांबु, धनवात, तनवात और आकाश के सहारे होती है। धनांबू, अर्थात् धन पानी, धनवात अर्थात धन वायु, तनुवात अर्थात पतला वायु। धनांबु को धनोदधि भी कहते है। सर्वप्रथम आकाश है। बादमें आकाश के आधार से तनुवात है। बाद में तनुवात के आधार से धनवात रहा है। फिर धनवात के आधार से धनांबू/धनोदधि रहा है। बाद में धनोदधि के आधार पर तमः तमः प्रभा पृथ्वी रही है। उसके बाद पुनः क्रमशः आकाश, तनुवात, धनवात, धनोदधि और फिर तमः प्रभा पृथ्वी है। इस प्रकार से सातों पृथ्वी तक यही क्रम है। यह विचारणा नीचे से उपर करने में आई है। अगर उपर से नीचे की तरफ विचार करेंगे तो प्रथम रत्नप्रभा पृथ्वी है, बाद में धनोदधि है, फिर धनवात है, फिर तनुवात है, और अंत में आकाश है, त्यार बाद शर्करा प्रभा पृथ्वी है। फिर धनोदधि, धनवात, तनुवात और आकाश है इस तरह सातवी पृथ्वी तक यह क्रम चलता है। सर्वत्र आकाश का कोई आधार नहीं होता, क्योंकि आकाश स्वप्रतिष्ठित है और अन्य के आधार रूप है।

धनोदधि आदि वलय-चुडी के आकार के होने से उसे वलय कहा जाता है। धनोदधि वलय, धनवात वलय, और तनवात वलय। हम रत्नप्रभा पृथ्वी पर है। रत्नप्रभा पृथ्वी में मनुष्य, तिर्यंच, भवनपति देव-व्यंतर देव तथा नारक ऐसे चार प्रकार के जीव है।

७४) रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा आदि पृथ्वी की जाड़ाई और चौड़ाई

पृथ्वी	पृथ्वी की जाड़ाई	पृथ्वी की चौड़ाई
रत्नप्रभा	१८०००० योजन	एक रज्जु
शर्कराप्रभा	१३२००० योजन	अढाई रज्जु
वालुकाप्रभा	१२८००० योजन	चार रज्जु
पंकप्रभा	१२०००० योजन	पाँच रज्जु
धूमप्रभा	११८००० योजन	छः रज्जु
तमःप्रभा	११६००० योजन	साड़े छः रज्जु
तमः तमः प्रभा	१०८००० योजन	सात रज्जु

हर एक पृथ्वी से दुसरी पृथ्वी का अंतर असंख्याता क्रोडा क्रोडि योजन है। रत्नप्रभा आदि सात पृथ्वी में अनुक्रम से १३,११,९,७,५,३, और १ प्रस्तर है। रत्नप्रभा आदि पृथ्वी में अनुक्रम से ३० लाख, २५ लाख, १५ लाख, १० लाख, ३ लाख, ९९९५ और ५ नरकावास है।

प्रथम पृथ्वी में रत्नों की प्रधानता होने से उसे रत्नप्रभा कहते है। दुसरी पृथ्वी में कंकर की मुख्यता होने

से उसे सर्कराप्रभा कहते है। तीसरी पृथ्वी में रेती की प्रचुरता होने से उसका नाम वालुका प्रभा है। चौथी पृथ्वी में कीचड बहुत होने से पंक प्रभा नाम से है। पाँचवी पृथ्वी में धुँआ बहुत होने से वह धूमप्रभा नाम से जानी जाती है। छट्ठी पृथ्वी में अंधकार विशेष होने से तमःप्रभा के नाम से जाना जाती है। सातमी पृथ्वी में अतिशय तीव्र अंधकार होता है। इसलिये उसका नाम तमः तमः प्रभा है। धनवात तथा तनुवात की जाड़ाई हर एक पृथ्वी में असंख्याता योजन होती है। नीचे की ओर जाते समय पृथ्वी में धनवात और तनुवात की जाड़ाई अधिक रहती है।

७५) नरक में १५ प्रकार के परमाधामी कृत वेदना :

संक्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ॥३-५॥

भावार्थ : तीसरी नरक तक के नारक संक्लिष्ट असुरों से परमाधामी देवो से दुःखी होते है।

पंद्रह प्रकार के परमाधामीओं के नाम इस प्रकार है - अंब, अंबर्षि, श्याम, शबल, रुद्र, उपरुद्र, काल, महाकाल, असि, पत्रधनु, कुंभ, वालुक, वैतरणी, खरस्वर, महाघोष।

ये परमाधामी नये उत्पन्न हुए नरक के जीवों के पास शेर की तरह दहाडते हुए चारों तरफ से दौडे चले आते है। अरे यह पापी को मारो, उसको बांधों, उसके टुकडे करो, इस प्रकार प्रालाप करते हुए अनेक प्रकार के शस्त्रों का उपयोग कर नरक के जीव को वींधते है।

अंब जाति के परमाधामी खेल ही खेल में विविध प्रकार के भय उत्पन्न करते है। भयविह्वल जीवों के पीछे वे दौडते है। आकाश में उँचे ले जाकर उलटे फेंक देते है। नीचे गिरे हुए जीवों पर वज्र के सलियों से विंधते है, मुदगल से प्रहार करते हैं।

अंबर्षि परमाधामी अंब जाति के नरकाधामी द्वारा जख्मी, निश्चेतन किये गये नारकीओं के शरीर के टुकडे करते है। वे जीव को शाक-सब्जी की तरह काटते है।

श्याम जाति के परमाधामी भी अंग उपांग छेदन करते हैं।

घटिकालय से नीचे फेंकते हैं। चाबूक के प्रहार करते है। गेंद की तरह फेंक कर पाँव से लात मारते हैं।

शबल जाति के परमाधामी तो हद से बाहर जीव को वेदना देते हैं। वे पेट, हृदय आदि फाड कर आंत, मांस आदि बाहर निकालते हैं और जीव को दिखाकर पीड़ा देते हैं।

रुद्र जाति वाले असूर मार मार कर आते हैं और तलवार चलाते है। त्रिशूल, शुली आदि में नारकों को पिरोकर चिता में डाल देते है। उपरुद्र परमाधामी अंग के टुकडे कर अधिक वेदना उत्पन्न करते हैं।

काल जाति के असुर दुःख से रोते हुए नारकों को पकड़ कर धकधकती कड़ाई में जींदा मछली की तरह पकाते हैं।

महाकाल द्वारा होती विडंबना की बात ही अलग है। वह नारक के शरीर के बारीक टुकडे कर उन्ही को खिलाता है।

असि जाति के असूर असि अर्थात् तलवार चलाने का कार्य करते है। तलवार आदि शस्त्रों से हाथ, पैर, जंघा, मस्तक आदि अंग-उपांग को छिंदकर तहस-नहस कर देता है।

पत्रधन परमाधामी असिपत्र बन बनाकर दिखाते हैं। नारक छाया की अभिलाषा लेकर वहाँ जाते हैं। वहाँ जाते ही उनको अति दुःख भरी वेदना झेलनी पडती है। वहाँ पर वृक्ष के समान दिखनेवाले पत्ते तलवार आदि शस्त्रों के होते है। जैसे ही नारक वहाँ आते है परमाधामी पवन का रुप ले लेते है और वृक्ष पर से धड़ाधड़ पत्ते के जैसे दिखे वाले शस्त्र उन पर गिरते है जिसके फलस्वरूप हाथ, पैर, कान, नाक, आदि अंग कट जाते है, उनमें से रुधिर की धार बहने लगती है।

कुंभ जात के असुर नारकों को कुंभ, पचनक, शुंठक इत्यादि साधनो पर उबलते तेल में भजीये की तरह तलते है।

वालुका जाति के परमाधामी, नारको को भट्ठी की रेत से भी कई गुना ज्यादा उष्ण कदंब वालुका नाम की पृथ्वी में तड़तड़ फूटते हुए चने की तरह सेकते है। वैतरणी जाति के परमाधामी देव वैतरणी नदी जैसा रुप बनाकर उसमें नारकों को चलाते है। यह नदी में उकलते लाआरस का वेगवंत प्रवाह बहता रहता है। उसमें हर प्रकार की अशुची बहती रहती है जिसमें हड्डियाँ, खून, पस, बाल आदि भी होते है। अति उष्ण लोहे की नाव में वे नारक को बैठाते है।

खरस्चर : खरस्चर परमाधामी कठोर शब्दों का प्रलाप करते हुए दौडकर नारकों के पास आ जाते है। नारकों के पास एक दूसरे की चमडी छिलवाते है। वे शरीर के मध्यभाग को लकडी की तरह फाडते है। बादमें वे नारकीओं को तीक्ष्ण काटों से भरपूर शाल्मलि वृक्ष पर चढाते है।

महाघोष : महाघोष जाति के परमाधामी नारकों को अति विशाल गगनभेदी शब्दों से भयभीत बनाता है। भय से डरते नारकों को पकडकर उनको वधस्थान में रोककर अनेक प्रकार से वेदना देते है।

७६) परमाधामी मरकर अंडगोलिक मनुष्य बनते है :

गंगा और सिंधु दोनों नदियाँ लवण समुद्र में जिस जगह प्रवेश करती है वहाँ से दक्षिण दिशा में जंबूद्विप की जगती की वेदिका से पचपन योजन दूर एक द्विप है। उस द्विप में सुडतालीस गुफाएँ हैं। उसमें जलचारी मनुष्य रहते है। वे मनुष्य संघयणवाले, सुरापान में आशक्त मांस खानेवाले, और काले रंग के होते है। वे मनुष्य अंडगोलिक ऐसे नाम से पहचाने जाते है। उनके अंड की गोली के (पेशाब निकलने की इन्द्रिय के पास की गोली) चमरी गाय के पुच्छ के केश से गूंथ कर कान के साथ बाँधकर रत्न के व्यापारी समुद्र में प्रवेश करते हैं। वह अंडगोली के प्रभाव से मगर आदि जलचर उपद्रव नहीं करते। इस तरह वे समुद्र से रत्न लेकर सलामत बाहर आ जाते है।

रत्न के वेपारी अंडगोली लेने के लिये इस तरह उपाय करते है।

लवण समुद्र में रत्न नाम का द्विप है। उसमें रत्न के व्यापारी रहते हैं। वहाँ समुद्र के पास वज्रशीला के संपूट (वज्र की एक प्रकार से घंटी) होते है। व्यापारी वहाँ जाते है। संपूटो खोलते है और उसमें मद्य, मांस, मदिरा और माखण ये चार विगइयो भरते है। बाद में जहाँ अंडगोलिक मनुष्य रहते हैं वहाँ मद्य, मांस आदि लेकर आते है। अंडगोलिक मनुष्य दूर से ही देखकर अंडगोलिको का समुह उनको मारने के लिये दौडते है। व्यापारी मध, मांस आदि से भरे हुए पात्र थोडे थोडे अंतर से रख देते है और भागते रहते है। अंडगोलिक उन पात्रों में से मांस आदि खाते खाते दौडते हुए व्यापारी के पीछे लगते है। अंत में व्यापारी वज्रशीला के पास तक आ जाते है। वहाँ खूब सारा मद्य, मांस भरा हुआ देखकर उसमें प्रवेश कर अंडगोलिक वे सब खाते रहते है। इस तरह खाते खाते वे पांच, छः यावत दश दिन पसार करते हैं, इतने में व्यापारी लोग बख्तर पहन कर तलवार आदि शस्त्रों के साथ आकर सात-आठ टोली बनाकर संपूटों को घेर लेते है। और संपूटों को बंध कर देते है। अंडगोलिक में इतनी शक्ति होती है कि अगर एक भी बाहर आ गया तो वह सबको मार सकता है। बाद में व्यापारीगण यंत्र से वज्र की घंटी में उनको पीसते है। वे अति बलवान होने से एक साल तक पीसाते रहते हैं और अंत में उनकी मृत्यू होती है। एक साल पर्यंत वे भयानक पीडा सहते है। पीसते समय उनके शरीर के अवयव चूरण की तरह बाहर आता है। उसमें से व्यापारी अंड की गोलियाँ ढूंढ निकलता है और उसका उपयोग व्यापारी करता है।

पंद्रह प्रकार के परमाधामी देव मर कर कैसी यातना भुगतते है ? साढे बारह योजन प्रमाण एक भयानक स्थल है। वहाँ अंदर साढे तीन योजन प्रमाण एक और डरावना स्थल है। वहाँ साढे तीन योजन समुद्र की उँचाई से उँचा है। वहाँ घोर अंधेरी गुफाएँ है।

इन गुफाओं में परमाधामी देव उत्पन्न होते है। उनका स्पर्श कठिन है अर्थात कठोर है। उनकी द्रष्टि अति भयानक है, उनकी काया साडे बारह हाथ की है। उनका आयुष्य कुछ वर्ष का होता है। इस स्थल से इकतीस योजन दूर समुंदर के मध्य में अनेक लोगों की बस्ती वाला रत्नद्वीप नाम का द्वीप है। वहाँ मनुष्यों के पास वज्र की बनायी हुई घंट्टी होती है, इन चक्कीओं को वे मांस, मदिरा से भरते है। वे मनुष्य मांस, मदीरा, जहाज में भरकर मनुष्य के पास जाते है और उनको लालच देते है। वे इन चीजो के स्वाद से लुब्ध होकर इनके पीछे आकर उन चक्कीओं में गिरते हैं। वहाँ वे दो-तीन दिन पड़े रहते हैं। बादमें शस्त्रसज्ज आदमी वहाँ आकर चक्कियों को चारें तरफ से घेर लेते हैं। एक वर्ष तक वे अति कष्ट सहन करते हैं। और फिर वे जलचर मनुष्यों की मृत्यु होती है। सभी नरको से अधिक वेदना अंडगोलिक मनुष्य को होती है।

७७) नरक दुःखो का विशेष स्थानांग सूत्र, भवभावना आदि ग्रंथो में है।

अरे ! इस तरह परमाधामी नारकों को मारते, पछाडते, काटते, तलते, जलाते, शेकते, पिघालते, छिन्न भिन्न कर देते है। फिर भी उनका शरीर पापों के उदय के कारण पारा के रस की तरह वापस इकट्ठा हो जाता है। बेचारे नारकों को मांगे मोत नहीं मिलती। वे जब तक आयुष्य पूर्ण नहीं होता मर नहीं सकते। जिस तरह दो मल्लों को आपस में लडते देख पापानुबंधी पुण्य वाले जीव खुश होते है, वैसे ही परमाधामी नारकों को परस्पर लडते देख मारामारी करते देख आनंदीत होते है। वे हर्षित होकर तालियाँ बजाते है। वस्त्र फेंकते है, अट्टहास्य करते है।

७८) परमाधामी नारकों को दुःख देकर आनंदित क्यों होते है ?

प्रश्न : परमाधामी देव होने से उनके पास आनंद-खुशी के लिये अनेक साधन होते हैं फिर इस तरह पर पीडा में आनंद क्यों लेते है ?

उत्तर : उनको पापानुबंधी पुण्य आदि अनेक कारणों से ऐसे पाप कर्म में ही आनंद आता है। इसलिये आनंद-प्रमोद के अन्य साधनों के होते हुए भी नारकों दुःख देते है, लडाते है और आनंद लुटते है।

७९) नारकों के आयुष्य की उत्कृष्ट स्थिति :

तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंश-
शत्-सागरोपमाः सत्वानां परा स्थितः ॥३-६॥

भावार्थ : प्रथम नरक आदि में नारकों के आयुष्य की उत्कृष्ट स्थिति अनुक्रम से १,३,७,१०,१७,२२,३३ सागरोपम की है। उत्कृष्ट स्थिति अर्थात ज्यादा से ज्यादा स्थिति जिस स्थिति से ज्यादा अन्य स्थिति न हो वह अंतिम अधिक स्थिति उत्कृष्ट स्थिति कहते है। उपरोक्त श्लोक में मात्र उत्कृष्ट स्थिति का वर्णन है।

८०) कौन से जीव नरक से आये है और पुनः नरक में जायेंगे ?

अति क्रूर अध्यवसायवालो सर्प, सिंह, गीध, मछली आदि जीव नरक से आये और पुनः नरक में जायेंगे। ऐसा नियम नहीं है फिर भी उपर दर्शाये हुए कारणों से सामान्यतः ऐसा फलित होता है।

८१) नरक में क्या नहीं होता ?

नरक में समुद्र, पर्वत, कुंड, शहेर, ग्राम, झाड, घास, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरेन्द्रिय, देव, मनुष्य, तिर्यंच आदि नहीं होते।

८२) देव नरक में क्यों और कैसे जाते है ?

समुद्घात, वैक्रिय लब्धि, मित्रता आदि कारणों से देव नरक में जाते है। केवलीसमुद्घात् में केवली जीव के आत्मप्रदेश संपूर्ण लोकव्यापी बनते होने से सातों नरक में होते हैं। वैक्रिय लब्धि से मनुष्य और तिर्यंच नरक में जा सकते हैं। देवता पूर्वभव के मित्र को सांत्वना देने नरक में जाते हैं। सीताजी का जीव सीतेन्द्र, लक्ष्मणजी के जीव को आश्वासन देने चौथी नरक में गया था। परमाधामी देव नारकों को दुःख देने तीसरी नरक तक जीते है।

८३) नारकों की गति :

नारक मरने के बाद वापस नरक में जन्म नहीं लेते। नरक में उनको बहुआरंभ, बहुपरिग्रह आदि नहीं होते। देवगति में जाने के कारण संयम, सराग आदि का नरक में अभाव रहता है। इसलिये वे देवगति में भी उत्पन्न नहीं होते। नरक में से निकलकर मनुष्य या तिर्यंच में जन्म लेते है।

८४) नरक की साबिती :

प्रश्न : नरक गति प्रत्यक्ष दिखती नहीं है इसलिये है या नहीं कैसे कहा जाय ?

उत्तर : नरक गति सर्वज्ञ भगवंतो को प्रत्यक्ष होती है। अपने को प्रत्यक्ष नहीं होती फिर भी युक्ति से उसे सिध्ध कर सकते है। नरकगति न हो तो अनेक प्रश्नो के उत्तर

नहीं मिल सकते। जो जीव हिंसा आदि घोर पाप करते हैं वे उसकी सजा कहाँ भूगतेंगे ? क्योंकि मनुष्यगति में उसका फल संभव नहीं है, क्योंकि यहाँ एक खून की सजा फांसी है तो दस खून की सजा भी वही फाँसी है। उसकी बाकी सजा भूगतने वह कहाँ जायेगा। और जो खून, मारपीट आदि करके भाग गये पकडा नहीं गये उसकी सजा ? घोर हिंसा का सजा कहाँ मिलेगी ? जो मन से हिंसा, पाप आदि का सेवन करता है, वे किस प्रकार से सजा प्राप्त करेंगे ? मनुष्यगति में जन्म लेने के बाद गत जन्मों के पापों का फल भूगतने से और फिर पाप कर्म चालु ही हो तो उसके पापों का फल बाकी रह जाता है। मनुष्यगति में कभी कभी सुख भी होता है। वैसे ही तीर्यंच जीवों को भी सुख रहता है। इसे प्रकार से पापी जीवों को उनके पाप की सजा सिर्फ नरकगति में ही शक्य है।

८५) वैमानिक देव अवधिज्ञान से नरक का कितना उत्कृष्ट क्षेत्र देख सकते है।

सौधर्म और ईशान के देव प्रथम पृथ्वी तक देख सकते है। सनत्कुमार और माहेन्द देवलोक के देव दुसरी पृथ्वी तक, ब्रह्म और लांतक देव तीसरी पृथ्वी तक, महाशुक्र और सहस्त्रार देव लोक के देव चौथी नरक पृथ्वी और उपर के चार देवलोक आनत, प्राणत, आरण और अच्युत देवलोक के देव पाँचवी नरक पृथ्वी अवधिज्ञान से देखते है।

विवेचन : सौधर्म और इशानेंद्र तथा सामानिक आदि उत्कृष्ट आयु वाले देव रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे के भाग तक देखते है। विशेष यह है कि उपर और उसे उपर के देवलोक के देव अवधिज्ञान से अति शुध्ध ज्यादा पर्याय वाली पृथ्वी को देखते है। जैसे कि आनत से प्राणत देव अति विशुध्ध रीत से और अधिक पृथ्वी अवधिज्ञान बल से देखते है।

८६) ग्रैवेयक और अनुत्तर देवों का अवधिज्ञान :

छः ग्रैवेयक के देव छट्ठी नरक तक, बाकी के ३ ग्रैवेयक के देव सातवी नरक पृथ्वी तक और अनुत्तर वैमानिक देव थोडे कम मात्रा में देखते है। वे तिर्च्छा दृष्टि से असंख्याता द्विप समुद्र देखते है।

विवेचन : वैमानिक देव खुद के विमान की चुलिका ध्वजा तक उँचे देख सकते हैं। अनुत्तर विमान के देव कुछ कम १४ राजलोक प्रमाण उंचे त्रसनाडी को देखते हैं। अवधिज्ञान उत्पति समय। उँगली का असंख्याता भाग जधन्य से देख सकते है। ऐसा ज्ञान वैमानिक देवों को होता है। वे पूर्वभव (मनुष्य और तिर्यंच के भव) के अवधिज्ञान सहित जन्म लेते है। इसके बाद देव के संबंध में अवधिज्ञान उत्पन्न होते है।

८७) अवधिज्ञान का जधन्य विषय क्षेत्र तथा नारकी और देवों के अवधिज्ञान के आकार ?

भवनपति और व्यंतर देव जधन्य से २५ योजन तक का देख सकते है। भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी १२ देवलोक, ग्रैवेयक और अनुत्तर देवों के अवधिज्ञान का आकार अनुक्रम से त्रापा का आकार।

पाला का आकार, ढोल का आकार, झालर का आकार, मृदंग का आकार, पुष्प भरी हुई टोपली-चंगेरी का आकार, गलकंचूक का आकार, ऐसे अलग अलग आकार है। तिर्यंच और मनुष्य के विषय में अवधिज्ञान अलग अलग प्रकार के संस्थान से संस्थित है। ऐसा कहा है।

८८) नारकी अवधिज्ञान से कौनसी दिशा तरफ ज्यादा देखती है। भवनपति और व्यंतर को उपर की तरफ का अवधिज्ञान ज्यादा होता है। वैमानिक देवों का नीचे का अवधिज्ञान ज्यादा होता है। नारकी और ज्योतिषी को तिर्च्छा अवधिज्ञान ज्यादा होता है। मनुष्य और तिर्यंच को अनेक प्रकार से अवधिज्ञान होता है।

भवनपति और व्यंतर का अवधिज्ञान उपर की बाजू का ज्यादा होता है तिर्च्छा तथा नीचे का कम होता है। वैमानिक को नीचे का अवधिज्ञान ज्यादा और तीर्च्छा तथा उपर का कम होता है। नारकी और ज्योतिषी को तिर्च्छा अवधिज्ञान ज्यादा होता है। तथा उँचे का और नीचे का थोडा कम होता है। मनुष्य और तिर्यंच को अनेक प्रकार से अवधिज्ञान होता है। अर्थात किसी को उँचा, किसीको नीचे का, किसी को तीरछा होता है।

८९) भवनपति आदि देवों के भवनप्रत्ययिक अवधिज्ञान के क्षेत्र का यंत्र

नाम	उत्कृष्ट से उर्ध्व अवधि	उत्कृष्ट से अधो अवधि	उत्कृष्ट से तिर्च्छु अवधि
असुर कुमार	सौधर्म तक संख्यात	तीसरी नारकी तक संख्यात योजन	संख्या असंख्यात योजन
नागकुमारादि			
व्यंतर	योजन	संख्यात योजन	संख्याता योजन
वाणव्यंतर			सुधीना द्वीप
ज्योतिषी			और समुद्रो
सौधर्म		रत्नप्रभा के सर्व	असंख्याता योजन
इशान		नीचे के भाग तक	असंख्याता योजन
सनत्कुमार		शर्करा प्रभा के	दुसरे देव लोक से अधिक
माहेन्द्र		सर्व नीचे के भाग तक	तीसरे देवलोक से अधिक
ब्रह्मदेव		वालुका प्रभा के	चौथे देवलोक से अधिक
लांतक		सर्व नीचे के भाग तक	पाँचवे देवलोक से अधिक
महाशुक्र		पंकप्रभा के	छट्ठे देवलोक से अधिक
सहस्त्रार		सर्व नीचे के भाग तक	सातवें देवलोक से अधिक
आनत प्रणात		सर्व नीचे के भाग तक	दशमे देवलोक तक
आरण अच्युत		सर्व नीचे के भाग तक	ग्याहरवे देवलोक से अधिक
६ ग्रैवेयक		तमः प्रभा तक	बारहवें देवलोक से अधिक
७ से ९ ग्रैवेयक		तपस्तमः प्रभा	छट्ठे ग्रैवेयक से अधिक
५ अनुत्तर	कुछ न्युन लोक नालिका	लोक नालिका अंत तक	स्वयंभू रमण समुद्र तक

९०) सातो नरक पृथ्वी के नारकी का उत्कृष्ट और जधन्य आयुष्य का माप

पृथ्वी क्र.	नारकी का आयुष्य नरक पृथ्वी	उत्कृष्ट आयु	जधन्य आयु
१.	रत्नप्रभा	१ सागरोपम	१० हजार वर्ष
२.	शर्कराप्रभा	३ सागरोपम	१ सागरोपम
३.	वालुकाप्रभा	७ सागरोपम	३ सागरोपम
४.	पंकप्रभा	१० सागरोपम	७ सागरोपम
५.	धूमप्रभा	१७ सागरोपम	१० सागरोपम
६.	तमःप्रभा	२२ सागरोपम	१७ सागरोपम
७.	तमस्तमःप्रभा	३३ सागरोपम	२२ सागरोपम

९१) रत्नप्रभा के हर एक प्रस्तर में उत्कृष्ट और जधन्य आयु

प्रस्तर	उत्कृष्ट स्थिति	जधन्य स्थिति
१.	९० हजार वर्ष	१० हजार वर्ष
२.	९० लाख वर्ष	१० लाख वर्ष
३.	१ पूर्व क्रोड वर्ष	९० लाख वर्ष
४.	१/१० सागरोपम	पूर्व क्रोड वर्ष
५.	२/१० सागरोपम	१/१० सागरोपम
६.	३/१० सागरोपम	२/१० सागरोपम
७.	४/१० सागरोपम	३/१० सागरोपम
८.	५/१० सागरोपम	४/१० सागरोपम
९.	६/१० सागरोपम	५/१० सागरोपम
१०.	७/१० सागरोपम	६/१० सागरोपम
११.	८/१० सागरोपम	७/१० सागरोपम
१२.	९/१० सागरोपम	८/१० सागरोपम
१३.	१ सागरोपम	९/१० सागरोपम

९२) १० प्रकार से क्षेत्र वेदना :

शब्दार्थ : १. आहारादि पुद्गलों का बंधन २. गति ३. संस्थान हुंडक ४. भेद ५. (अशुभ) वर्ण ६. गंध ७. रस ८. स्पर्श ९. अगुरुलघु १०. शब्द ये देश प्रकार के अशुभ पुदगल नरक में भी है।

दुसरे १० प्रकार की क्षेत्र वेदना इस प्रकार है - नारकी देश प्रकार की (क्षेत्र) वेदनावाले होते है।

१. शीत २. उष्ण ३. क्षुधा ४. तृषा ५. खरज ६. परवशपना ७. बूखार ८. जलन ९. भय १०. शोक ये सब वेदनाएं नारकी के जीव सहन करते है।

पोष मास की भीषण ठंड के दिनों में रात के समय जब बर्फ गिरती हो, हवा चल रही हो ऐसे वक्त कोई मनुष्य वस्त्र पहने बिना हिमालय पर्वत पर पहुँचे वहाँ से उसे जो ठंड महसूस होगी उससे अनंत गुना ज्यादा शीत वेदना नारक जीवों को रहती है। नारकीओं को यदि ऐसी शीत वेदनावाले नरक में से उठाकर उपरोक्त स्थान पर रखा जाय तो उनको अनुपम सुख महसूस होगा और वे निद्राधीन हो जायेंगे।

ग्रीष्म ऋतु में मध्यान्ह काल में सूर्य मस्तक पर तप रहा हो, आकाश में मेघ न हो, चारों दिशा में चार अग्नि की लपटें निकल रही हो ऐसी जगह पर कोई पित्त प्रकृति वाले छत्र रहित मनुष्य को जो वेदना होती है। उससे कई गुना अधिक उष्ण वेदना का दुःख नारक को रहता है। इतनी उष्ण नरक से उठाकर अगर नारक को जलते हुए खेर कोयले के अंगारे पर रखे तो वह नारक सुख से सो जायेगा।

अढाई द्वीप के धान्य खाने से और सर्व समुंदर, नदी, सरोवर के पानी पीने से भी उसकी भूख और प्यास मिटती नहीं। छुरी से खुरेदने पर भी उनकी खुजाल जाती नहीं है। वे सदा परवश रहते हैं। उनके यहाँ की अपेक्षा अनेकगुना ताव रहता है। उनको हमेशा दुसरे नारक और परमाधमीओं से भय रहता है। उनके भय का कारण यह है कि अवधिज्ञान के सहारे उनको उँचे से, नीचे से या तीरछे से आनेवाले दुःख को वे अगाउ से (पहले से) जान लेते है। इसलिये वे भय से व्याकुल और शोक संतप्त रहते है। इस तरह ये उनकी १० प्रकार की वेदना हुई।

प्रथम तीन पृथ्वी के नरकावास की भूमि शीत और बाकी की भूमि उष्ण है। पंकप्रभा में बहुत से नरकावास उष्ण और थोडे शीत है। धूमप्रभामें बहुतसे नरकावास शीत और थोडे उष्ण है। छट्ठी और सातमी नरक में थोडी उष्ण और बाकी भूमि शीत है। नारकी में दो भेद है। सम्यक् द्रष्टि जीव और मिथ्याद्रष्टि जीव। उसमें सम्यक् दृष्टि नारकी पूर्वकृत कर्म को याद कर अन्य से उत्पन्न हुए दुःख को सम्यक प्रकार से सहन करती है, जब कि मिथ्या दृष्टि नारकी एक या संख्याता संबंध मुद्गरों के वैक्रिय रुप ग्रहण कर या स्वाभाविक पृथ्वी संबंधी हथियार ग्रहण कर परस्पर झगडते रहते हैं।

९३) ३ वेदना में से कौनसी वेदना कितनी नरक तक होती है।

सात नरक पृथ्वी में क्षेत्र वेदना, और प्रहरण बिना अन्योन्यकृत (परस्पर जीवों द्वारा उपजायी हुई वेदना) वेदना भी होती है। ५/३ नरक पृथ्वी में परमाधामी द्वारा दी गई वेदना भी संम्मिलित होती है। छट्ठी और सातवी नरक में नारकी जीवों वैक्रिय रुप बनाकर एक दुसरे के शरीर में प्रवेश करते है और वेदना खड़ी करते है। नारकी जीवो आले

(कुंभी) में उत्पन्न होते है। यह उनकी योनि जानो। वहाँ उत्पन्न होने के बाद अंतमुर्हत वह आला (कुंभी) छोटा और शरीर बडा हो जाता है। इसलिये उसमें रह नहीं सकते। तो नीचे गिरते है। वहाँ तुरंत ही परमाधामी आ जाते हैं और पूर्वकृत करम के अनुसार दुःख देते है। जैसे कि मदिरा पीने वालो को गरम शीशा पिलाया जाता है, परस्त्री पर नजर डालने वाले को गरम लोहे की पुतली से आलिंगन कराया जाता है। कूट सीमला के वृक्ष पर बिठाते हैं। लोहे के धण में रखकर पीटा जाता है। गरम तेल में डालते हैं। धानी में पीलते है। करवत से काटते हैं। शरीर में भाला पिरोते है। भट्टी में सेंकते हैं। पक्षी, सिंह, सर्प आदि के रुप बनाकर पीडा देते है। वैतरनी नदी में भीगोते हैं। असिपत्र बन और तप्त रेत में दौडाते हैं। वज्रमय कुंभी में तीव्र ताप में गर्म होकर नारकी उँचे ५०० योजन तक उछलती है और जैसे ही जमीन पर गिरती है परमाधामी और दुसरे नारक अलग अलग रुप लेकर दुःख देते हैं।

उन नारकी जीवों को लडते झगडते देख परमाधामी और दुसरे नारक अलग अलग रुप लेकर दुःख देते हैं।

उन नारकी जीवों को लडते झगडते देख परमाधामी खुश होते हैं, अट्टहास्य करते हैं, उनके पर वस्त्र उछालते है और नारकीओं को परस्पर झगडते देखने में जितनी प्रिती परमाधमीओं को होती है वैसी प्रिती उनको अच्छी रम्य सुंदर चीजें देखने में नहीं होती। ये परमाधामीपना पंचाग्नि प्रमुख कष्ट क्रियाओं से प्राप्त होता है। परमाधमी भव्य ही होते हैं वे भी मरकर अंडगोली होते है।

९५) साते नरक पृथ्वी का पिंड और उसका आधार :

धनोदधि-पिंड २० हजार योजन का है। धनवात, तनवात और आकाश का पिंड असंख्यात योजन से युक्त है।

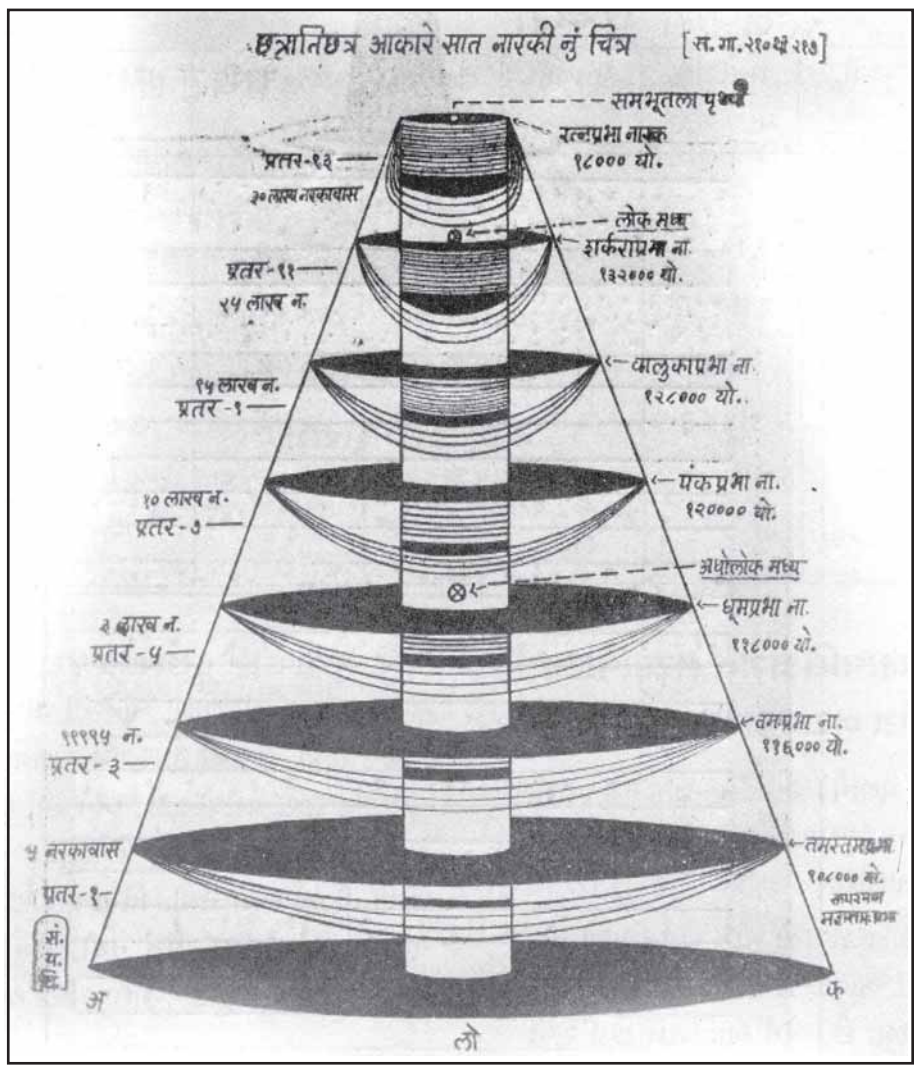

विवेचन : हर एक नरक पृथ्वी की जाड़ाइ का मध्यभाग के नीचे धनोदधि की जाड़ाइ २० हजार योजन की है। उसके नीचे धनवात असंख्यात योजन, उसकी नीचे तनवात असंख्यात योजन और उसकी नीचे आकाश असंख्यात योजन मध्य भाग में हैं, उसके बाद धनोदधि आदि तीन वलय कम होकर कितना योजन विस्तार है वह इस प्रकार है –

नरक पृथ्वी	नरक के नाम	पृथ्वी पिंड	धनोदधि	धनवात	तनवात	आकाश
रत्नप्रभा	धर्मा	१,८०,०००,	२०,०००			
शर्कराप्रभा	वंशा	१,३२,०००,				
वालुका प्रभा	शैला	१,२८,०००				
पंक प्रभा	अंजना	१,२०,०००				
धूम प्रभा	रिष्टा	१,१८,०००				
तमःप्रभा	मधा	१,१६,०००				
तमस्तमः	माघवती	१,०८,०००				

सीमंतक से लेकर अप्रतिष्ठान तक (४९) इन्द्रक नरकावास है।

९६) नरक पृथ्वी की धनोदधि आदि तीनो वलयो का विस्तार नरक पृथ्वी धनोदधि धनवात तनवात नरकपृथ्वी नरकावास प्रसार यो. गाउ योजन योजन गाउ

नरक पृथ्वी	धनोदधि योजन/गाउ	धनवात योजन	तनवात योजन/गाउ	नरक पृथ्वी योजन/गाउ	नरकवासा	प्रतर
रत्नप्रभा	६	४.५	१.५	१२	३० लाख	१३
शर्कराप्रभा	६.२५ १/३	४.७५	१.५ १/३	१२.५ २/३	२५ लाख	११
वालुका प्रभा	६.५ २/३	५	१.२५ १/३	१३.२५ १/३	१५ लाख	९
पंक प्रभा	७	५.५	१.७५	१४	१० लाख	७
धूम प्रभा	७.२५ १/३	५.५	१.७५ १/३	१४.५ २/३	३ लाख	५
तमःप्रभा	७.५ २/३	५.७५	१.७५ २/३	१५.२५ १/३	९९,९९५	३
तमस्तमः	८	६	२	१६	५	१

९७) सातों पृथ्वी के आवलिकागत नरकवासा और पुष्पावकीर्ण नरकावासा

सातों पृथ्वी मिलाकर आवलिका गत नरकावासा छह्नुंसोत्रेपन है और बाकी (पुष्पावकीर्ण) नरकावासा त्र्यांसी लाख नब्बे हजार तीनसो सुडतालीस (८३,९०,३४७) है।

विवेचन : सर्व इन्द्रक नरकावास गोल है। उसके बाद चार दिशा और विदिश में रहे आवलिकागत नरकावास अनुक्रम से त्रिखुणा (त्रिकोण), चोखुणा (चोरस) और वाटला है। एसा आवलिका के अंत तक है।

पुष्पावकीर्ण नरकावास अलग अलग आकार से है। वे सब नरकावास अंदर से गोल, बाहर से चोरस और नीचे से उस्तरे की धार की तरह है। जिसके उपर पाँव से चलने से अति वेदना होती है। नारकी के जीव पराधीन है, और वहाँ दुःख ही सहने का है। वहाँ कुछ भी शुभ नहीं है जिससे लूटने का मन हो। इसलिये इंद्रादि की व्यवस्था नहीं है। विमान के मालिक की तरह यहाँ

नरकावास का कोइ मालिक नहीं होता। (अशुभ होने से) जैसे गंदे जीर्णशीर्ण वस्त्र के टुकडे का कोई मालिक होना नहीं चाहता।

सातो नरक को नरकावासा की कुल संख्या का यंत्र

पृथ्वी के नाम	गोल	त्रिखुणां	चोखुणां	पंक्तिगत	पुष्पावकीर्ण	कुल नरकावास
रत्नप्रभा	१४५३	१५०८	१४७२	४४३३	२९,९५,५६७	३०,००,०००
शर्कराप्रभा	८७५	९२४	८९६	२६९५	२४,९७,३०५	२५,००,०००
वालुका प्रभा	४७७	५२६	४९२	१४८५	१४,९८,५१५	१५,००,०००
पंक प्रभा	२२३	२५२	२३२	७०७	९,९९,२९३	१०,००,०००
धूम प्रभा	९९	१००	८८	२६५	२,९९,७३५	३,००,०००
तम:प्रभा	१५	२८	२०	६३	९९,९३२	९९,९९५
तमस्तम:	१	४	०	५	०	५
	३१२१	३३३२	३२००	९६५३	८३,९०,३४७	८४,००,०००

९८) नरकावास की उँचाई, चौडाई और लंबाई -

शब्दार्थ : सर्व नरकावासो तीन हजार योजन ऊँचा और संख्याता या असंख्याता योजन चौडाई और लंबाईवाले है। सीमंतक (इन्द्रक नरकावासो) ४१ लाख योजन का और अप्रतिष्ठान (इंद्रक नरकावासो) १ लाख योजन लंबा चौड़ा है।

विवेचन : नरकावासी की पीठ (नीचे का भाग), मध्य भाग और स्तूपिका (शिखर) ये तीनो एक एक हजार योजन होने से सभी नरकावासी ३ हजार योजन उँचे है। अप्रतिष्ठान नरकावासी की पूर्व दिशामें काल, पश्चिम दिशा में महाकाल, दक्षिण दिशामें रोचक उत्तर दिशा में महारोचक ये चारों नरकावासी की लंबाई, चौडाई और परिघ असंख्याता क्रोडाक्रोडी योजनकी जानो।

सातों नरक पृथ्वी के विषय में नरकावास रहित क्षेत्र :

शब्दार्थ : छ: पृथ्वी के नीचे और उपर एक हजार योजन और आखरी पृथ्वी साढी बावन हजार योजन नरकावास रहित (क्षेत्र) है। बाकी सर्व पृथ्वीओं में नरकावास है।

रत्नप्रभा : पृथ्वी का पिंड १ लाख ८० हजार योजन का है। उसें से दो हजार योजन कम करते १ लाख ७८ हजार योजन रहेंगे। रत्नप्रभा को तेर प्रस्तर है वे हर एक प्रस्तर ३ हजार योजन ऊँचा है। इस तरह १३ प्रस्तर के ३९ हजार योजन होते है। उसमें से १ लाख ३९ हजार योजन बाकी रहे। इसे १३ प्रस्तर के बीच के १२ अंतरे में भाग करते ११५८३११३ योजन आता है। यह अंतर रत्नप्रभा के हर एक प्रस्तर के बीच होता है।

नरक पृथ्वी के पिंड के आंतरा की गिनती का यंत्र

नाम	पृथ्वीपिंड	उपर नीचे की पृथ्वीना योजना	शेष योजन पृथ्वी के योजन	प्रतरगुणित नरकावासना	आतंरा की पृथ्वी	आंतरा	सभी पृथ्वी के प्रतर के आंतरा का प्रमाण
रत्नप्रभा	१८००००	२०००	१७८०००	३९०००	१३९०००	१२	११५८३ १/३ योजन
शर्कराप्रभा	१३२०००	२०००	१३०००००	३३०००	९७०००	१०	९७०० योजन
वालुका प्रभा	१२८०००	२०००	१२६०००	२७०००	९९०००	८	१२३७५ योजन
पंक प्रभा	१२००००	२०००	११८०००	२१०००	९७०००	६	१६१५५ २/३ योजन
धूम प्रभा	११८०००	२०००	११६०००	१५०००	१०१०००	४	२५२५० योजन
तम:प्रभा	११६०००	२०००	११४०००	९०००	१०५०००	२	५२५०० योजन
तमस्तम:	१०८०००	१०५०००	३०००	३०००	०	०	०

सातो नरक पृथ्वी में नारकी के शरीर का उत्कृष्ट प्रमाण।

विवेचन : रत्नप्रभा में ७१११ धनुष और ६ अंगुली शर्कराप्रभा में १५११ धनुष और १२ अंगुली वालुकाप्रभा में ३११ धनुष, पंकप्रभा में ९२११ धनुष, धुमप्रभा १२५ धनुष, तम:प्रभा में २५० धनुष, तमस्तम: प्रभा में ५०० धनुष उत्कृष्ट देहमान है।, २४ उंगली - १ हाथ, ४ हाथ - १ धनुष

१००) कौन से कारणों से जीव नरक आयु बांधे ?

१. मिथ्यादृष्टि २. महारंभी ३. परिग्रही ४. तीव्र क्रोधी ५. शीलरहित ६. पाप की बुद्धिवाला ७. रौद्र परिणामी जीव नरकायु बाँधता है।

१०१) सातो नरक पृथ्वी के नारकी का शरीर, विरहकाल, उपतात संख्या, च्यवन संख्या और गति आगति का यंत्र :

शब्दार्थ : असंज्ञी (पर्याप्ता तिर्यंच), गर्भज, भूज, परिसर्प, पक्षी, सिंह, सर्प और स्त्री अनुक्रमे से छट्ठी नरक पृथ्वी तक ही उत्कृष्ट से उत्पन्न होते है।

विवेचन : असंज्ञी अपर्याप्ता मनुष्य और तिर्यंच नरकायु बांधे नहि। असंज्ञी पर्याप्ता तिर्यंच अगर नरकायु बाँधे तो प्रथम नरक में जधन्य से १० हजार वर्ष और उत्कृष्ट से पल्योपम के असंख्याता भाग जितना आयुष्य प्राप्त करता है।

आपके अभिप्राय...

प.पू. परमोपकारी... परमकृपालु... वात्सल्यमूर्ति...
पू. ग. श्री विमलप्रभविजयजी म. साहेब तथा
प.पू. विनयविजयजी म. साहेबना पुनित चरणारविंदे...
अमदावादथी ली। आपनी कृपेच्छु
सा. प्रफुल्लप्रभाश्री आदिनी अगणित वंदना सह,

आप पूज्योनां पुनित देहे निरामयता वर्तती हशेजी। स्वास्थ्य आप बंनेना संयमाराध्य हशेजी।

आप पूज्योनी कृपाथी अमो सर्वे शातामां छीओजी।

वि. आपे मोकलावेल "हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार' ओ पुस्तक मळ्युं... तथा शिबिरनी पत्रिका पण मळी छेजी।

पुस्तकनुं तो मुखपृष्ठ ज ओटलुं आकर्षक छे के जोईने तुरंत खोलीने वांचवानुं मन थाय पुस्तकमां पण आपे विषयो थोडां हळवा-थोडां भारे अने वच्चे कथाओ... वि. लईने ओवुं सुंदर संकलन कर्युं छे के... वांचनार जरा पण बोर न थाय। तेनो रस टकी रहे... अने तेने घणुं घणुं जाणवा-समजवा मळी रहे। आपे अमने याद करी पुस्तक मोकलाव्युं। ते आपनो मोटो उपकार...!

✍ द.सा. प्रियंवदाश्रीनी भावभरी वंदनावली

"हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार" 'नारकी चित्रावली' आदि अनेक पुस्तको नरकनी भयंकरता समजवा, समजाववा माटे उपयोगी थाय ओवा छे। ओ बधा प्रश्नोने नजर समक्ष राखीने मोटी साइझमां सविस्तर-सचित्र प्रकाशित छेल्लामां छेल्ला प्रकाशन ओटले ज "हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार" आकर्षक रुप-रंग-साइझमां प्रकाशित आ पुस्तक नाना मोटा १०५ शीर्षक, पेटाशीर्षक धरावे छे। आमां अनेक चित्रो द्वारा लेखन समजण अने सचोट बनाववानो पुण्य-प्रयास थयो छे।

सात नारकी अंगेनी नानी मोटी लगभग तमाम समजण सुंदर शैलीमां आपवामां आवी छे। अनेकानेक शास्त्रीय दृष्टांतो रजु करवा पूर्वक लखाणने वधु रोमांचक अने असरकारक बनाववानो प्रयास थयो होवाथी आ प्रकाशन खरेखर ओकवार तो वांचवा जेवुं छे। नारकीय यातनाओनुं वर्णन वांचता ओक वार तो हैयुं हलबली उठ्या विना नहिं रहे। ओमां पण चित्रोनुं माध्यम भळे, पछी तो ओनी असरकारकता अनेकगणी वधी गया विना रहे खरी ?

नारकीय यातनाओनी सर्वांगीण व्यथा-कथा जाणवी होय, तेमज नरकना कारणो-वारणोथी माहितगार बनवुं होय, तो आ प्रकाशन वांचवुं अने वसाववुं ज रह्युं। "हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार" आ सज्झाय कडी आपणे गाइओ छीओ तो ओकवार, पण ओ गानमां दिलनुं दर्द उमेरवुं होय तो, आ पुस्तक वहेली तके हाथमां लेवुं ज रह्युं...

✍ कल्याणथी उध्धृत - पू.आ. श्री पूर्णचन्द्रसूरि म.सा.

प.पू. गणिवर्य श्री विमलप्रभविजयजी म.सा. सुखशातापृच्छा-वंदना शातामां हशो।

पू. गुरुदेवश्री शातामां छे।

वि। आपश्री द्वारा लिखित "हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार" खरेखर ! चिंतनात्मक, प्रेरणात्मक अने परलोकनी दुर्गति प्रत्ये जागृत करवामां निमित्तरुप छे। वर्तमानमां पापोनो कोई पार नथी कारण के जीवोने दुर्गतिनी भयानकतानो ख्याल, विचार नथी।

आ पुस्तक जोया-वांचन पछी लाग्युं के वांचन-चिंतन पश्चात अनेक जीवोना जीवनमां परिवर्तन थशे। मोज-शोख अने फेशनना व्यसनोमां ग्रस्त आजनी पेढीओने धर्म प्रत्ये श्रद्धा जगाववा माटे आवा पुस्तकनुं आलेखन आवश्यक छे। छतां, पडतो काळ छे। जे पामी जाय ते खरा !

आ पुस्तकनी उपलब्ध होय तो १० कोपी अथवा पांच कोपी तो अवश्य मोकलशो, जरुर छे। शेषानंद छे।

✍ मु. निपुणरत्नविजय (बेंगलोर)

ज्ञानादिगुणोपेत

पू. गणिवर्य श्री विमलप्रभविजयजी म.सा. सादर अनुवंदना...

आपना द्वारा संपादित ''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' पुस्तक प्राप्त थयुं। आपनो आ प्रयास अनुमोदनीय छे। बस ऐज।

✍ लि. पूज्यश्रीनी आज्ञाथी - विश्वचंद्रविजय...

आ पुस्तक ममण शेठनी सजा नारकीना अनेक प्रकारीनी माहिती मळी। पहेली नरक रत्न प्रभा, बीजी नरक शर्करा प्रभा आम सात नरकनुं जाणवा मळ्युं। अनेक प्रकारनी कथा दृष्टांतसाक्षात जाणवा मळी।

✍ लि. प्रविणाबेन सुखलाल शेठ (भांडुप)

आ पुस्तकनी परीक्षा आपी। तेमां अमोने नारकी पुस्तक वांचीने पाप नहिं करवा जोईऐ अने थई गया होय तो प्रतिक्रमण करीने मिच्छामि दुक्कडम् (माफी) मांगी लेवी जोईऐ, ऐवुं जाणवा मळ्युं। गुरु पासे आलोचना लई लेवी जोईऐ।

✍ लि. प्रफुल्ला अरविन्दकुमार वखारिया (बोरीवली-ईस्ट)

आ पुस्तकमां नरकमां केम जवाय छे अने शुं करवाथी जवाय छे ? तेनुं आलेखन छे। साते नरको कई कई छे अने त्यां परमाधामीओ शुं दुःख आपे छे ? ते जाणवा मळे छे। आपणे जरा सामान्य पण जूठुं बोलीऐ तो केटलुं पाप छे ? ते खबर पडे छे। भगवान महावीर, श्रेणिक महाराजा भलभला पुण्यात्माओने पण नरकमां जवुं पडयुं छे तो आपणे शुं विसातमां ? ज्यारथी आपणने खबर पडी त्यारथी आपणे चेती जवुं जोईऐ पूर्वभवमां करेला कर्मो भोगववा पडे छे ते जाणवा मळे छे। त्यां असंख्य वेदना सहन थती नथी ते बधुं जाणीने आपणे चेतीने रहेवुं जोईऐ। माटे आपणे धर्म करवो जोईऐ।

✍ लि. प्रतीमाबेन विजयकुमार शाह (विरार)

मैने जैसे यह पुस्तक नाम सुना तो विचार आया कि सचमुच हम जो दावानल जैसे संसार पडे है, वो सचमुच कितना भयानक है ? परंतु हम कितने स्वार्थी हैं के कभी यह नहीं छोडने का सोचते है।

आ मानव जन्म मने घणा पुण्यथी मळ्यो छे। तेमां जैन कुळमां मारो जन्म थयो तेथी मने धर्म करवाथी घणुं ज्ञान मळ्युं अने नरकनी आ बुक वांचवाथी मारां रुवांटा खडां थई गया के माराथी आटलुं बधुं पाप थयुं ? मारो आ जीव कई दुर्गतिमां जशे ? कोने खबर, पण आ बुक वांचवाथी मारा जीवनमां घणा फेरफार आव्या छे अने मारा बाळकोमां पण सारा संस्कार आपी शकीश अने आ नरकनी बुक बतावी तेमांना नरकना फोटा बतावववाथी तेमने पण खबर पडे। तेथी तेओ धर्म करवा लागे जेथी नरकमां न जवा माटे ते बने त्यां सुधी जीवनमां परिवर्तन लावी शके। रात्रे खावामां जे पाप छे। ते बंध करावीश आ अमूल्य मनुष्य जीव मळ्यो छे, तो धर्म करी जीवन सुधारी लेवाय। ''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' ऐ पुस्तकमांथी मने घणुं ज्ञान मळ्युं छे।

✍ लि. हिना देवेन्द्र कोठारी (भावनगर)

''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार''मां नरकमां जीवोनी शी परिस्थिति छे ? तेनुं आपणी समक्ष दुःखद अने ना जोयेलुं, ना सांभळेलुं वर्णन छे। पापकर्मथी बचीऐ, प्रभुथी डरीने जो कोइ पण काम करीशुं तो छेवटे बीजुं कांइ नहिं पण नरकनी ओछामां ओछी वेदना सहन करवी पडशे। रात्रिभोजन, परस्त्रीगमन, बोळ अथाणुं अने १८ पाप स्थानकमांथी बचीने बनी शके तेटलो आत्माने शुद्ध अने निर्मळ बनाववो जोइऐ तो ज आ पापमांथी बची जईशुं। हे, जीव हजु मोडुं थयुं नथी माटे के तुं जागी जा अने आत्माने उजवळ बनाव अने माटे हे जीव पापकर्मथी दूर रहे। प्रतिक्रमण करीने पापनुं प्रायश्चित कर। करेला पापनी गुरु पासे आलोचना कर अने प्रभु, परमात्मा पासे आत्मानी साक्षीऐ पश्चाताप कर ऐ ज आ पुस्तकनो अने परीक्षानो मर्म छे।

आ ऐक्झाम आपी अमने घणुं गम्युं। आ उपरथी अमने घणुं घणुं जाणवा मळ्युं छे। जे कर्मो पाप अमे करतां हतां के अमाराथी थतां हतां ते आ पुस्तक वांचवाथी घणा मोटा भागे ओछा थशे। आ पुस्तक वांच्या पछी अमने घणुं बधुं जाणवा मळ्युं छे के करेला कर्मो अहीं ज भोगववाना छे अने जे न भोगवाय ते...

नरकनुं पुस्तक वांची अमोने ऐवो अनुभव थयो के अमो जे अढार पापस्थानकमांथी पाप करतां पाछां हठीऐ छीऐ अने तेना प्रायश्चित द्वारा पापने खपावीऐ छीऐ अने नरकना चित्रो द्वारा अमारा अंतरने भीनुं करी दे छे। अने तेना द्वारा अमोने विचार

आवे छे के त्यां केवा परमाधामीओ अमोने आवीने केवी क्रूरता पूर्वक अमोने मारशे, उछाडशे अने दुःखो आपशे। अमाराथी सहन नहीं थाय। जेथी आ बुक वांची अमारा अंदरना रहेला कर्मोने प्रायश्चित द्वारा खपावीशुं अने महाराज साहेब पासे तेनुं प्रायश्चित लईशुं।

भावनाबेन कमलेशकुमार शाह (भायंदर)

नरकना दुःखनी वेदना भारी। आ बुक वांच्या पछी आपणा जीवनमां अेटलुं ध्यान राखी शकाय के आपणे जे डगले ने पगले विराधना, जूठ, खाणा-पीणां वगेरे वापरीये छे ते बधुं आपणा जीवनमां केटलुं हानीकारक छे। सात नरकमांथी आपणे बचवा माटे प्रयत्न करवो जोईअे। पहेलानां करेला कर्मो भले आपणे मीटावी नथी शकता पण हवे जे कर्मो आपणे करीअे छीअे, करवाना छीअे तेने तो संभाळी करवा जोईअे।

लि. संगीताबेन नवीनभाई गाला

आ पुस्तकनी अेक्झाम आपवा द्वारा अमने नरक, नारकी, नरकमां पडता दुःखो विशे खूब जाणवा मळ्युं छे। नानामां नानी क्रिया के जेमां सूक्ष्म पाप होय तेनी पण वेदना केवी भोगववी पडे छे, ते बताव्युं छे। खरेखर, आ पुस्तक वांचनथी नानुं पाप करतां पण जीव अचकाय छे। पापथी बची शकाय छे। आ पुस्तक खूब उपयोगी छे।

रीटाबेन वालजीभाई देढिया (मलाड-ईस्ट)

नारकनां मुख्य चार द्वार छे। रात्रिभोजन, परस्त्रीगमन, बोळ अथाणुं, अनंतकाय भक्षण अग्निस्नान करी मृत्यु पामे ते जीव नरकमां उत्पन्न थाय छे। मांस, मद्य, मंदिरानुं भक्षण करनार नरकना द्वार छे। नारकना जीवो अनंत वेदना भोगवे छे। जेनी आपणे तुलना न करी शकीअे। सात नरकीना जीवोने अनंत वेदना, दुःखो, पीडा थाय छे। गर्भपात करवाथी नरकना द्वार सुधी पहुंचे छे। मुनि श्री विमलप्रभविजयजीअे अमने ''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' आ बुकथी अमने घणुं ज्ञान आप्युं छे। आचरणमां लेवा जेवुं छे।

लि. वर्षा के. गांधी (सुभाषनगर)

आ पुस्तक वांचनथी संसार प्रत्ये वैराग्य थाय छे। नरक विशेनुं विस्तृत वर्णन वांच्युं।

सरलाबेन हरखचंद गांधी (कीका स्ट्रीट, गुलालवाडी)

मने सारा अनुभव थाय छे, अेक नानी कीडीनी पण हिंसा थाय तो पग ध्रुजी उठे छे। प्रमाद करवानुं मन नथी थतुं। आ बुक वांचीने दीक्षा लेवानुं मन थाय। दीक्षा उदयमां आवे ते माटे चारित्र मोहनीय कर्मनो १७ लोगस्सनो काउस्सग्ग चालु कर्यो छे। जेथी आ पापमय संसारमांथी जल्दी मुक्त थई शकुं।

मने अेम अनुभव थाय छे के वहेलीमां वहेली तके पापने तिलांजली आपी मोक्षस्थाननी प्राप्ति करी लउँ। आ पुस्तकमां जे वर्णन पूज्यश्रीअे कर्युं छे अे हृदयने द्रवित करी दे अेवुं छे। मारा जीवनमां रात्रिभोजन बंध थई जाय अने सौंदर्य प्रसाधनोनो उपयोग बंध थई जाय। अेवो हुं प्रयत्न जीवदया करवा इच्छुं छुं के बहु मोडुं न थई जाय अे पहेला जागी जाऊँ।

लि. अमीबेन जसवंतभाई शाह (मलाड)

आ पुस्तक मेळवी आ जीव नारकीना दुःखो अने हयातीनो अनुभव करी पापकर्मथी दूर थई पोताना आत्मानो उद्धार करवा उधम करशे। जीवनमां थता पळ-पळनां पाप कार्यने ओछां करी तप अने संयमना कष्टने सहन करी नरकनां महादुःखोने भोगववाथी बची जशे। तीर्थंकर परमात्मा, चक्रवर्ती, वासुदेव, तीर्थंकर बननार जीवोने जो कर्मसत्ता नरके मोकली शकती होय तो आ संसारमां रहेल जीवनुं शुं गजुं ? करेला पापनी आलोचना करी जीव मोक्षे जवा तत्पर बनशे।

''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' पुस्तक घणुं नजीकथी वांच्युं। नजर समक्ष जीवनमां अत्यार सुधी करेलां पाप आव्या ने तेना फळस्वरूपे जाणे साक्षात नरक उपस्थित थई गयुं। जाणे अजाणे अत्यार सुधी घणां पाप कर्यां। अणसमजमां करेला नाना पाप पण घणी वखत केवी भयंकर सजाओ आपे छे। तेनी समज तो आ पुस्तक वांच्या पछी ज थई छे। नरकनुं साचुं स्वरुप आटला नजीकथी पण प्रथमवार ज निहाळ्युं। अत्यार सुधी करेला पापोथी अटकवानो प्रयत्न करवो, अेज जाणे आ पुस्तक संदेश आपी रह्युं छे। ने अेमां आपेला आ उपदेशथी जीवनमां घणो-घणो फेरफार पण थई रह्यो छे। साचे ज आ प्रमाणे साचा मार्गे चाली पापनो रस्तो छोडी परमात्माने जाणे हुं पण कहुं छुं ''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार''।

આ પુસ્તકની એક્ઝામ આપીને અમે આ જીવનમાં મળેલો જીવ કદાચ ઘોર પાપ કરતાં બચી જશે એવું લાગે છે। કારણ કે આ અનુભવ મારી જિંદગીનો પ્રથમ સુખનો અનુભવ છે। જો કદાચ ૧૦૦ ટકામાંથી પણ ૧ ટકો પણ મારા જીવનમાં ઉતરશે તો હું કદાચ ઘણાં ખરાં પાપની ઝંઝાળોમાંથી મુક્ત થઈ જઈશ। ખરેખર, આ એક્ઝામ મારા જીવનની પ્રેરણા છે તેનાથી હું ધાર્મિક પ્રવૃતિમાં આગળ વધીશ અને જે મારા સંપર્કમાં આવશે તેને પણ હું એવી જ સલાહ આપીશ કે આપણો જૈન ધર્મમાં આવેલો જીવ પોતાના આત્માથી પોતાના જીવનો કલ્યાણ કરી શકે છે। જો તેનું ઊંડું વાંચન કરવું હોય તો તેની માટે છે। આ પુસ્તક મને એમ લાગે છે જેણે પણ આ પુસ્તક વાંચ્યું હશે તો તે હવે પ્રભુજીને એવી યાચના કરતાં હશે।

''હો પ્રભુજી નહિં આવું, નહિં આવું, આ દુઃખભર્યા, સંસારની ઝંઝાળમાં''

આ પુસ્તક વાંચવાથી અમને નરકની પ્રત્યે એટલું બધું જાણવા મળ્યું કે અમે કઈ શકીએ એમ નથી। કેમ કે સંસારમાં ડગલે અને પગલે અમે પાપ કર્યા જ કરીએ છીએ, પણ આ પુસ્તકથી બધા પાપની વિગત એટલે ક્યા પાપ કરવાથી કઇ નરક જવાય ? પહેલાં અમને નરકનો એટલો ભય ન હતો, પણ પુસ્તકના વિવેચન અને વાચનથી અમારા રુવાડાં ઉભા થઇ જાય છે। અમને ખબર હતી કે નરક છે પણ એટલે અસહ્ય દુઃખ, વેદના, ભૂખ, એટલી યાતના અરર! સાચે જ હમણાંથી ચેતવું બહુ જરુરી છે અને ધર્મ વિના જીવનમાં કોઇ સાર નથી। આ નરકની પુસ્તકમાં કાંઇ પણ એવું નથી કે બાકી રહી ગયું બધું જ આવી ગયું। એ પુસ્તક વાંચન કરવાથી મને પાપ કરતાં બહુ ડર લાગશે। એનું અભિપ્રાય એ છે કે આપણે હસતાં હસતાં કરેલા કર્મો બાંધ્યા તે આપણને ભોગવવા જ પડશે। એટલે જીવ પાપ કરતાં અટક... અટક... અટક... અટક...

આ પુસ્તકની એક્ઝામ આપી અમને એવા ખરાબ વિચારો આવે છે કે આપણે ડગલે ને પગલે આ ભવમાં અનંતાનંત પાપ બાંધી રહ્યા છીએ। ૧૮ પાપ સ્થાનક સેવી રહ્યા છીએ। હું આપની સમક્ષ એકરાર કરું છું કે મેં પોતે ગર્ભપાત કરાવ્યો છે જેનું મને ખૂબ જ દુઃખ છે અને હું તેનો અંતઃકરણપૂર્વક પશ્ચાતાપ કરું છું। હે પ્રભુ ! હું પાપનો બંધ નબળો કરીને મનુષ્ય ભવ મળ્યો છે તે સાર્થક કરું તે માટે નિર્મળ ચારિત્ર મળે ને પરંપરાએ મોક્ષ સુખને પામું તેવી આપ પાસે પ્રાર્થના... સમક્ષ

એક બહેન (કાંદીવલી)

આ પુસ્તકની એક્ઝામ આપી પણ તેમાં જાણવા ઘણું મળ્યું છે। ક્યા પાપ કરવાથી કેવો કર્મ બંધાય છે ? તેની જાણ અને એ પાપ કરતાં બહુ ડર લાગે છે। એવા પાપ જીવનમાં ન થાય તેનું ખાસ ધ્યાન રખાય। ભલે પરીક્ષામાં જેટલા પણ માર્ક્સ આવે પણ તેનાથી અમને જાણવા ઘણું મળ્યું છે। નરક વર્ણન સાંભળ્યા બાદ નરકનું શ્રદ્ધા પેદા થાય તો જીવન પરિવર્તન થયા વિના રહે નહીં।

ગીતાબેન પ્રકાશભાઈ શાહ (૭મી ખેતવાડી)

આ પુસ્તક વાંચવાથી શરીરનાં તમામ રુવાડા ખડાં થઈ જાય। મન હચમચી જાય છે। ક્યારેય રાત્રિ ભોજન ન કરવું એ નિર્ણય નક્કી થઇ જાય છે। ક્યારેય આવા પાપ ન કરવાં। હૃદય પરિવર્તન થયા વગર રહેતું નથી। પાપ કરતા અટકીએ છીએ। મનમાં પાપ કરતાં ખચકાટ નથી તો નરકમાં હંમેશા ભૂખ, તરસ, દુઃખ, સહન કઇ રીતે થશે ? પરમાધામી દેવો ખૂબ જ દુઃખ આપશે। હવે શું કરવું ? છતાં મોહમાયા, રાગ, દ્વેષ પરિગ્રહ કંઇ જ છૂટતું નથી। બધું માહું માહું થાય છે।

આ પુસ્તકની એક્ઝામ આપી ત્યાર બાદ ઘણું બધું જાણવા અને જીવનમાં ઉતારવા મળ્યું છે। આ પુસ્તક વાંચ્યા બાદ ખ્યાલ આવ્યો અરે નારકીમાં આટલા દુઃખો છે ? અને આટલાં પાપ છે ? અને આ પુસ્તક વાંચ્યા બાદ ઘણા બધાં પાપમાંથી ઘણા પાપ કરતાં અટક્યા। નારકી વિશે જાણવા મળ્યું।

આ બુક વાંચ્યા બાદ લાગ્યું કે દરેકના ઘરમાં જરુરથી આ બુક હોવી જ જોઇએ।

હીરલબેન પ્રદીપભાઈ શાહ (ગોપાલવાડી)

નારકીનું જે વર્ણન આ પુસ્તકમાં આપ્યું છે તે વાંચીને ખરેખર શરીરના રુવાટાં ઉભા થઈ જાય છે। જે આપણને મનુષ્ય ગતિ મળી છે, તેમાં ખરેખર જે પાપો બાંધવાના સ્થાનકો છે તે છોડી દેવા જોઇએ। ગર્ભપાત જો લોકો કરાવતા હોય તો અટકાવવા જોઇએ। નરકાદી દુર્ગતિમાં લઇ જનાર વ્યસનો જેવા કે ધુમ્રપાન, ડ્રગ્સ, ટી.વી। માંસાહાર, પરસ્ત્રીગમન, ગર્ભપાત, જુગાર, ચોરી આ બધા વ્યસનોથી દૂર રહેવું જોઇએ। તેમાં જે રાત્રિભોજન સર્વથા ત્યાગ કરવા જેવો છે। પરમાધામિ જે નરકના જીવોને ત્રાસ આપે છે તે જોઇને સંસાર પ્રત્યે અવશ્ય વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થાય।

વસુ ભુપેન્દ્રકુમાર મેહતા (મીરા રોડ-ઈસ્ટ)

आ पुस्तक वांच्या पछी कोइ पण पाप-कर्म करीओ त्यारे नारकीना चित्रो नजर सामे आववा मांडे छे। अने हृदयमां गभराट उत्पन्न थाय छे। अने पाप-कर्म करवां जतां अटकी जइओ छीओ अने कदाच संसारमां रहीने पाप-कर्म करवां पडे तो हृदयमां उल्लासे करता नथी पण हवे उदासीनपणे करवा पडे ते खातर करवानां ओवुं थइ जाय छे। ओ अढार पापस्थानक पण दिवस दरम्यान सेवाइ गया होय तो रात्रे प्रतिक्रमणमां याद करीने पश्चाताप लेवानुं मन थाय छे। पहेला तो प्रतिक्रमणमां कंटाळो आवतो हतो, पण हवे नरक सामे देखाय ओटले मोज-मझा छोडीने भगवाने बतावेल आवश्यक करवानुं मन थाय छे। ओक क्षणनी मझामां अनंतो काळ दुःख सहेवुं नथी माटे ''हे प्रभुजी! नहिं जाऊँ नरक मोझार''।

✍ **लि. चेतनाबेन सुरेशभाई पटवा (दादर)**

आ पुस्तकनी ओक्झाम माटे तैयारी करवा माटे ज्यारे पुस्तक वांचती हती त्यारे नरकनां द्रश्यो खडा थता हता। दरेक डगले ने पगले दरेक जीवोने खमाववानी इच्छा जागी अने मन कहेतुं हतुं के अनंता भवोथी करतां आवेला पापथी आ जीव क्यारे मुक्त थशे? शाकभाजी सुधारता, भरत गुंथण करतां, दरेक कार्य करता बस नकरनुं दुःख याद आवतुं हतुं। हवे डगले अने पगले बस नवकार गणवो अने

खामेमि सव्व जीवा, सव्वे जीवा खमन्तु मे।
मित्ति में सव्व भूसु वैरं मज्झा केणई॥

जेवुं थइ गयुं छे। हे प्रभु! अनंत भवथी, अनंता जीवो अने अनंता पापोनी हुं डगले अने पगले त्रणेय काळ (भूत-वर्तमान अने भविष्य) ना त्रिविधे-त्रिविधे मिच्छामि दुक्कडम्।

आ पुस्तक वांचीने खरेखर नारकीनुं जे वर्णन वांच्युं खरेखर ध्रुजारी छूटी जाय छे। केवी कर्मसत्ता के कोईने छोडती नथी हसतां हसतां कर्म बांधेला रडतां पण नहीं छूटे, केवी हालत छे के जे नरकना जीवोनी त्राहिमाम पोकारे छे, पण त्यां कोइ ज छोडावनारुं पण नथी। त्यांनुं वातावरण पण केवुं भयानक छे के जोतां आपणे डरी जइओ। अमे हमणा नारकीनुं अमारा उपाश्रयमां आबेहूब वर्णन बताव्युं आ पुस्तक द्वारा अमे कर्युं हतुं। केवी चीसाचीस! बुमाबुम! नाना बाळको डरी जाय। वांचीने खूबज लाग्युं त्यां पाणी पण नहीं पीवा मळे आवा जालीम दुःख छे। शुं थशे मारी हालत? अहीं मोज मजामां केवा कर्म बांधी लइओ छीओ हसतां हसतां, पछी राडो पाडता पण त्यां नहीं छुटे शुं करशुं? कर्मनी गति न्यारी छे कर्मसत्ता पासे कांइ ज चालवानुं नथी पण मनने समजाववानुं छे। कषायथी दूर रहेवानुं छे। प्रमादवशथी ओवा जाणी जोइने कर्म बांधीओ छीओ ''हे प्रभुजी! नहिं जाऊँ नरक मोझार''। आवा दुःख माराथी सहन नहीं थाय शुं करुं खरेखर केवी रीते समभाव रहेशे तेनाथी हुं डरुं छुं। जिनआज्ञा विरुद्ध लखायुं होय तो मिच्छामि दुक्कडम्।

✍ **जवेरबेन भगवानजी मेंकणा (अंधेरी)**

---

१) चारे गतिमांथी भयंकर गति नारकी छे।
२) नरकनुं दुःख जोया पछी खोटुं काम नहीं करवानुं मन थाय छे।
३) नारकीनी चित्रावली जोइने माणस खोटुं काम नहीं करवानुं अने सज्जन बनवानुं शीखे छे।
४) नारकीनी चित्रावली जोइने जीवन सदाचारी बने छे।
५) नरकनी अंदर आवुं भयंकर दुःख जोइने जीव धर्म मार्गे वळवानो निश्चय करे छे।
६) जीवनमां संस्कार सारा पडे छे।
७) जीवनमां पाप करतां अटके छे।
८) जीवन सन्मार्गे चढे छे।
९) नारकीनुं पुस्तक जोइने लालचोळ पुठुं जोइने अंदर अग्निमय जीवन छे।
१०) जे दुःख कोइ जग्याओ जोवा मळतुं नथी तेवुं दुःख नरकमां छे।
११) नरकनुं दुःख जोइने आवुं असह्य दुःख ज्यां कोइनुं कोइ नथी। ज्यां असह्य दुःख छे। ज्यां आखुं गगन चिचियारी राडाराडथी भरेल छे। सुखनुं नामोनिशान नथी।

✍ **भावना पंकजकुमार चोकसी**

आ पुस्तक वांचवाथी आनंद अने दुःख बंनेनी अनुभूति थइ। आ पहेला घणां पाप थयां हता। तेनुं प्रायश्चित करवानी तक मळी। तप, जप, धर्मथी घणां पाप ओछां थाय छे, तेवी समज आवी। आ पुस्तक वांचीने हृदय द्रवी गयुं, तेवी लागणी थइ। हवे पाप न थाय ओनुं ध्यान राखवानी समज आवी। जो पाप चालु राखवामां आवशे तो नरकमां वर्णवी न शकाय तेटलुं दुःख भोगववुं पडशे। माटे आ क्षणथी ज चेती जाओ। जेथी नरकनां दुःख भोगववा न पडे।

✍ **ज्योत्सना (प्रार्थना समाज)**

आ पुस्तकनुं वांचन करवाथी खरेखर नरक छे तेवो द्रढ विश्वास बेठो छे। अने ओक ओक काम करीओ त्यारे पापनां फळनां जे विचारो आव्या करे छे। डगले ने पगले पाप करतां

करतां नरकमां केवी रीते भोगववा पडशे तेनुं दुःख थाय छे। तेम ज पाप ओछां थया छे अने हजु पण थशे केम के अेक महिनाथी पुस्तक वांचीअे तो आंखे आंसु आवी जाय छे। अने पाप करवुं ज पडे छे, तो तेनुं दुःख पण बहु ज थाय छे। पापने करतां होइअे त्यारे पापना विचारो आवे छे अने पाप न थाय ते माटे सारी सारी भावनाओ भावीअे छीअे। तेने अटकाववा धर्म ध्यान करीअे छीअे अने पापना अढारस्थानकोने समजीने तेने ओछो करवा अमुक नियमो करीअे छीअे अने उत्तरोत्तर पाप अटके अने पुण्य वधु करशुं।

ज्योतिबेन बळवंतराय महेता (मलाड)

आ पुस्तकनी अेक्झाम आपवानी हती। अेटले काले रात्रे वांचती हती। हुं रात्रिभोजन करुं छुं, पण हवेथी बने त्यां सुधी रात्रिभोजन नहीं ज करुं अेम नियम लीधो। काले रात्रे घरे महेमान आव्या शुं बनावुं अेम बे वार पूछ्युं अने पछी ना पाडी तो मने पण अेम थयुं के मारे पण बनाववुं नथी मारे पण पापमां पडवुं नथी के तेमने पाडवा पण नथी, अने आखो दिवस सतत रटण चाल्या करे छे। ''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार''।

मीना पंकज संघवी (विले पार्ले)

आ पुस्तकनी अेक्झाम आप्या पछी तो रात्रिभोजन तदन बंध करवुं जोइअे अने जूठ प्रपंच, मायाथी दूर रहेवुं जोइअे। खराब आदतोथी दूर रहेवुं जोइअे। दरोज आराधना करवी जोइअे अने नवकारमंत्रनो जाप करवो जरुरी छे। आ बुक वांच्या पछी अने तेना चित्रोथी कोइ पण पाप करतां पहेला विचार करवो पडे। आवी प्रेरणा आ पुस्तकमां मळी पुस्तक अतिसुंदर छपाव्युं छे। धन्य छे विमलप्रभ म.सा.ने।

प्रवीणचन्द्र नानालाल खंडोर (साउथ दादर)

आ बुक वांचीने साचे ज मनमां अेम थाय छे के नारकीमां मारे जवुं ज नथी। जो अहिंया ज आ संसारमां ज आटलां दुःखो सहन नथी थतां तो नारकीना दुःखतो केटला असह्य हशे ? नारकीना दुःखो वेठवां करतां तो शरीरने तप, त्याग, जप अने ब्रह्मचर्य पाळीने करी शकीअे। आपणो तप तो अेटलो मारे पण नथी के आपणे न करी शकीअे। भगवाने खूब ज ताकात आपेली छे। कांइ अेक-बे उपवास के आयंबिल करवाथी मारा शरीरने नुकशान नहीं थाय। हुं मरी तो नहीं जाऊँ ने माटे थोडो तप करीने नरकनुं दुःख टाळवुं ज जोइअे। आज सुधी जेटलां पाप कर्या ते बहु थयां। हवे तो मनमां अेक डर बेसी गयो छे, जो हुं आम करीश तो मारे नरकमां जवुं पडशे। आवुं कांइ पण काम करतां विचार आवे छे। खरेखर, नरकमां जवुं जहु ज वेदनीय छे। माटे ''हे प्रभुजी ! मारे नरकमां नथी जावुं''।

आ नरकनी बुक वांचवाथी मने नरकमां जवाना द्वारो विषे माहिती मळी अने अेना विषे मारा मनमां जागृति पण आवी अने मने प्रेरणा पण मळी। पहेलां वडीलो पासेथी सांभळ्युं हतुं के पाप करवाथी नरकमां जवाय पण आजे तो प्रत्यक्ष में मारी आंखोथी जोइ लीधुं के फक्त संसारनी भोगलीलाथी आपणी गति केवी थाय छे ? हवे हुं तो बधाने आ चार नरकना द्वारो छोडवा माटे पण कही रही छुं। साचे ज आटला जीवोनी हिंसा करीने आपणे नरकमां आटली यातना भोगववी अेना करतां तो संयमपथ स्वीकारवो सारो। मने आ बुक वांचीने खूब ज जाणवा मळ्युं छे अने सर्व त्यागनी पण भावना थइ छे।

रेखाबेन सतीशभाई गाला (लोअर परेल)

''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' पुस्तकथी बहु ज्ञान मळ्युं छे। चोरी करवानी नहीं। झूठ बोलवुं नहीं, रात्रिभोजन करवानुं नहीं आ ज्ञान मने आव्युं। नरकमां जवाथी केटला दुःख, यातना भोगववा पडे छे, आ मने खबर पडी। कर्मना फल भोगववा पडे छे। अेनाथी छूटको नथी। आ मने पुस्तकमांथी शिखवा मळ्युं।

आ पुस्तक वाचीने बहु सारा अनुभव थया। कारण के में आपेली परीक्षा कोइ शोख नथी। मने अे मोको मळ्यो पुस्तक वांचवानो ने लखवानो मने थोडुं थोडुं समजमां आवी गयुं छे। पुस्तक बहु सुंदर छे। बाळकोने पण चित्र जोई समजमां आवे छे।

मंजुलाबेन महेता

मने पुस्तक वांचवानो शोख बहु ज हतो पण कंटाळो आवतो हतो। तो पण में जेटलां पण पुस्तको वांच्या छे अेनाथी मने ज्ञान अने मनने शितलता मळी छे। आ पुस्तक वांचवाथी मारा जीवनमां परिवर्तन थयुं छे। जेम रात्रिभोजन त्याग, भगवाननुं मुख-मोढुं जोऊँ पहेला, कंदमूळ त्याग, भगवाननी आंगी वगेरे पुस्तकमां अेवी अेवी वातो लखेली छे के जे वांचीने डरी जाऊँ।

आ पुस्तक वांच्या पहेलां हुं आ बधी वातोथी अनजान हती के आ दुनियामां करेलुं पाप चाले छे। अेम पापनी दुनियामां केटला आगळ जता रह्या छीअे। अमने आटलो सरस श्री जैन धर्म मळ्यो छे ते पापोना प्रायश्चित पण 'मिच्छामि दुक्कडम्' द्वारा करी शकीअे। ज्यां आटलो सरस धर्म मळ्यो छे त्यां आटलुं पाप करीअे तो आंखमांथी पाणी आवी जाय, अे कोण पहेलो इन्सान हशे जेणे रात्रिभोजन चालु कर्युं। कोण हशे जे अमने पापना मार्गमां लइ गयो। हवे तो अेटला आगळ जता रह्या छीअे के पाछा आवी जशुं अेमना पालन करता पुरी कोशीश करीश के ''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार''

आ पुस्तकथी अमने घणुं अभिप्राय मळ्युं। आ पुस्तकथी अमने घणी वातो खबर पडी। अमने खबर पडी के शुं पाप छे ? रात्रिभोजन, परस्त्रीगमन, बोळ अथाणुं, अनंतकायभक्षण इत्यादि नरकना मुख्य द्वार छे। अमने खबर पडी के झूठ, चोरी, परिग्रह, मैथून, लोभ, मोह इत्यादि पाप छे, पण चोरी तो झूठथी महापाप छे। अमे विमलप्रभविजय म.स.ना आभारी छीअे जेमणे आ बुक लखी अने बधा पापना बारामां बताव्युं।

''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' आ पुस्तक खरेखर आत्माने झंझोरी नाखे अेवुं छे। पुस्तक वांचता नरक साक्षातकार लागे छे। हसता जे पाप कराय छे ते खरेखर रडतां छुटशे जे पाप करतां हता अेमां खरेखर हवे बहु ज ओछा कराय अने कोइ पण पाप करतां पहेला आ पुस्तक आंखो समक्ष आवी जाय जे अज्ञान जीवो छे तेमने ज्ञान पमाडवा माटे आ पुस्तक खुब ज सहायक छे। नाना बाळको पण चित्रो विगेरे जोइने पाप न करवानी प्रतिज्ञा करे छे। बाळको, वृद्धो अने युवानो बधा ज पुस्तक जोइने खुश थाय अने दुःखी थाय के केटला पाप आ जीव वर्तमानमां पल-पल, क्षण-क्षण करे छे ? अने पुस्तक वांचीने आवी प्रतिज्ञा ले छे ''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' आ पुस्तक खुब ज सुंदर छे। म.सा.ने विनंती छे के आवी पुस्तको अने परीक्षाओ वारंवार लेवामां आवे।

जीव पाप करतां जराय अचकातो नथी। आ पुस्तक सारी रीते, सूक्ष्म रीते जाणकारी आपी अमारी उपर खूब उपकार करेलो छे। केटलाक पापोनी जीवनमां जरुर पण नथी होती तो पण जीव पाप करतो रहे छे। अंते अेना परिणाम भोगवे छे। पुस्तक वांच्या पछी बधा पाप करता अचकाय। मोटा पापनुं सर्वथा त्याग करवुं जोइअे। पुस्तकमां चित्रो होवाथी कोइने पण सारी रीते समझावी शकाय अने अमने पण पापनुं डर लाग्युं।

आ बधा होंशे-होंशे अने हसतां-हसतां बांधेला कर्मोनो हिसाब तारे ज चूकते करवो पडशे। अने तेनो हिसाब आ पृथ्वी पर ज नहीं पण कर्मसत्ता ते हिसाब चूकववा नरक पृथ्वी पर धकेली देशे... ! त्यांना सतत त्रास, दुःख अने यातनाओनुं वर्णन श्री सर्वज्ञ परमात्माअे शास्त्रोमां वर्णव्युं छे। तेनो यत्किंचित् चितार रजु करतुं पुस्तक अेटले ''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार''

''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार''

इस पुस्तक में शुभ अशुभ कर्म बंधन का सजीव और आकर्षक वर्णन करते हुअे नारकीय कष्टों का चित्रों द्वारा प्रत्यक्ष दिग्दर्शन कराया गया है। मानव जीवन को पापों से बचते रहने और पुण्य उपार्जन कर नरक के कष्टों से दूर रहने के लिये जो गणिवर्यश्रीने प्रयास किया है वह अनुमोदनीय है।

जैन समाज के प्रत्येक परिवार में ऐसा उपयोगी पुस्तक रहने से परिवार में पापाचार होने से रुकेगा और धर्म की और विशेष झुकाव बनेगा ! इस पुस्तक का हिन्दी भाषा में भी रुपांतर यदि हो तो विशेष उपयोगीता बढ सकती है।

साभार स्वीकार

''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' खरेखर नकर छे ? त्यां केवा केवा प्रकारनां दुःखो होय ? नरकमां कोण जाय ? नरकमां न जवुं होय तो शुं करवुं ? आवी घणी बधी वातो समजावतुं पू.आ. कलापूर्णसूरिजी म.सा.ना पू.ग । विमलप्रभविजयजी म.सा. लिखित उपरोक्त पुस्तकनुं विमोचन मौन अेकादशीना शुभ दिने दादर आराधना भवन जैन संघमां थयेल। रु ।७०/- नी किंमत धरावता आ पुस्तकमां १५० आसपास चित्रो छे। जेनी नीचे त्रणे भाषामां सारांश छे। आ पुस्तक खास वसावववा जेवुं छे।

पू. गुरुवर,
मत्थअेण वंदामि,
सुख-शातामां हशो।
किंतूना प्रणाम स्वीकार करशोजी।
आपे मने आ काम सोंपीने धन्य कर्यो छे। तेथी तमारो खूब खूब आभार, पण समयसर काम न थवाथी हुं 'मिच्छामि दुक्कडम्' मांगु छुं। संसारना कामोमां फसाइने, थोडी आळस राखीने आ काम मोडुं पुरुं कर्युं छे तेथी क्षमा मागुं छुं।

में आपनी चोपडी मारी माता पासे जोइ हती। पहेला ५-६ पाना ज वांच्या हता। सहेज डर लागवाथी वांचन छोडी दीधुं हतुं।

पण तमोऐ जे काम सोप्युं हतुं तेथी में आ चोपडी लगभग चार वार अक्षरशः वांची छे। शरुमां तो ५-६ पाना ज वंचाता हता। कारण वधारे आगळ वांचवानी ताकात हती नहीं। शरीर, मन, तेम ज आत्मा धुजी उठतां हतां। छेवटे पहेली वार वांचन पुरुं थयुं। पछी काम चालु कर्युं। इच्छतो हतो जेम हुं हली गयो छुं तेम बीजा जे गुजराती वांचीने समजी न शकता होय ते पण आ पुस्तक वांचीने पाप करतां अेक वार विचारे।

✍ तेज लि.किंतु

पू. गणिवर्य श्री विमलप्रभविजयजी म.सा.
मुनि श्री विनयविजयजी म.सा.
अनुवंदना सुखशाता
परमात्माना अचिंत्य कृपाबळे अत्रे परमानंद छे।
आप बधा शातामां हशो !
आजे तमारा वती प्रकाशित थयेल पुस्तक...
''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' आपणा अत्रेना-
पू. साध्वीजी म. द्वारा जोवा, वांचवा मळ्युं।

''पुस्तकनुं लखाण तदनुरुप चित्रो, टाइटल, कागळ वेरे खूब ज सुंदर छे।''

अत्रेना ज्ञानभंडार माटे बे नकल मोकलाववा योग्य करशो।

✍ **आ. कीर्तिसेनसूरीश्वरजी म.सा.नी अनुवंदना-वंदना...**

परम पू.गू.म. गणिवर्य श्री विमलप्रभविजयजी म.सा.

आपश्री सुखशातामां हशो। आपनुं पुस्तक ''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' पुस्तक अक्षरशः वांची शरीरना रुवाडां खडां थइ जाय छे। साते सात नारकीनुं वर्णन तथा परमधामीनी क्रूरता जोइ... पापोनुं सेवन तथा क्रूरताभर्या पाप हसतां मोढे करतां डर लागे छे। अढारे अढार पापोनुं सेवन आत्माने केवी अधोगतिऐ पहोंचाडचा करे छे... खरेखर आपे साक्षात नरकनो चितार आपीने सतत चिंतनना मार्गे जोडावानुं मन थया करे छे। पळे-पळे थता आरंभ, समारंभ अने अर्थ वगरनां पापथी पीछेहठ करी विरती अने सर्वविरती स्वीकारवानुं मन थाय छे। परमकृपाळु परमात्माऐ प्ररुपेला मार्गे आगळ वधवा आपना आशीर्वाद-करुणा वरसे अने चारित्र मोहनीय तूटता सर्व विरती प्राप्त करी मोक्ष मार्गना पथिक बनीऐ अेवी आरजू साथे आपश्रीऐ लखेलुं आ पुस्तक श्रावक जीवनमां सदायने माटे अविस्मरणीय रहेशे। चालो आपणे आ पुस्तक वांची पोताना जीवनने नवपल्लित बनावीऐ।

✍ **शांतीभाई गांधी (मलाड)**

विनयादि गुणोपेत गणिवर्य श्री विमलप्रभविजयजी म.सा.

सादर वंदना-सुखशाता सह जणाववानुं के आपश्री द्वारा मोकलेल ''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' नामनुं पुस्तक मळ्युं।

अनुक्रमणिका उपरथी लागे छे के आपश्रीऐ सारी महेनत करीने दृष्टांतो वि। मूक्यां छे। चित्र करतां लखाण वधारे होवाथी वांचनारने घणी सारी अनुभूति थशे।

विशेष आवश्यक निर्युक्तिनुं काम हजी थोडुं बाकी छे ज्यारे बहार पडशे त्यारे मोकली आपशुं। बीजुं कोइ पुस्तकोनी जरुर होय तो विना संकोच जणावशोजी।

✍ **लि. मुनि रत्नत्रय म.सा.**

शासनप्रभावक पू. गणिवर्य श्री विमलप्रभ वि।म.सा.ना चरणोमां सादर वंदना

आप पूज्यश्री शातामां हशो। पूज्योनी कृपाथी शातामां छीअे

-आपश्री द्वारा लिखित ''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' पुस्तक मळी गयुं-खूब सुंदर छे

-ते पुस्तकनी अत्रे तण नकलनी आवश्यकता छे

-अत्रे २५० आराधको धर्मचक्र तपनी आराधना करी रह्या छे।

-तत्रे थती सर्वे आराधनानी अनुमोदना

-कार्यसेवा फरमावशोजी।

✍ **अेज लि. मु.दा.व.वि.नी वंदना**

''हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' पुस्तक मळेल छे। वांचता धुजारी थाय छे... मारा जेवानुं शुं थशे ? अमारे योग्य कार्य फरमावशो। दर्शनादिक याद करशो।

✍ **अेज लि. दर्शनातुर सा. निलपद्माश्रीनी सादर वंदनावली**

जेम अत्यंत पुण्यनुं फळ भोगववानुं स्थान 'स्वर्ग' अेटले के 'देवलोक' छे। तेम अत्यंत पापनुं फळ भोगववानुं स्थान छे 'नरक' आजनो २१ मी सदीनो मानव पाप करतां खचकातो नथी। डगले ने पगले दारु, जूठ - व्यसन - चोरी - जुगार - रात्रिभोजन - मांसाहार - कंदमूळभक्षण - पंचेन्द्रिय जीवोनी हत्या, अभक्ष्य खान - पान, टी.वी. दर्शन वि।ना पाप होंशे होंशे करी रह्यो छे। संपत्ति मेळववा काळां - धोळां, दगा - प्रपंच -

विश्वासघातो करी रह्यो छे। अेकबीजा जीवो उपर सितम गुजारी रह्यो छे। उपकारीओना उपकारने भूली जइ कृतघ्नी बनी रह्यो छे। बस... मानवी आ धरती उपर आवीने आमने आम पोताना जीवनमां पांच-आठ-दश दायका वटावी जाय छे। पोतानी जीवन रफतार पूरी करे छे। पण... सबूर...!

आ पुस्तक ज्यारे में वांच्युं पहेला तो मने खबर पण न हती के नरकमां अेवा दुःखो होय छे। जेम आ पुस्तक वांच्युं तेम मने नरकना दुःखो वांचीने हृदयथी कंपारी थती हती के हवे तो जे नरकमां जवाना कारणो छे तेथी ज हुं अटकवानुं प्रयत्न करीश। सर्व प्रथम तो में रात्रिभोजन नहीं करवानुं संकल्प कर्यो छे। मारी छ वर्षनी बालिकाअे पण ज्यारे आ बुकमांना चित्रो जोया ते दिवसथी अेणे पण महिनाथी रात्रिभोजननो त्याग कर्यो छे जेथी मने बहु खुशी थइ छे। हवे ज्यां सुधी बने त्यां सुधी अमे नरकमां नहिं जवा माटे तप, त्यागने करवानी कोशीश करवानुं प्रयत्न करीशुं।

✍ चारुबेन प्रवीणभाई खंडोर (दादर)

हमें पता चला है कि कौन सी नरक में कितने नरकवास है और किस तरह से, और परमाधामी क्या है और वे वहाँ जाते है हर नरक में कितना अंतर और नरक किस तरह से होती है और परमाधामी हमें किस तरह से दुःख देते, इस नरक बुक से हमें बहोत कुछ जानने को मिला जो हम नहीं जानते थे में सब तो नहीं लिख सकती पर इतना कहती हुं की इस बुक से बहोत कुछ जानने को मिला है इस को तैयार करने वाले को धन्यवाद कहती हुं।

✍ रमीलाबेन (भारतनगर)

हार्ट अेटेक, बी.पी., केन्सर, अेक्षीडन्टना जमानामां आयुष्य पूर्ण थई गयुं ने नरकमां जवानुं थशे तो अेक साथे आटला दुःखो केम सहन थशे। अहीं फ्रीज, टी.वी., पंखो, अे.सी. विना चालतुं नथी। तो त्यां मारुं शुं थशे ? विचार आवे छे।

ये पुस्तक की अेक्झाम दे के मुजे बहुत अच्छा लगा। जिस प्रकार में पाप करता था अब कम हो जायेगा। इस प्रकार की परीक्षा सबको देनी चाहिये, जिससे आज कि नयी पेढी पाप करना कम करे।

✍ अंकीतभाई अेस. शाह (भारतनगर)

यह पुस्तक पढने के बाद ऐसा लगा कि बाप रे ! हम हर पल मन द्वारा कितने पाप बांधते रहे हैं, जो हमें सीधे नरक की ओर ले जाअेगा। पहले हम सिर्फ नरक के बारे में सुना करते थे। वहाँ बहुत दुःख है पर इस बुक में चित्र के द्वारा हमें पता चला कि क्या क्या पाप करने से हमें कैसे कैसे हम अपने कर्मो का बंध कर रहे हैं। आज के युग में हमें थोडा भी दुःख हो तो हम मरने के बारे में सोच लेते ऐसा लगता है जैसे इस दुनिया में मुझ से बडा दुःखी कोइ नहीं पर जब ये बुक पढी तो पता चला कि नारकी के दुःख के आगे हमारा दुःख तो कुछ भी नहीं है। वहाँ की वेदना को पढते ही, सुनते ही इतना और डर लगता है कि अगर प्रभु होते तो हमें भी कहते हैं ''हे प्रभुजी ! मारे पण नरक जावुं नथी''। आज हम चीज क्षणिक सुख के पीछे भाग रहे। उनके पीछे पागल बनकर इतना घोर पाप करते हैं। तो हमारी मुक्ति कहाँ होगी। इस बुक को पढने के बाद तो ऐसा लगता है जिन शासन बिना चक्रवर्ति बनने का सौभाग्य भी प्राप्त हो तो नहीं चाहिये। बस जिनशासन का दासपणा भी मुझे मिले तो बस है।

✍ भावनाबेन गुलाबचंद जैन (दादर)

यह मालुम पडा की हसते हसते किये बुरे पाप-कर्मो को रो रोकर नरक में भोगने पडते हैं। इसलिये अच्छा यह है कि इनको कर्म बांधने से पहले ही हमे समजना चाहिये नहीं तो फीर और लोग नरक में जायेंगे। इसलिये बुक को पढकर मैं यह संकल्प लेता हुं की हमें रात्रिभोजन, आचार, होटल का खाना और असल मे बोलना इनकी सौगंध लेनी चाहिये, और गर्भपात को रोकने के लिये हमें विश्वस्तर पर अभियान चलाने की जरूरत है और हो सके तो मैंने इस संसार को छोडने का प्रयास करके दीक्षा लेने का मन रखा है।

आ पुस्तकमां अमने नारकीमां उत्पन्न थाय ते दुःख विषे खबर पडी अेक वात पाकी छे के जे जीव पाप करे तेने भोगववा वगर छूटको नथी। जेवा कर्म कर्या तेटलुं भोगवुं पडशे। अेटले पाप कर्या पहेलां नारकीनुं चित्र याद राखशो - हसतां हसतां करेला कर्म रोतां पण न छूटे जे कर्युं होय तेने शांतपणे समताथी सहन करवुं अेम विचारीने आपणुं कर्म खपावावानुं छे केटली नरको छे, केवी छे तेनी अमने खबर पडी कर्मअे तीर्थंकर परमात्माने पण न छोडचा तो आपणने शुं छोडशे। अेटले पाप कर्या पहेलां नरकने याद करो अने पापथी डरो।

આ પુસ્તક વાંચવાથી ઘણું નરક વિશે જાણવા મળ્યું। કેવી રીતે પાપ કરીએ છીએ તથા એક એક પાપથી કેટલું નરકાયુષ બંધાય છે તે જાણી એનાથી (પાપથી) દૂર રહેવા ચોરી ન કરવી, જૂઠું ન બોલવું તેવું મનમાં નક્કી કર્યું। રાત્રિભોજન નરકનું પહેલું જ દ્વાર છે। માટે તેનો ત્યાગ કર્યો અને મારી નાની બેબી મંદબુદ્ધિની છે તેને પણ રોજ ચોવિહાર તથા નવકારશી કરાવું છું। નારકીના દુઃખો સાંભળી કંપી જવાય છે। આ પુસ્તકથી મને ઘણું જ જ્ઞાન મળ્યું છે।

✍ **हंसाबेन भरतकुमार (१३ मी खेतवाडी)**

"हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार" आ पुस्तकथी अनुभव थयो के हुं पण संयमनो रस्तो अपनावुं। अपनाववा जेवो छे। नरकमां बहु दुःख अने दुःख सिवाय कशुं नथी। आंखना पलकारा जेटलुं पण सुख नथी। એટले तप तपस्या संयम लेवा जेवुं छे, अने चोरी, जूठ, हिंसा बधुं छोडवुं जोइએ अने ब्रह्मचर्यनुं पालन करवुं जोइએ। संसार असार छे। दुःखदायी छे। એનાથી नरकमां दुःख वधारे छे।

✍ **ललीताबेन कान्तिलाल (बालाराम भवन)**

आ पुस्तक वांचता नरक अमने साक्षात स्वरुपे देखाइ गयुं। आ पुस्तक तो अमने डरावी नांखे छे। अमने आ पुस्तकथी केटलुं ज्ञान मळ्युं छे. अमने खबर पडे छे के शुं खावानुं, पीवानुं, शुं नथी खावानुं, शुं नथी पीवानुं, शुं मनथी करवानुं, शुं नथी करवानुं, शुं मन, वचन अने कायाथी करवानुं એ खबर पडे छे. अमे आ पण खबर पडी के नरकमां केटलुं दुःख छे. એना माटे अमने नरक नथी जवुं।

✍ **दीलिपभाई जैन (बालाराम भवन)**

इस पुस्तक से हमें नरक का स्पष्ट वर्णन सचित्र मालूम चला है इस भव में पाप करने से हमें कई जन्मों तक दुःख सहन करने पडते है। नरक में जिस-जिस तरह की पीडा भोगनी पडती है। वह इस पुस्तक से मालूम चलता है। गर्भपात, रात्रिभोजन, परस्त्रीगमन भयंकर महापाप है।

इस पुस्तक को पढकर ऐसा लगता है की संसार में कुछ नहीं है। जितने हो सके उतने पाप कम करने चाहिये। जीवों को बचाना चाहिये। दान-पुण्य करना चाहिये। बहुत अच्छी पुस्तक है। इससे जितना ज्ञान मिले वह कम है। मिच्छामि दुक्कडम्।

आ पुस्तकनी परीक्षा आपी अमने अधिक अनुभवो थया। अमने खबर पडी के अमे अमारा जीवनमां केटला पाप कर्या छे ? अने केटला पाप करवानां छे ? अमने नरकमां जवाथी शुं थाय ते खबर पडी। आ पुस्तकथी अधिक खबर थइ छे। अमने अमारुं भविष्य खबर थइ गयुं छे।

मने आ पुस्तकमांथी बहु ज्ञान प्राप्त थयुं। आ पुस्तकथी मने नरकनुं बधुं खबर पडी गयुं। नरकमां क्या जीवो छे ? नरकथी छूटवानो उपाय। नरकने चार दरवाजा आदि अमने खबर पडी। એटले हुं आ भवमां संसारमां न रहीने, पाप न करीने संयम लइने सारी आराधना करीने मोक्षे पहोंचवानो प्रयत्न करीश.

ये पुस्तक पढके मुझे काफी पापों के बारे में और उसका फल कितना खतरनाक और भयानक होता है, उसका पता चला है। दृष्टांत के साथ बात अच्छी तरह से स्पष्ट भी होती है और पढने में रस रहता है। ये पुस्तक पढते समय अपनी आत्मा के प्रति हम जागृत हो जाते है और पाप करते वक्त भी એक बार तो उसका परिणाम आंखो के सामने आ जाता है। ये पुस्तक पढने से पाप में रस नहीं होता। पाप करते वक्त भी हंमेशा जागृत रहते हैं। पाप करते समय नरक से डर तो लगता ही है।

✍ **लि. समता महेन्द्र जैन (वालकेश्वर)**

આ પુસ્તક વાંચતાની સાથે જ આત્માને થયું કે કેવાં કેવાં પાપ કરવાથી નરક ગતિ અને તેનાં દુઃખો ભોગવવા પડશે ? તેનાથી કંઇક આત્મા ડરી ગયો છે અને નિશ્ચય કરવો પડ્યો કે ગર્ભહત્યા, આત્મહત્યા, સાત મહાવ્યસનનો ત્યાગ કરવા જેવો જ છે અને તીર્થંકરોએ જે ઉપકાર આપણા ઉપર કર્યો છે તે કાંઇ જન્મ દ્વારા ઋણ ચૂકવી શકાય એમ નથી। દુર્ગતિમાંથી આ આત્માને બચાવવા માટે લેખક મહારાજ સાહેબને લાખ લાખ વંદન અને ઋણ જે અમારા ઉપર રહી ગયું છે તે માટે આગળ માર્ગદર્શનમાં અભિલાષી છીએ।

આ પુસ્તક વાંચીને જાણવા મળ્યું કે આપણે કેટલા પાપ કરીએ છીએ ? અને કેવા વિચારો કરીએ છીએ ? અને આપણે क्या पाप त्यागी शकीએ छीએ ? अने नरकमां जतां बची शकीએ छीએ।

नरक छे तेमां श्रद्धा बेठी। तेथी तेने निवारवा माटेना सहेलां उपायो जे हाथवगा छे, तेनुं पालन करवानुं नक्की कर्युं। जेम के रात्रिभोजननो त्याग, टी.वी.नो त्याग, अनंतकाय तथा बोळ अथाणानो त्याग, तप अने जपमां वधारे समय फाळववो, नवकारमंत्रनुं रटण करवुं, बीजाने दुःख पहोंचे तेवी प्रवृत्ति करवी नहीं। आ पुस्तक खूब ज उपयोगी पुरवार थयुं छे.

आपणे अमूल्य अेवो मानव भव घणां पुण्यना उदयथी मळ्यो, अने तेमां पण जैन कुळमां जन्म मळ्यो। आ बधुं मळ्या छतां पण सौथी उत्तम उत्कृष्ट साधु महाराज मळ्या, तेथी परभव अने नरकनुं ज्ञान मळेल छे.

आपणे नरकमांथी आवी तो गया छीअे, पण आ पुस्तक वांचता लागे छे के जो आपणे दरोजना पाप करवानुं ओछुं नहीं करीअे तो आपणे तेनी आकरी सजा भोगववी पडशे। आपणे आपणा जीवनमां बे लक्ष्य राखवा जोइअे, अेक तो आपणे करेलां पापनो नाश करवो अने बीजो नवा पाप ओछा करवा।

आटली आकरी सजा अने छतां पण सुख तो आपणने क्षणभर ज मळे छे, ते आ नारकीनी पुस्तकनो सार मळे छे.

""हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' आ पुस्तक वांचीने अमने अेवी जाण थइ के नरक कोइ पण कार्यथी प्राप्त थाय छे। नरकमां असह्य दुःख छे। जे दुःख आपणाथी सहन न थइ शके। अने नरक जवाना चार द्वार छे. १) रात्रिभोजन, २) परस्त्रीगमन, ३) बोळ अथाणुं, ४) अनंतकायभक्षण साते नरकना आयुष्यनुं नाम गोत्रादि कहेवाय छे त्यां आपणने हिंसादी पापनी सजा भयंकर मळे छे अने आपणने क्रोध थाय तो तेनुं फळ पण आपणने नरक मळे छे. लोभ करवाथी पण नरक ज प्राप्त थाय छे. त्यां आपणने कानमां खीला ठोके छे अने हिंसा, जूठ, चोरी, दुराचार, अभिमान, माया, कपट वगेरेथी नरक ज प्राप्त थाय छे। अहीं आपणे जेलमां आपेली सजा पण नथी जोइ शकता तो नरकमां तो तेनां करतां पण भयंकर सजा आपे छे। माटे आपणे अेवा बधां पाप न करवां जेथी नरक प्राप्त थाय।

""हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार'' आ पुस्तक वांचीने अमने जाण थइ के आ संसारमां दरेक कारणोथी नरक गति मळे छे। नरक गतिमां परमाधामीओ आपणने केवा दुःखो आपे छे ! नरकनां मुख्य चार द्वार छे। तेनी जाण थइ १) रात्रिभोजन, २) परस्त्रीगमन, ३) बोळ अथाणुं, ४) अनंतकायभक्षण। आ पदार्थोना सेवनथी नरक गति ज मळे छे। तेथी आ पदार्थथी जेम बने तेम हंमेशा दूर रहेवुं। वधु वधु तप करवा अने नव लाख नवकारवाळी गणवाथी मोक्ष प्राप्त थाय छे। तेथी नवकारो गणवा। माता, पिता, गुरुने सन्मान आपवुं। कोइ पण दिवस क्रोध करवो नहिं। प्रभुभक्ति करवी तेथी सद्गति प्राप्त थइ शके छे। आ पुस्तक वांची मारामां घणो बदलाव मने देखाय छे। हुं पण माता-पिताने प्रणाम करुं छुं।

नारकीने थता दुःख विशे जाण्युं अने थयुं खरेखर ज आपणे अत्यारे भौतिक सुखमां राचीअे छीअे। जे खरेखर तो आपणने अनादि कर्ममां खूंचवी नांखे छे। जो आपणा द्वारा अजाणतां पाप-कर्म थइ गयुं तो तेनी क्षमापना-प्रायश्चित करवुं जोइअे।

आ पुस्तकना वांचनथी अमारा शरीरनां रुवाडां खडां थइ गया। अरेराटीनी चीस नीकळी गइ अने विचार आव्यो के आ भवमां तो घणां पाप कर्यां परंतु अेवा केटलाये भव कर्या, केटली योनीमां जीवे भवभ्रमण कर्युं, तो शुं थशे ? जो वशुराजाने अेकवार खोटुं बोलवाथी नरकनी वेदना आटली मोटी भोगववी पडी तो अमे तो केटली वार खोटुं बोल्या, केटली हिंसा करी, परिग्रह पण अेटलो ज। आ जन्ममां १८ पापस्थानक खूब ज सेव्यां तो नारकी गतिमां शुं थशे ? अहीं ठंडी सहन थती नथी गरमी सहन थती नथी, भूख, तरस, दुःख कंइ ज गमतुं नथी।

""हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार''...

आपणे पूर्व भवमां करेलां अनेक दुष्ट अने भयंकर आचरणथी, क्रूरताथी हिंसाओ, जूठुं बोलवुं, चोरी, परस्त्रीगमन, धनप्राप्ति, तीव्र मूर्च्छाथी जीवनो वध (गर्भपात) करवाथी नरकना आयुष्यनो बंध करीने जीव नरकमां उत्पन्न थाय छे। नरक सात प्रकारनी होय छे। शर्करा प्रभा, वालुका प्रभा, पंक प्रभा, धूम प्रभा, तमः प्रभा, तमस्तम प्रभा नरकमां आपणे दुःख, कष्ट सहन करवुं पडे छे।

निमिषाबेन तरुणभाई शाह (अंधेरी)

आ पुस्तकनुं फ्रन्ट पेज जोइने ज मारा रुवांडां उभां थइ गयां। आना अंदरना 'नरकनुं' अर्थ मारा अर्थे 'नहिं जाऊँ राक्षसोने कोठे (कतलखाने)' आ पुस्तक वांच्या पछी रात्रिभोजन, गर्भपात, आत्मघात जेवा नीच कार्यो करवा योग्य नथी के जेनाथी मारो आ भव तो बगडे ने साथे जो परभव पण बगडतो होय तेम ज जो आ बहु दुर्लभ मनुष्य भव तेमां वळी जैन

धर्म। એવો उच्च कुळ मळ्यो छे એ धर्म विना ना गुमावशुं तो आपणने बचावनार कोइ नहीं मळे। अहीं जो आपणने 'बीसलेरी वॉटर' सिवाय गमतुं नथी तेमज 'એर कंडीशन' सिवाय गमतुं नथी तो त्यांनी आ अनंत वेदना, भूख, तृषा, ताप केवी रीते सहन थशे माटे आ बुक वांचीने में घणां बधा पापथी छूटवाना नियम आचरण कर्या।

आ पुस्तकनी એक्झाम आपी એमां अमने घणुं बधुं जाणवा मळ्युं छे. नरकना दुःखोनुं वर्णन सांभळी, वांची रुवाडां खडां थइ जाय छे। तेथी आमां न जवा माटे तप, नवकार नव लाख वगेरे गणवा अने हुं नवलाख जाप करुं छुं। दररोज बांधी नवकारवाळी गणुं छुं।

छयाबेन दीलिपभाई शाह (अंधेरी)

"हे प्रभुजी ! नहिं जाऊँ नरक मोझार" पुस्तकमां दर्शावेल अने वर्णवेल नरकनुं वर्णन अने चित्रावली साथेनुं तेनुं अनुसंधान खरेखर मानवीने बे वार पाप करतां विचार करतो मूकी दे जो पाप कर्या पछी तेनुं फळ नरकमां भोगववुं न होय तो पहेलां पाप न करवुं अने भूलथी थइ जाय तो तेनुं प्रायश्चित गुरुभगवंत पासे करी लेवुं। जेथी तेना उदय वखते तेनुं फळ कठोर न मळे। आवुं सरस मजानुं पुस्तक चित्रावली साथे बहार पाडी तेमां दर्शावेल अने अंगूलिदर्शक करेल नरकना रस्ताओ अने दुःखोना श्रवणथी जरुर मानवी हवे पछी पाप नहिं करवानी प्रतिज्ञा करशे। बीजाने पाप करतो अटकावशे। चालो, आपणे पण आजे पाप न करवा, करतां होय होय तो तेने अटकावीએ तो ज आ पुस्तकनी फळश्रुति पूर्ण थइ कहेवाशे।

आ पुस्तक वांचीने अमने नारकोना दुःखनी परिभाषा खबर पडी अने शुं पाप करवाथी नरकना केवा भयंकर दुःख मळे ? એ पुस्तक वांचवाथी बधी खबर पडी अने अमे पाप करतां अटकीએ छीએ। आ बहु सुंदर पुस्तक छे।

रमीला हरेश महेता (पार्ला)

आ पुस्तक वांचवाथी जीवनमां जे पाप कर्या એना माटे भारे दुःखनी लागणी थाय छे। पापनी सजा केटली खराब होय छे। जैन दर्शने केटलो उपकार करे छे अमारे जेवा अज्ञान जीवो उपर। એवुं आ पुस्तक अमने नवां पापने रोकवामां सहाय करे छे। अमे पण पापथी बचीએ એवी प्रभु पासे प्रार्थना !

मांगीलाल रेवाजी संघवी (भारतनगर)

आ पुस्तकनी એक्झाम आपी, नारकी अने तेना दुःखो जोई खरेखर हृदय द्रवी ऊठचुं छे अने એम थाय छे के એक એक क्षण मनुष्य भवमां बगाड्या वगर कर्म खपावीએ नहीं तो आवी नरकमां जवुं पडशे त्यारे कोण बचाववा आवशे ? माटे क्यांय पण कर्म न बंधाय अने कर्मनी निर्जरा थाय એ ज जोवानुं छे। मन-वचन-कायथी हुं कंई ज कर्म न बांधु...

भारतीबेन नवीनचन्द्र गोगरी (सायन)

अनंता भवो सुधी करेलां कर्म आ भवमां भोगवी रह्या छीએ छतां पण आ जीव पापथी डरतो नथी अने निरंतर पाप चालु राखे छे। आ पुस्तक वांचीने नरकनो जे चितार आंखो समक्ष आव्यो छे। तेनाथी साचे ज पापथी डर लागवा लाग्यो छे अने तेनाथी बचवाना उपायो शोधवानी इच्छा थाय छे। खरेखर, आ पुस्तक दरेक जैनोએ એकवार अवश्य वांचवुं जोईએ। तेथी जैन धर्मनी गहनता अने पापथी विमुख थवामां दरेक जीवने मदद मळे। जय जिनेन्द्र

अमितभाई शाह (बापाराम)

आ पुस्तक "हे प्रभुजी ! नहि जाउं नरक मोझार" रचयिता श्री पू. गणिवर विमलप्रभ विजयजी म.सा. खूब ज गम्युं। जीवनमां એक वार नहीं अनेक वार वांचवा जेवुं छे। तेम ज जीवनमां उतारवा जेवुं छे। जीवनमां आपणे એवा केटलाय पाप कर्या हशे, ते पण याद नथी रहेतुं तो तेनी आलोचना के प्रायश्चित केवी रीते लेवाना ? माटे आजथी ज એक डायरी बनावो तमाराथी थतां पापनुं वर्णन अथवा लिस्ट बनावो अने गुरु महाराज पासे तेनुं प्रायश्चित अवश्य लेवुं तेनाथी तमारी नरक गति टळशे अने मनुष्य भवनी सार्थकता जणाशे। माटे आजथी ज चेतो। नरक टाळवा माटे साते व्यसन छोडो। धर्ममां स्थिर थाओ। એज, मारी अभिलाषा...

रीटाबेन भरतकुमार मणीयार

आ पुस्तकनुं पहेलुं पानुं ज खूब आकर्षित छे के चोपडी वांचवानुं मन थाय। आ पहेलां नरक विषे आटलुं सचोट ज्ञान अमने मळ्युं नहतुं। એक એक पानुं वांचवाथी रुवांडां खडां थई जाय। घरमां बाळकोने पण अभक्ष्य भोजन, रात्रि भोजन वगेरे करवाथी शुं थाय એ सचोट चित्र द्वारा समजाववामां खूब ज सरळता पडी। हुं पण रात्रि भोजन करती हती। में पण कायम रात्रि भोजन त्यागनो निर्णय कर्यो छे। जे खरेखर आ पुस्तक ने ज आभारी छे। बीजुं हवे कांई पण पाप करशुं तो नरकनुं सचोट

दृष्टांत जोईने जरुरथी खचकाट थशे। अेक वाक्य पण मगजमां बेसी गयुं छे के 'तप त्यागथी कायाने कांई ज कष्ट नथी अेनाथी अनेकगणुं कष्ट नरकमां छे।' जेम खराब कर्म करवाथी नरकना द्वारा खुल्ला ज छे। तेम जरुर सारा कर्मो करवाथी सारि गति मळशे ज बाकी कर्मे तो भगवान महावीर, श्रेणिक महाराजा वगेरे आत्माओने नथी छोडचां। तो आपणे तो शुं विसातमां ? आ अेक्झाम आपवाथी नरक विषे ज्ञान मळ्युं। जेनाथी अमे सदंतर अज्ञान हता अने मनमां शंका हती के शुं नरक छे ? आ चोपडी द्वारा साचुं ज्ञान मळ्युं।

✍ **रेशमाबेन जितेन्द्रभाई शाह (१० मी खेतवाडी)**

आ पुस्तक वांचवाथी मने नरकनी वस्तु जाणवा मळी। खरेखर आ पुस्तकथी नरक विषेनुं ज्ञान थयुं। मानवी पोताना जीवनमां केटलां अने केवा पाप करे छे अने तेनां केवा फळ आत्माअे भोगववां पडे छे, ते जाण्युं। श्रेणिक राजा, उदायन राजा प.पू. महावीर भगवानने पण कर्मनां फळ भोगववां पडचा तेमने सातमी नरक सुधी जवुं पडचुं अने ३३ सागरोपमनुं आयुष्य भोगववुं पडचुं। असह्य पीडा भोगववी पडी तो आपणे तो केवा क्षुल्लक जीव छीअे पाप करतां करातां कळियुगमां करतां हवे आ पुस्तक वांच्या पछी अेटला पाप ओछां करवानुं नक्की कर्युं। सात प्रकारना पापथी पाछां हठवानुं नक्की कर्युं छे।

✍ **लि. हसमुख सी. गांधी (मलाड)**

आ नारकीनुं पुस्तक बहु ज सरस छे। जे नाना छोकरांने पण खूब ज गमे। अे लोकोने पण समजावी शकीअे। घणुं बधुं जाणवा मळ्युं छे। नरकमां केवी-केवी रीते पापनी सजा भोगववी पडे ? केटलां दुःख, केवी रीते मळे छे ते समजाय छे अने आपणी नानी भूलनी पण सजा केटली मोटी, भयंकर होय छे ते समजाय छे। खरेखर, आ पुस्तक बहु ज सरस छे। करेलां पाप केवी रीते भोगववा पडे छे तेनी समज अहीं आ पुस्तकमां वर्णवी छे, अने आ पुस्तक द्वारा जीवनमां आपणे साची समज ऊतारी पाप करतां अटकी जईअे तो कदाच नरके जवुं पडे अे ज बताव्युं छे।

✍ **लि. फोरमबेन जयेशकुमार (मलाड)**

आ पुस्तक वांचीने शरीरनां रोमे रोम खडां थई जाय छे। आ नरक के ज्यां आपणे निश्चित जवानुं ज छे। अथाग दुःखोनां पहाड खडकावानां छे। ज्यां अेक क्षण पण शातानो अनुभव नथी। रे जीव ! आ दुनियाना दुःखो तो कांई विसातमां नथी। नाना पण कर्मनी सजा केटली मोटी होय छे ? आ दुनियामां तो फांसीनी सजा अेक ज वार मळे छे। ज्यारे नरकमां तो अनेकवार छेदावुं-भेदावुं पडे छे। नरकनी मोझारमां दुःखोनी वणझार चाली आवे छे। मृत्यु मागवा छतां मळतुं नथी। आवा नरकनुं वर्णन वांची जो जीवने डर लागे तो पापथी अटके अने पापथी अटके तो नरकनी मोझार जोवी न पडे...

✍ **लि. उषा विनोदचंद दोषी**

अनुभवाय छे। नरकथी बचवा मुज सद्भागीने आ पुस्तक अनायासे मळ्युं अने तेनाथी सद्गति तरफ जवानो रस्तो मळ्यो। करेलां पापनो पश्चाताप अचुक थाय छे। जीवनमां अेक पण पाप न करवुं। सद्गति मेळववी। क्यारे पण नरकमां न जवुं पडे ते माटे जीवननी क्षणेक्षण सावधान रही धर्माराधना करवी। खरेखर आ पुस्तक हृदयने, जीवनने, परिवारने परिवर्तन कराव्यां वगर रहेतुं नथी।

✍ **लि. कुन्दनबेन भुपेन्द्र शाह (बोरीवली)**

आ पुस्तक वांचीने नारकीनी दस प्रकारनी वेदना छे, तेमां केवी पीडा भोगवी पडे छे। नरकमां परमाधामी देवो १५ प्रकारनां छे। ते नारकीना जीवोने अलग अलग प्रकारे कारमा विविध दुःखो आपे छे। आ परमाधामी त्रण नरक सुधी होय छे। परमाधामी जीवो अे जीवोने याद करावीने नारकीने पाप याद करावे छे। नारकीना जीवोने टुकडा करे छे। अने ते टुकडा पछी जोईन्ट थई जाय छे। तेने वेदना अपरंपार होय छे।

✍ **सुचिताबेन नवीनचन्द्र कोरडीया - ताराबाग (राजाराम मोहन राय मार्ग)**

'हे प्रभु ! नहिं जाउं नरक मोझार' मने अनुभव थयो के पाप करतां डर लागवा मांडचो अने तप करवानी उत्कृष्ट भाव आववा लाग्यो। मने नरकनो बहु ज भय लागे छे। माटे हवे क्यारेय जूठ नहीं बोलुं के पाप करतां अटकीश। आ पुस्तकथी मारा घरमां बधाना जीवनमां परिवर्तन आवी गयुं छे।

✍ **हंसाबेन हिम्मतलाल शाह (१० मी खेतवाडी)**

આ પુસ્તકમાં અમે પાપ બહુ કર્યાં છે । આ પુસ્તક જોઈને અમને અનુભવ થાય છે કે અમે પાપી છીએ। શેનાથી પાપ લાગે છે તે અમને ખબર પણ છે। ગર્ભપાત એ જીવતા મનુષ્યની હત્યા છે। બાળકનો જીવ તો પહેલે જ દિવસથી, પહેલી જ ક્ષણથી તેમાં હોય જ છે અને નાસ્તિકતાના અભિમાનમાં અહીં સુધી કહેવા માંડે છે કે... નરક છે જ નહીં, નરક ક્યાં છે ?

✍ **મણીબેન વસંતભાઈ શાહ - બોરીવલી (વેસ્ટ)**

'હંસા જાવું એકલાને નહિં કોઈનો સંગાથ, ચાર દિવસના ચાંદરણા પછી ઘોર અંધારી રાત; કોનું સગું, કોનું સાસ્સું, કોનાં મા અને બાપ, અંતકાળે જાવું એકલા, સાથે પુણ્ય ને પાપ...

આ પુસ્તકની એક્ઝામ આપી એટલું તો સમજાઈ ગયું છે કે આપણો આત્મા અનાદિકાળથી આ સંસારમાં રખડી રહ્યો છે, રઝડી રહ્યો છે। એ બધું એને આ ભવે નહિં તો પરભવે તો ભોગવવાનું જ છે । દુન્યવી પરિબળો કે અન્ય કોઈ વસ્તુ તેની સાથે નથી આવવાની. આવશે તો ફક્ત તેનાં કરેલાં પુણ્ય અને પાપ. પુણ્યનું ભાથું ભરવાની શરુઆત અત્યારથી જ કરવી પડશે તો જ પરલોકમાં સદ્‌ગતિ અને પરંપરાએ પરમગતિ મળશે।

આ સંસાર આખો દુઃખથી ભરેલો છે । નારકીના દુઃખો તો આની સામે કાંઈ નથી આ બધું જોઈ, સાંભળી રુંવાટાં ઉભાં થઈ જાય છે. ખરેખર આ પુસ્તકે મોજશોખમાં રમી રહેલા મારા આત્માને ખળભળાવી મૂક્યો છે. આ પુસ્તક દ્વારા જરુરી વાત એ જાણવા મળી કે મોક્ષ પ્રાપ્તિનો મારગ મનુષ્ય ભવ છે, આ મનુષ્ય ભવને વેડફ્યા વગર, તેને સંસારના સુખમાં રઝડ્યા વગર સુધારી લેવો જોઈએ તેથી જ મેં નિર્ણય લીધો છે કે પ્રભુભક્તિમાં લીન થઈ મારા ભવોભવને હું સુધારી લઉં । હે પ્રભુ ! જોતું નથી નામ મારે, જોતી નથી નામના, આપજે પ્રભુ એટલું કે, ભાવું તારી ભાવના।

નારકીના દુઃખ વાંચી હૃદય દ્રવી ગયું ને રાત્રિભોજનનો ત્યાગ એવા ચાર દ્વાર તો બંધ કરવાનો સંકલ્પ ને, પાપથી બચવું જોઈએ ને માટે પાપ નહિં જ કરવા। એવા ઘડી ઘડીએ વિચાર માંને સારી લેશ્યામાંજ રહેવું જોઈએ। મન-વચનને કાયાથી થતા પાપથી બચવું જ જોઈએ। ને ભવિષ્યમાં મૃત્યુ પહેલા દિક્ષા લઈને જ મરવું આવો સંકલ્પ કર્યો છે। ચારિત્ર સિવાય સદ્‌ગતિ નથી એવું જ લાગે છે। બુકનું નામ અચૂક સાચું છે। કે, 'હે પ્રભુ મારે નરકમાં નથી જવું । નહિં જાઉં નરક મોઝાર' મ. સાહેબે કરેલો પ્રયત્ન ખૂબજ યથાર્થ છે। લોકો ઘણા પાપ કરતા ડરી જશે।

આ પુસ્તકમાંથી એમ ખબર પડે છે કે આપણા ધર્મમાં ચાર પ્રકારના વ્રતોનું પાલન કરવું જરુરી છે। (૧) રાત્રિ ભોજન (૨) પરસ્ત્રીગમન (૩) બોળ અથાણું (૪) અનંતકાયભક્ષણ આ બધું ખાવાથી અને કરવાથી આપણને નરકમાં ખૂબ જ સજા મળે છે। આપણને ત્યાં રાત દિવસ માર મળે છે। અને ત્યાં માંસ, કાદવ, લોહી, ચરબી જેવા ગંદા પદાર્થોમાં નવડાવે છે । અને તે આપણું માંસ આપણને ખવડાવામાં આવે છે। કોઈદી પણ કોઈની હિંસા કે ચાળા ચુગલી કરવી નહિં અને કોઈના પર પણ હસવું નહિ અને કોઈને પણ પોતાના તરફથી દુઃખ સહન ન કરવું પડે તેની કાળજી રાખવી અને પોતાના પર હંમેશા બને ત્યાં સુધી બિનજરુરી આદત લેવી નહિં તેથી જ કરીને આપણને નરકમાં વધારે સજા ભોગવવી પડે નહિં।

✍ **લિ. ગીતાબેન હસમુખભાઈ મજેઠીયા**

'મત્થએણ વંદામિ' ખરેખર, આ પુસ્તકનું વાંચન કરતાં તો મારા રુવાડાં ઊભા થઈ ગયા। શરીરમાં કમકમાટી આવી ગઈ કે આ શું ? મારો સાચો અનુભવ કહું છું કે ? આ પુસ્તક થોડા વખત પહેલા જ અમને પ્રભાવનામાં મળ્યું હતું અને ત્યારે મને એમ કે શું બુક આપી હશે પ્રભાવનામાં ? પણ, પછી જ્યારે આ બુકની પરીક્ષા છે અને મેં બુક ખોલીને વાંચી ત્યારે મને મારી જાત પર ધિક્કાર થયો કે ખરેખર, આવા મહામુલ્ય માનવજીવનને હું નરકની તરફ ધકેલી રહી હતી અને પુસ્તક વાંચ્યું પણ નહીં, પણ જ્યારે વાંચ્યું ત્યારે મને થયું કે આપણે એક એક ક્ષણે કેટલાં બધાં પાપો આચરી રહ્યાં છે । પલે પલે ક્રોધ, માન, માયા, લોભ, જેવા કષાયોને આગમન આપીએ છીએ, પણ આ પુસ્તકના વાંચન પછી ખબર પડી કે આ બધાં પાપ હસતાં હસતાં કરી લીધાં પરંતુ નરકમાં જઈને તેની કેવી અસહાય વેદનાઓ ભોગવવી પડશે તેની ખબર જ ન હતી। પરંતુ હા, આ પુસ્તકના વાંચન પછી એ પાપ કરતાં પહેલાં જરુર એક વખત પરમાધામી, એ નરકનું દ્રશ્ય નજર સમક્ષ આવી જશે અને તે પાપ કરતાં રોકી જઈશું અને જો અજાણતા પણ જો પાપ કરી લીધું હશે તો મનમાં પશ્ચાતાપ જરુર થશે। આ પુસ્તકે જરુર અમારા માનવહૃદયને જાગૃત કરી દીધું છે।

✍ **ભારતીબેન સુરેશભાઈ ફૂરિયા (શેઠ)**

'હે પ્રભુજી ! નહિં જાઉં નરક મોઝાર' આ વાક્ય બોલતાંની સાથે જ શરીરનાં ૩ ।। કરોડ રુવાડાં ખડાં થઈ જાય છે। શરીર એ કેદખાનું છે અને તેમાં પુરાયેલ આત્મા એ આ મોહમર્યા શરીરમાંથી નીકળી અને શાશ્વત સુખને પામી મોક્ષે જવા માંગે છે, પણ એ પાપ કર્યા અને ક્યાં આપણાથી પાપ થઈ જાય છે ? એ આ ચોપડી દ્વારા ખરેખર ખૂબ જ સમજવા મળ્યું ? અઢાર પાપસ્થાનકથી

हंमेशा दूर रहेवानो प्रयत्न करवो कारण हवे आटलुं जाण्या पछी कयो आत्मा ''नरकमां जवा माटे तैयार थाय ?'' जे आत्मा बेवकूफ होय ते ज हवे आवां पापने आचरे। आटलुं जाण्या पछी हवे तो चार कषाय, राग, द्वेष, रात्रि भोजन, कंदमूळभक्षण, परस्त्रीगमन, बोळअथाणुं कदापि जीवनमां न आचरवुं। जे नरकमां चार मुख्य दरवाजां छे तेने तो जिंदगीभर तिलांजली ज आपवी जोईअे। खूबज सरळताथी समजी शकाय तेवुं आ पुस्तक अमारा आत्मा माटे खूब ज कल्याणकारी निवडचुं।

नारकीनुं आटलुं बधुं जाण्या पछी लागे छे, खरेखर ! संयम अंगिकार करवो जोईअे। आ भवमां डगले ने पगले महापाप थाय छे। दररोज प्रतिक्रमण सवार-सांज करवाथी १८ पाप स्थानको मांथी छूटकारो मळे।

आ पुस्तकनी ओक्झाम आपता घणा अनुभव थया। नरकनी यातना विषे घणुं-घणुं जाणवा मळ्युं। नरकना चार द्वार जाणवा मळ्या। रात्रिभोजन, परस्त्रीगमन, बोळ अथाणुं, अनंतकाय भक्षण विषे जाणवा मळ्युं। नरकमां परमाधामी तरफथी मळती वेदनाओ जाणवा मळी। सात नरक विषे जाणवा मळ्युं। तेमनी स्थिति, आकार, आयुष्य वगेरे विशे जाणवा मळ्युं।

✍ **स्वातीबेन चैतन्यकुमार शाह (गोरेगांव)**

शासन प्रभावक गणिवर्य श्री विमलप्रभ विजयजी म.सा. वंदना

तमारा तरफथी मोकलेल पुस्तक ''हे प्रभुजी ! नहिं जाउं नरक मोझार'' मळ्युं। तमोअे आ पुस्तकनुं संपादन करवा द्वारा अनेकोना जीवनमां पाप प्रत्येनो भय पेदा करावी शकशो.. टाईटलमां बन्ने चित्र जोतां ज लोकोने दिलचश्पी पेदा थाय छे के शुं हशे ? फरी तमारा आ अनुमोदनीय कार्यनी अनुमोदना करी विरमुं छुं.

✍ **लि. राजरक्षित मुनि**

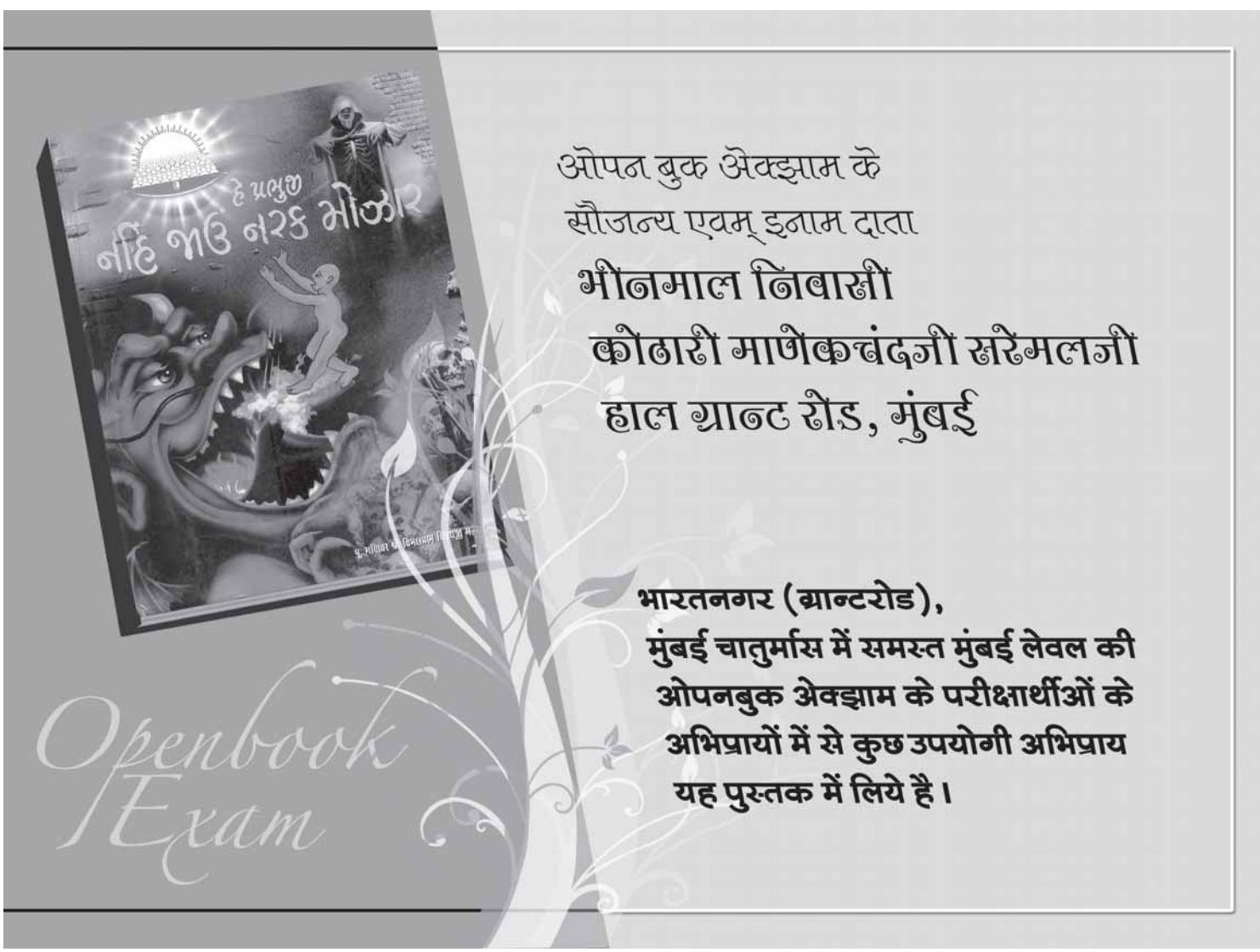

इस पुस्तक के सौजन्यदाता

नवीनचंद्र जगाभाई शाह परिवार, अहमदाबाद (सांताकृझ) मुंबई

सविताबेन उगरचंद कालीदास शाह, वडोदरा, ह. अनीलभाई

भणशाली मिश्रीमलजी भगाजी (हाडेचा) मुंबई

माणेकचंदजी सरेमलजी कोठारी (भीनमाल) मुंबई

शेठ नरपतचंदजी त्रिकमचंदजी (सांचोर) मुंबई

चुनीलालजी घमंडीरामजी लखमाजी चंदन (सांचोर) मुंबई

मूलचंदजी छोगालालजी (सांचोर) मुंबई

सीताबेन मफतलाल शाह (सांचोर) मुंबई

कन्याबेन देवीचंदजी राठोड (सेवाडी) ह. महेन्द्रभाई राठोड (दहीसर) मुंबई

शा. खेमचंदजी गुमानमलजी परिवार (दांतराई) गिरधरनगर, अहमदाबाद

श्रीमती लाभुदेवी रामलालजी वनेचंदजी हरणेशा (सिणधरी) अरिहंतनगर, अहमदाबाद

स्व. भूलीबाई पुतली फतेहचंदजी जेठमलजी बंदामुथा (आहोर) कोईम्बतुर

जशराजजी लुक्कड परिवार (मुन्नारगुडी)

कंवरलाल एण्ड कुं. ह. पारसमलजी कंवरलालजी वैद (फलोदी) हाल चेन्नई

बोम्बे स्टील हाउस, चेन्नई ह. बी. मिलापचंद

पुष्पचूला

संसार वंचणा नवि, गणंति संसारसूअरा जीवा,
सुमिणगअेण वि, केइ, बुज्झंति पुष्फ चूलाव्व ।

आसक्त हुअे संसार के विषयो में विष्ठा में भूंड की तरह जीव को नरकादि स्थान पाने से ठगते है जब कई जीव स्वप्न में पण नरक के दृश्य देखने से वैराग्य पाते है । रानी पुष्पचूला स्वप्न में भी नरक के दर्शन से संसार से विरक्त बन कर दीक्षा ली और आत्म कल्याण आदरा और फिर जाग्रत दशा में नरकादि का वर्णन और दृश्य देखने से संसार प्रतिनिर्वेद पाकर पापमय संसार से छूटने की इच्छा क्यों न हो ? पाप करते हुए क्युं पश्चाताप (दु:ख) न हो ?

मेरा भी यह प्रयास निष्फल नहीं बनेगा ऐसी शुभकामनाओं से तैयार किया है ।

दु:ख यातनाए तो जीव को नरक में भुगतने ही पडते है । कर्म के फल भुगतने के लिये उसमें से कोई बच शक्ता नहीं ।

बलदेव जैसे नियमा सद्गति को पाते है वैसे वासुदेव नियमा नरक में जाते हैं और चक्रवर्ती की स्त्री रत्न मरकर छट्ठी नरक में जाती है क्योंकि पाप करने के

बाद पश्चाताप नहीं होने से नरक को भूल गये इसका मतलब दु:ख का अंत आ गया ऐसा नहीं। खरगोश जंगल में घूम रहा हो और सामने से शेर आ रहा हो तो वह आंख बंध करले और फिर कहे कि शेर तो दिख नहीं रहा है तो क्यां वह शेर से बच पायेगा ? खरगोश माने न माने पर यदि शेर आ रहा होगा तो खरगोश तो मरने ही वाला है । इसी तरह शास्त्र की इस बात को हम माने या न माने लेकित जो हकीकत है वह तो रहने वाली है ।

नारक चारक सम भव उभग्यो...तारक जानकर धर्म सम्यग्दर्शन के पांच लक्षणों में तीसरा लक्षण निर्वेद = संसार प्राप्ति, उद्वेग = बेचेनी, नफरत के भाव पेदा होना, नारकी में रहे हुए नारक के जीव को नरक में से नीकलने की इच्छा हो, केदी को केदखाने में से छूटने की इच्छा हो, इसी तरह सम्यग्दृष्टी आत्मा को संसार से छूटने की इच्छा हो, कब संसार छूटे रोज संसार से छूटने की भावना में लीन हो ।